

३७६७

मुनि लब्धि विजयजी कृत हरिवल्ल
मञ्जीनो रास.

जीवदयाफलमाहात्म्यरूप.

ए रासने यथामति शुद्ध करी करुणामय
सम्यक्दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थें

श्रावक जीमसिंह माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर नामक मुद्रा यंत्रमां छपावी

प्रसिद्ध करयो छे.

संवत् १९४५ सने १८८९

3650

अथ

पंक्ति लब्धिविजय विरचित श्री

हरिबलमन्त्रीनो रास प्रारंभः



॥ दोहा ॥

॥ प्रथम धराधव जगधणी, प्रथम श्रमण पण एह ॥
प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरु पण एह ॥ १ ॥
विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धा-
रक अतिशय आदि जिन, तारक जवनिधि पोत ॥ २ ॥
लघुवय इच्छा इच्छुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट
इष्ट जेहने सदा, नाजिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्धं
धूना संगमें, अबक ठक्यो दिन रात ॥ हुं तस पदपंक-
ज नमुं, नित्य उठी परजात ॥ ४ ॥ हंसासन जे स-
रसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृद-
यमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं नारती,
वारति जड अंधार ॥ मुऊ मन मंदिरमें वसी, करवा
मुऊ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुऊ महोटी करी, देजें व-
चन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसजा, सांजले थइ उज

(३)

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात
॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुऊ आख्यात ॥
॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक
त कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, बलिहारी गुरु सो
य ॥ ९ ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित
कार ॥ रास रचुं हरिबल तणो, पुण्य उपर अधि
कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंढित पामीयें, पुण्यें लहि नव
नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें रुद्ध समृद्ध ॥ ११
जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर
तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव
दयाप्रकी पामियो, हरिबल मढी राय ॥ तास संबंध
सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स
रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस व
द्वन तणा, सम देउं ठउं सात ॥ १४ ॥ जिन मृग नाद
लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि
यण तुमें, आणी चित्त अजंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्वीप
ए कह्यो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोजागी ॥ तेहमें हे
त्र ए नंद सोहामणुं, कुलंगिरि सात कह्या सार ॥

(३)

सो० ॥ १ ॥ जाव धरीने रे जवि तुमें सांजलो ॥ रसि
या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां सुणतां रंग-रस ऊ,
पजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥ सो० ॥ १॥ जा० ॥ क्षेत्र
तिनमें करमी वसे तिहां, असि मशि कृषी रोजगार ॥
सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ए
तीन व्यापार ॥ सो० ॥ ३॥ जा० ॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां
धर्मेनां, नाख्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को
व्यापार तीनमें नवि लहे, ठे कल्पवृक्षना आहार ॥
सो० ॥ ४॥ जा० ॥ तेहमें षटयुगलादिक क्षेत्र जे, जरत ने
ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो
नित शोने ठे एह ॥ सो० ॥ ५॥ जा० ॥ ए नव क्षेत्र सात
ठे कुलगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र
समास में गुरुमुख सांजली, धाख्यो तास विचार ॥
सो० ॥ ६॥ जा० ॥ पण इहां हरिबल मढी रायनुं, चरित्र सु
णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम
कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ जा० ॥ हवे
इहां जंबुद्वीपें अति जलुं, जरत क्षेत्र कहाय ॥ सो०
॥ पांचशें षठीश योजन षटकला, श्वनुषाकारें सोहा
य ॥ सो० ॥ ८ ॥ जा० ॥ सहस बत्रीश ते जन
पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पङ्क्तो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो
 जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ जा० ॥ षटखंममें खंम तिन
 तिन तेणें कख्या, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो
 ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य
 नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ जा० ॥ साढा पचवीश
 आरय अति जला, केकै अर्ध समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि
 नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस बत्रीश मध्य एत ॥
 ॥ सो० ॥ ११ ॥ जा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां,
 कनकपुरी अजिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर
 शोजती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ जा० ॥
 नखिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश जूमि आ
 वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर
 ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ जा० ॥ कुंतीआ
 वण परें हटश्रेणि राजती, ठाजती विजयनी पंक्ति
 ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु
 धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ जा० ॥ धनवंत धनद
 जंमारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥
 पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, जोगी चातुर लोक ॥
 ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥ षट दरशनना पोषक जन
 बहु, पाळे निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

(५)

कार करे घणा, लेहवा शिव सुख हर्म ॥सो०॥१६॥
 ॥जा०॥ जिनशासनना देउल दीपतां, बत्रीश थडा
 प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंमप अति चोंपशुं, कर
 ता स्वरगछुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ जा० ॥ दंमधजा,
 अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥.सो० ॥ ध
 न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी,पावन करवा मुऊ
 अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥जा० ॥ श्रीजिन केरी नगति करे
 सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थकर पंद ते
 उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९॥जा०॥
 वरण अठार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अंव
 तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोजा घणी, नू
 रमणी उरहार ॥ पाठांतर॥नगर कनकपुरनामें शोज
 तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २०॥जा० ॥ नंदनवने
 सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
 ॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नखां,खटक्रतु फैलें
 सुखास ॥ सो० ॥ २१ ॥.जा० ॥ काल डुकाल ते को
 नवि उलखे, अहोनिश सुखनी ठे वात ॥सो०॥ इति
 उपड्व सुपनें नवि जाणे, पुहवीयें प्रगटीए ख्यात
 ॥ सो० ॥ २२ ॥ जा० ॥ कनकपुरीना ए गुण. सां
 नली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

(६)

जइ बूढी झापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥
 ॥ १३ ॥ जा० ॥ स्वर्गपुरी पण ननमां जइ रही, नि
 सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक
 पुरी तणी, दिन दिन चढती ठे लाज ॥ सो० ॥ १४ ॥
 ॥ जा० ॥ क्रनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पनणी
 पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण
 सांजलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नृपाल ॥ न्याधि
 निंपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य
 वढल हरिचंद जिस्यो, जुजबलि नीमसमान ॥ अरिय
 ए सघला वश करी, ऊतास्यां तस मान ॥ २ ॥ पर
 जाने पाले सदा, करे हथेली बांह ॥ दाण जगात
 दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि
 देउल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप ५
 णि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद
 मिनी, रूपें रंज समान ॥ शील सुरंगी गुजमती, व
 संतसेना अनिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें,
 प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना,
 रंगें रहे लय लीन ॥ ६ ॥ दीगुंडुक सुरनी परें, पंचविषय

सुख जोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वाढ्हा ॥ जगजीवन ॥ ए देशी ॥
 विलसे जोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे ॥ जन्म
 सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥
 सुगुण सनेहा सांजलो, आगल वात रसाल ला ॥
 जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला ॥
 ॥ २ ॥ सु० ॥ राज रुद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय
 ला ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुढवीयें ते गवराय
 ला ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें
 चिंतातुर होय ला ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न
 लागे कोय ला ॥ ४ ॥ सु० ॥ देव दाणव लख जो मले,
 तो पण तिणथी न आय ला ॥ कर्म आगल कळे
 नही, जो करे लक्ष उपाय ला ॥ ५ ॥ सु० ॥ मांहीं
 देव महोठो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला ॥
 पार्वती सरखी नारीने, कर्म पुत्र न दीध ला ॥
 ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गज्जे, ए सवि कर्मनां
 काम ला ॥ कर्म सखाई जो दुवे, मनवंडित फले
 ताम ला ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुन कर्म करी,
 पुत्र तणे घरे पुत्र ला ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

(८)

राखे घरनों, सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र
विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर
सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला० ॥ ९ ॥ सु० ॥ पुत्र
विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला० ॥ लौकि
क मृतना शास्त्रमें, नाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥ १० ॥ सु० ॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तं पि मसाणे, जल न दीसंति
धूलि धूसरहाया ॥ उवंत पडंत रडंत, दो तिनि मिंजा
न दीसंति ॥ १ ॥

॥ ११ ॥ अ० ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गो नैव च नैव च ॥ त
स्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्म समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥ अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन नूपाल ला० ॥
तिण अवसर एक ज्योतिषी, आवी मल्यो ततकाल ला०
॥ १२ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अ
नुसार ला० ॥ एहवो पंथित देखीने, नरपति हर
ख्यो अपार ला० ॥ १३ ॥ उगीने प्रणीपत करे,
नाव धरी मनमांही ला० ॥ मुझा सहित फल फू
लचुं, पुस्तक पूजे उभाहि ला० ॥ १४ ॥ सु० ॥ बे
कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न
'सुवो प्रभु माहरे, दोशे बाल गोपाल ला० ॥ १५ ॥

(९)

सु० ॥ तव पंक्ति तक जोइने, वेला, साधी सार
 ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनबलें कहे रायने, सांज
 लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुऊ करमें नही, पूरव
 नावी नोग ला० ॥ पण एक पुत्री ठे सही, पूरव पुण्य
 संजोग ला० ॥ १६ ॥ सु० ॥ रूपें रंजासारिखी, नंदिनी
 तोहोरो तुऊ ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा, प्रगट
 होइते गुप्त ला० ॥ १७ ॥ सु० ॥ एम कहीनें विप्र ते गयो,
 छेइ वंढित दान ला० ॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम
 रवि कज इकतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन
 ते योगथी, राणी गर्न धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल
 फूलगुं, शोजित सुपना लहेय ला० ॥ सु० ॥ १९ ॥ जागी तव
 नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांजली
 नृप हरख्यो घणुं, त्रूग श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥
 ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गर्नजतनें
 ला० ॥ अनुक्रमें मास पूरा थई, जन्मी पुत्री रतन ला०
 ॥ २१ ॥ सु० ॥ दुवां हरख वधामणां, घर घर मंगलमाल
 ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पनणी बीजी ढाल ला० ॥
 ॥ दोहा ॥ -

॥ जन्मोच्चव अति हे करे, वसंतसेन नृपाल ॥ मणि
 माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर ढाटेषां, दीज करैह विशाल॥ सोहव सवि टोले म
 ली, गावे गीत रसाल ॥ ३ ॥ घर घर गूडी उल्ले, घर
 घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे जा
 क जमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा जला, खेले नवनव
 खेल ॥ बंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥
 इम उल्लव करतां थकां, बोल्या दिन ते बार॥ नगरीजन
 सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब
 मेली करि, पुत्री नाम ठवीज ॥ सुपन तणा अणुं
 सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन
 दिन वधे, ज्युं वधे इकुदंम ॥ चंडकलाजिम बीजथी, वाधे
 तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी
 बाल ॥ गुजलग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥
 खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥ रंग राग ना
 टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ९ ॥ षट जाषा लह
 ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अजिनव जाणे शारदा,
 प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें,
 वरस थयां जब शोछ ॥ नवयौवन नारी तणा, उल्लव्या
 काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी
 ॥ रतना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ तिषा नगरीमें
 इक रहे, धीवर हरिबल नाम ॥ सनेही ॥ जलचर जीव हणें
 सदा, मेले दुष्कृत ठाम ॥ सनेही ॥ १ ॥ हवे सुणजो तेहमी
 कथा, मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर डाख तणी
 परें, विण पइसे व्यो स्वाद ॥ स० ॥ १॥ ह० ॥ धीवर ते
 जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उद्यम उदर
 ने. कारणें, करे नित्य करणीकुर्म ॥ स० ॥ २ ॥ ह० ॥
 धिग्धिग् डुरजर पेटने, पेट करावे वेठ ॥ स० ॥ उत्तम म
 ध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥ ४ ॥ ह० ॥
 पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे
 जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स० ॥ ५ ॥ ह० ॥ अ
 गम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥ स० ॥ पेटने
 अर्थी जे अठे, न गणे नहु अनहु ॥ स० ॥ ६ ॥ ह० ॥
 घात कला खेले धणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥
 मावीत्र वेचे ठोरुने, पेटने अर्थे घोर ॥ स० ॥ ७ ॥ ह० ॥
 जिनवरआदि मुनिवरा, जावें जेलीये दिख ॥ स० ॥
 ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे जीख ॥ स० ॥
 ॥ ८ ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें
 धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, मुंब घरे

(१३)

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार
 ऐं, हरिबल मञ्जी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल
 ह्नी, जीव हणे ठे तेह ॥ स० ॥ १० ॥ ह० ॥ हलुआकरमी ठे
 घणुं, पण ते लखुं कुल नीच ॥ स० ॥ कुलाक सब आ
 वी पञ्चो, मेले ते कर्मना कीच ॥ स० ॥ ११ ॥ ह० ॥
 एक दिन हरिबल मञ्जीयें, जलमें नाखी जाल ॥ स० ॥
 ते जलकंठें मुनिवरु, बेगो ठे सुकृतमाल ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
 बोव्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिबोधवा, दे उ
 पदेशं रसाल ॥ स० ॥ १३ ॥ ह० ॥ रे प्राणी ए तुं शुं क
 रे, विण अपराधें कर्म ॥ स० ॥ ठे महोदो संसारमां, जी
 वदयानो धर्म ॥ स० ॥ १४ ॥ ह० ॥ जीवदया पाली जिएं,
 लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
 वने, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥
 पारेवुं शरणें राखवा, काप्युं ते निज अंग ॥ स० ॥ जो
 तुं मेघरथ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥ १६ ॥
 ह० ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजकुल
 नार ॥ स० ॥ १७ ॥ ह० ॥ पशुवाडो ढोडावियो, आणीमन
 उपगार ॥ स० ॥ जीवदया जे पाले नही, पामे ते दुःख
 अपार ॥ स० ॥ १८ ॥ ह० ॥ सुजूम ब्रह्मदत्त चक्री दो, पडीया

नरक मजार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक
 बंधवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिङ् दोहण
 नवि टले, मले न वल्लजवृंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥
 हेम दिये को दिन प्रते, देवे को दान सुपात्र ॥ स० ॥
 तेहथी दश गणो लाज ठे, जीवजतन करे गात्र ॥
 स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांजली, बोले
 मल्ली तिवार ॥ स० ॥ शुं करीये अमें साधुजी, ठे अम
 कुज आचार ॥ स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुले आ
 वी पड्या, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजी
 विका ए पेटनी, दीधी करमें निदान ॥ स० ॥ २३ ॥ ह० ॥
 ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में. पण
 लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में
 जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अणि
 ग्रह आदरी, हरिबल वलियो ताम ॥ स० ॥ मुनि पण
 ईर्या शोधता, पढोता बीजे ठाम ॥ स० ॥ २५ ॥ ह० ॥
 हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स० ॥
 नारे करमी जीवडा, माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६ ॥
 ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत ओतानुं जाय ॥ स०
 ॥ टपलो सराणे चडावीये, आरीसो नवि थाय ॥ स०
 ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिबलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

(१४)

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं
छित लहे तेह ॥ स० ॥ १७ ॥ ह० ॥ लब्धिविजय
रंगें. करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल
जीवदयायकी, लेहरो मंगलमाल ॥ स० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अनियह लेहने, पाठो वलियो जाम ॥
तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम
॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥
धीवरनुं मन खोजवा, महु दुवो मुञ्जाल ॥ १ ॥ धीव
र ते जलमें जइ, लांबी नाखी जाल ॥ आव जरा
णो जालमां, लांबो महु पुञ्जाल ॥ २ ॥ तव धीवर ते
महुने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पा
ले ते उलसंत ॥ ४ ॥ बली बीजे थानक जइ, उंमा
इहमां जाल ॥ नाखी तव फरि महु ते, आव्यो जा
ल मंतराल ॥ ५ ॥ ते पण बलि महु मूकीयो, नीय
म निज संजार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते
त्रीजी वार ॥ ६ ॥ बलि फरीने महु आवियो, जाल
मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी म
न उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे
ए जलमहु ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम उलखाये

स्वहृ ॥ ७ ॥ हरिबल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रहियो
जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी बांधी सात ॥

॥ ढाल चौथी ॥

॥ इमर आंबा आंबली रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल हवे
आधो गयो रे, उंहुं ठे जल ज्यांह ॥ डुरजर-उदरने का
रणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिजन सां
नलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥
फरि पाठो ते जालमां रे, आव्यो चौथी वार ॥ कोटें
कोडी देखी करी, मूक्यो महु विचार ॥ २ ॥ सूरि० ॥
पांचमी ठही सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम
तेम ते आवी रहे रे, जालमां महु मुठाल ॥ ३ ॥ सू०
॥ तिम तिम ते महु उलखी रे, मूकी ये ततकाल ॥
हरिबल व्रत महेज्युं नही रे, गुरु उपदेश रसालं ॥
सू० ॥ ४ ॥ इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां
तेह ॥ तोही पण ह्यो नही रे, महु हरिबल जेह ॥
॥ ५ ॥ सू० ॥ महुनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो
सुरराज ॥ सुर कहे हरिबल माग तुं रे, हुं तूगो सुज
आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी से सांजली रे, हरि
बल बोव्यो तिवार ॥ दालिङ्ग दुःख दूरें करी रे, सम
खा करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संजारिश मुऊ जे घ
 डी रे, ते घडी तुं तुऊ पास ॥७॥ सू० ॥ एम वचन
 देई करी रे, ते सुर गयो निज थान ॥ मढी पण निज
 मंदिरें रे, वलियो थइ साव धान ॥८॥ सू० ॥ धीवर म
 नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन ॥ फलि
 यो अनिग्रह माहरे रे, तूठो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
 सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
 ॥ आजथी जीव हणुं नही रे, जो ग्रही महोटी बाध
 ॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
 यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आ
 णी बीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट जराइ जडी नही रे,
 जांमरो रांम कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, बेस
 जौ लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
 रे, रोषें जरी ठे चंम ॥ ठोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
 ज्युं खोखर चंम ॥ १४ ॥ सू० ॥ मुखमांथी जोंठ पडे
 रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परें रे, राखे
 नहि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
 यो रे, दीसंती जाणे अलह ॥ आंगण आवे को मा
 नवी रे, देखी जाये गह ॥ १६ ॥ सू० ॥ कूडा बोली
 कर्कशा रे, दे वली अठतां आल ॥ गुण अवगुण जा

एो नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ
 तरे जे वर्षे सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण
 लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥ १८ ॥
 सू० ॥ जाणी बंबुल कोयला रे, एहवुं रूप नीहा
 ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेढमें काल
 ॥ १९ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुऊ नारीनां रे, केतां क
 रुंहुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म
 भ्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिबल चितखुं चिंतवे रे, न
 जङ्गो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो बोकडी रे, रूठी
 करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रहीं रे,
 रजनी लेउं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइखुं रे,
 जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते
 वन्नमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवल्लें
 रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सू
 तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव
 उगारीयो रे, तो वाधी मुऊ शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो
 में निश्चें आजथी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल
 निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुऊ सदीव ॥ २५ ॥
 सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पशु ॥
 जीवदया धर्म उपरें रे, बेठो रंग मजीठ ॥ २६ ॥

(१८)

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिबल सूतो ज्यां
ह ॥ तिण अक्सरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उहाह
॥ सू० ॥ १७ ॥ चोथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पु
ण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें
दुःखने ठेल ॥ १८ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे, बीजो हरिबल नाम ॥
वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अनिराम ॥ १ ॥
पठित गुणित सघली कला, शीख्यो ठे सावधान ॥
रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ च
तुराह तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ जोगी केत
की चंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ एक दिन चहु
टे संचख्यो, लेइं निज परिवार ॥ नजरें हरिबल निर
खियो, कुमरीयें गोख मजार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृ
पनी धुआ, उलखी हरिबल तेह ॥ बिहुंनी दृष्टि मिली
तिहां, वाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधि
युं, देखी हरिबल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वर
वानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजभुवनने मारगें, हरिबल
चाव्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक
तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिबल वांची समजियो, वख तुं मुज
ससनेह ॥ ७ ॥ उंची दृष्टि जोझे, करी समस्या सा
र ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥ ८ ॥
कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम
तुं सुहणुं नरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निड्डी वेरण दुइ रही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली
चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल ते ज्यांह के ॥
अखुट खजानो लेझे, मध्यरात्रें हो दुं आवुं तुं त्यां
ह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि बलने हो
तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, व
रवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहा
री हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतौ
साचें आवशे, निज घरनुं हो लेझे वित्त के ॥ कु० ॥
॥ ३ ॥ पण ए नृपनी नंदिनी, मुजयी केम हो निरवां हो
आय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसि
णी हो किहां बगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४ ॥ किहां अ
लसी किहां नागणी, किहां हाथणी हो किहां अज बल
वंत के ॥ किहां कुमरीने दुं कीहां, किहां सरशच हो
किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब वणी

क तणी, मर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं
 वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह ठे व्यवहार के ॥ कुं० ॥
 ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे
 तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो
 तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए
 हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुज घ
 रमें ठे पदमणी, किम वेहुं हो तेहने हुं ठेह के ॥ ८ ॥
 कुं० ॥ कडुवां फल ठे एहनां, परनारी हो साथें धरे
 राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि
 हां बेठानो लाग के ॥ ९ ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल
 सारिखां, देखतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते
 फल चारव्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर
 के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी
 हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें,
 डुर्गतिनां हो फल पामे रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव
 ण मुंज तणी परें, शीश रडवडे हो नूमितलें जेह के ॥
 परनारीना संगथी, बीजानी हो गति निपजे एह के
 ॥ १२ ॥ कुं० ॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी
 हो निज कुल संजाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें,
 जिहां कीथो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥ कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावान तह क
 ॥ केइ घडी ठे एहवी, जइ देखुं हो हरिबल ससनेहके.
 ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो
 लागुं ठे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल
 हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लागुं
 जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण
 घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी
 बंल्य के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी,
 नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ फुरि फुरि पंज
 र कश करे, कामी मन हो लुब्धुं जे ठाम के ॥ १७ ॥
 कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो
 निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे,
 विरहें करि हो मांमे उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कु-
 मरी कामासुर थई, हरिबलनो हो विरहो न खमांय
 के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आ
 कुली आय के ॥ १९ ॥ कुं० ॥ मणि माणिक हीरा घ
 णा, हेम रजत नें हो सुगताफल लेय के ॥ थरमां पा
 मरी सावटु, जरतारी हो जलां वस्त्र नरेय के ॥ २० ॥
 कुं० ॥ सामग्री सघली करी, जावाने हो जिहां की
 धो संकेत के ॥ उंट सात जरिया जला, अश्व रतन हों

कुमरी दो लेत के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे
 वही, दास दांसी हो वलि साथें लीध के ॥ दरवाजे
 दरखानने, ड्य्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ १२ ॥
 कुं० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां
 संकेत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती
 हो मनवंतित सिद्ध के ॥ १३ ॥ कुं० ॥ धीवर सूतो
 ठे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के ॥ ल
 वि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग
 रसाल के ॥ कुं० ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निडा दूर ॥ आपण
 वहीयें बे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट
 खजानो लेइने, आवी तुं नरपूर ॥ करहा सात ड्य्यें न
 खा, एह ठे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने,
 आवी तुं तुम कज्ज ॥ उंघ तजी उंतावला, आवी च
 डो थइ सज्ज ॥ ३ ॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन
 वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ
 अनिराम ॥ ४ ॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी
 रूप ॥ धीवर मन विव्हल थयुं, ए गुं दीसे सरूप ॥
 ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

(१३)

कोशक वात विचार ठे, मौन कल्यानुं काम ॥ ६ ॥
 अणबोव्यो ऊठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम
 री मन हरखित थई, चाव्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा
 णीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाव्या
 चडवडी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कुं
 मरी हवे, टाली सघली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा,
 आवी पास नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ठछी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल
 प्रभुजी बोलो, मनवद्वज मनहुं खोलो रे ॥ माहंरा
 जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई मर मत आणो, प्रभु
 मेव्यो तुम अम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुऊसरखी
 तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥
 कनक रयण ठे सार्थें, तुमें वावरो सुखें निज हाथें
 रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाधा, जरतारी बां
 धो पाधा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी
 पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क
 र जोडी, करुं टेहल ते आलस बोडी रे ॥ मा० ॥ हुं हुं
 तुम प्रेम विलुझी, आवी हुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥
 ॥ ४ ॥ हवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमा

ला रोपुं रें ॥ मा० ॥ करहा जे साते उण्या, लेई तुम गुं
 जे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं,
 करि लेखवजो ए जलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहे
 रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥
 इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले
 रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, गुं ठे ए वणि
 क न नासे रें ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वा
 हाणुं ॥ दीतुं मुख श्याम ज्युं जाणुं रे ॥ मा० ॥ दिन
 उगमतें ते दीगो, दीन वस्त्र विदूणो धीगो रे ॥ मा० ॥
 ॥ ८ ॥ जाणो आलोकनो पिंम, जाणो पाड्यो देवें
 दंम रे ॥ मा० ॥ देही ठे गलीयल वान, वलि जाणो को
 किल मान रे ॥ मा० ॥ ९ ॥ जाती धीवर जाणी, त
 व कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई ते
 निराशी, चिंते थई हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥ १० ॥
 सहकारज केरे जरूसे, फल चारव्यां आक आळूसे रे
 ॥ मा० ॥ जाण्युं सुरतरु पाम्नी, पण निमज्यो कनक
 निकामी रे ॥ ११ ॥ मा० ॥ प्रजुयें मेरुयें चढावी, पण
 दैवें जूयें अथडावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी,
 पण पानीयें मति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करस
 ण टोतां सोई, गोला गोफण पण खोई रें ॥ मा० ॥

तिम ए उखाणो मेव्यो, निज मंदिर कुल अवहेव्यो
 रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाण्युं जोबनवेशें, लेखुं ते ला
 हो विशेषें रे ॥ मा० ॥ उलव्यो मदन एराकी, तव
 वणिकें मूकी न बाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल
 वणिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा० ॥
 वणिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे
 ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाण्युं जे वणिकने वरखुं, निज ज
 नम ते सफलो करखुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचा न
 पाली, विण गुनहे मूकी बाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥
 जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥
 ॥ मा० ॥ जो तुज खोटा दिलासा, तो शाने दीजें
 आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेव्यो, धी
 वरने किहां ते मेव्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ऐ
 गोडो, कखो अण मन्नतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥ १८ ॥
 दीसे ए धोबड धिंग, वलि जाणे जबके जोटिंग रे
 ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुक्त करमें ए वर
 घंडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विधें मुक्त मन बेसे,
 माहारुं जोबन एलें वहेरो रे ॥ मा० ॥ इम सुंदरी विल
 पंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥
 तव तिहां धीवर जूरे ॥ भनखुं ते पुण्य अधूरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए गुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं
 रे ॥ मा० ॥ ११ ॥ लवलेश पोंक न खाधो, निजकमें
 ह्वये दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक उखाणो, ते में
 तो नजरें पिठाण्यो रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ फोगट सुंदरी सा
 थ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के
 हने दाखुं, एहवो नही कोइ जाखुं रे ॥ मा० ॥ १३ ॥
 सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते नोगवे जीव एक ताने
 रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे
 उछासें रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, कि
 म रांक घरे रहे त्रोटो रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान,
 किम सुंदरी दे मुज मान रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ धिग
 मुज जीवित एह, धीवर पणुं लहुं में जेह रे ॥ मा० ॥ मा
 हेरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नारख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुज देखी मूर्छा
 पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहै नय
 एं आंसु धार रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ किहां गयो सागर
 देव, मुज काम पढे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे
 मूरछाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥
 ॥ १८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

(१७)

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल ठही, कुमरीने करे
हवे बेठी रे ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अमृत
त जल लेई करी, कुमरी ठांटी हेव ॥ १ ॥ रंजा फल
पत्रें करी, कखो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी
थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निर
खिंचुं; हरिबल केरुं रूप ॥ बाला चमकी चित्तमें, ए
शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो
सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स
मान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नही, मन इम चिंते
बाल ॥ ए साचुं के सूरहणुं, के दीसे इंदु जाल ॥ ५ ॥
तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥
हरिबल मञ्जी रूप ए, वख तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥
एह थकी सुख संपंदा, दिन दिन अधिकी होय ॥
जाग्यबलें तुज वर मख्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥
तव कुमरी हरखित थई, सांजली देव वचन ॥ आर
त चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्न ॥ ८ ॥
वसंतसिरी हरिबल प्रतें, वर वरियो धरी प्रीत ॥ शी
तल मन बैदुनां थयां, बांध्यो अविहड हीत ॥ ९ ॥

पय प्रणमी हरिबल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर
सुर निज थानकें, पढोतो ते गुणगेह ॥ १० ॥ मान
व नव सफलो करी, दंपती जोगवे जोग ॥ रामनुं सु
हणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो जलें आवियो ॥ ए देशी ॥ दुआ हे ह
रख वधामणां, बेहु जणनां हे मनवंडित सीध के ॥
कुमरी हरिबल वर वरी, मनुजवनो हे फल लांहो
लीध के ॥ १ ॥ दु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां
हरिबल हे मन्ही अवतार के ॥ अणमलतो ए ताक
डो, पुण्यजोगें हे मेढ्यो किरतार के ॥ २ ॥ दु० ॥
एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे तूठो निधि
राज के ॥ परतख दीतुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुऊ
वैधी लाज के ॥ ३ ॥ दु० ॥ धन धन गुरुनां वयण
नें, मुऊ कीधो हे महोठो उपगार के ॥ कीडीयकी
कुंजर कख्यो, जलें प्रगळ्यो हे सदगुरु संसार के ॥ ४ ॥
दु० ॥ इम चिंतवतां बे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन
हमजार के ॥ रंग-विनोदनी वातडी, वहे करतां हे
एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ दु० ॥ वाट विषम जे
आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

जंगि जाडी जे रूखनी, परि उतखा हे निज पुण्यने
 थाट के ॥ ६ ॥ दु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न
 वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो हवे जोबुं
 एहनी, करुं परीक्षा हे ए शी ठे जाति के ॥ ७ ॥ दु० ॥
 जोबुं वली तस पारखुं, पराक्रमें हे केहवो ठे सधीर के ॥
 जीवित सूधी माहरो, मन राखी हे केहवो मेले हीर
 के ॥ ८ ॥ दु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री
 तम हे थया खरा बपोर के ॥ पाणीनी तिरषा घ
 णी, पीयु लागी हे घणुं अति हे जोर के ॥ ९ ॥ दु० ॥
 तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी
 दीन वचन के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा
 हे निकल्यो ते वन के ॥ १० ॥ दु० ॥ अटवीमां जो
 तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह नदी नवाण के ॥ तव
 एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ठां
 ण के ॥ ११ ॥ दु० ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो
 वर हे जल जरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल जरि पो
 यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥
 दु० ॥ अंग ठखां जल पीवतां, मनथी लह्यो हे पियु
 माहाबलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुज व
 खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ दु० ॥ धन्य

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुळ प्रगट्यां जाग्य
 के ॥ मनवंतित पियुडो मळ्यो, थयां परगट हे मुळ
 सुख सौजाग्य के ॥ १४ ॥ दु० ॥ सुरवाणी साची
 मली, जेवी जाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा
 ग्या पासा ढव्या, राजकुमरी हे मन हरख पश्ठ के
 ॥ १५ ॥ दु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी; एकतारी हे ब
 नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं, तिम बे
 हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ दु० ॥ श्म क
 रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतस्यां तेह के ॥
 दूरथी दीतुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोणित डिं
 ग जेह के ॥ १७ ॥ दु० ॥ कनकजडित डिंग डुर्ग ठे,
 कोशीसां हे मणिमय दीपंत के ॥ जाणीयें नूरमणी
 करें, सोहे कंकण हे रवितेज फिपंत के ॥ १८ ॥ दु० ॥ नं
 दन वन सम वाटिका, फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत
 के ॥ सजल सरोवर जल जखां, देखीने हे वर नारी
 मोहंत के ॥ १९ ॥ दु० ॥ नगर समीपें आवीयां,
 वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक
 आवियो, वैताल कहे जलि आशिष दीध के ॥ २० ॥
 दु० ॥ पूढे हरिबल तेहने, कहो बारोट हे आ नग
 रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी

(३१)

हे ठे कुण अनिराम के ॥ ११ ॥ दु० ॥ तव हरि
बलने ते कहे, वेतालक हे सुणो पंथी साथ के ॥ म.
दनवेग ठे नूपति, वीशाला हे नगरीनो नाथ के ॥ १२ ॥
दु० ॥ अरियण सघला वश करी, राज्य जोगवे हे
सुरपतिनी समान के ॥ पायक गज तुरी ठे घणी,
सप्त लक्ष्मीनी हे ठकुराइं मान के ॥ १३ ॥ दु० ॥ व
रण अठार वसे इहां, पुण्य करणी हे करतां सद्गुलो
क के ॥ पापनी बुद्धि मले नही, जोगीजन हे वसे चा
तुर कोक के ॥ १४ ॥ दु० ॥ बार जोयण पोली कही, नव
जोयण हे दीर्घ शोजित पोल के ॥ कनक रयणमय
मालियां, चोराशी हे चढुटानी उल के ॥ १५ ॥ दु० ॥
जाणीये स्वर्गपुरी जली, वीशाला हे नगरीनुं नाम के ॥
सुखीयां लोक वसे सद्गु, दुःखीयानुं हे नवि दीसे ठा
म के ॥ १६ ॥ दु० ॥ एहवो व्यतिकर मांमीने, वैता
लकें हे कह्यो थइ उजमाल के ॥ सांजलि बेदु राजा
थयां, लब्धि कहे हे ए तो सातमी ढाल के ॥ १७ ॥ दु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ नगरी नृपनी वारता, वैतालें कहि जाम ॥ वात.
वधामणि हरिबलें, दीधी मुझा ताम ॥ १ ॥ चित ठ
रियुं वैतालनुं, देखी पीली वस्त ॥ हरिबलने चरणो न

मी, जइ दिधि स्त्रीने हस्त ॥ १ ॥ हवे कुमरी पियुने
 कहे, सांजलो जीवन प्राण ॥ वास वसीयें इहां कणो,
 इण नगरी इण ठाण ॥ २ ॥ तव हरिबल कहे नारी
 ने, सुणो प्रिया मुऊ वाच ॥ तुम अम मनहुं एक ठे,
 जे कहेशो ते साच ॥ ४ ॥ एम कही ऊठ्यां तुरत,
 लेई निज परिवार ॥ नगरीमां जातां थकां, शकुन
 थयां श्रीकार ॥ ५ ॥ दुर्गा काक ने श्वान गुन, माबी
 नैरवं संत ॥ सांढ सारस खर तुरी, जिमणां जाली
 हुंत ॥ ६ ॥ अंगज दशरथ सुततणो, बांधे तोरण सार ॥
 शकुन थयां जमणी दिशैं, करतां पुर पेसार ॥ ७ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ बन्यो रे सगुरुजीनो कलपडो ॥ ए देशो ॥ जीरे
 गुन लगनैं गुन मुहूरतैं, एतो नगरीमें कीध प्रवेश
 रे ॥ सुजाण ॥ तिण समे सनमुख वली थया, गुन
 कोरी शकुन विशेष रे ॥ सु० ॥ १ ॥ गु० ॥ कन्या पांच स
 हामी मली, एतो छेइ दीप उद्योत रे ॥ सु० ॥ गज
 रथ शणगाखा जला, मलि सनमुख रयणनी ज्योत
 रे ॥ सु० ॥ २ ॥ गु० ॥ जीरें एहवे शकुनैं नग
 रीमें, एतो हरिबलें पगळुं दीध रे ॥ सु० ॥ तिण
 समे एक व्यवहारियो, भव्यो सनमुख प्रणिपत कीध

रे ॥ शु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ तव हरिबल पूढे वणिकने, अ
 म कोइ बतावो गेह रे ॥ सु० ॥ वास करुं अमें ज
 ई तिहां, एतो लहीयें सुख ससनेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥
 ॥ शु० ॥ जीरे तव कर जोडी वणिक ते, हरिबलने
 करे मनुहार रे ॥ सु० ॥ अम घरे आवो प्राहुणा,
 अमें देखुं मोहोदुं आगार रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ शु० ॥
 जीरे आग्रह करीने वणिक ते, तेडी आब्यो निज
 आगार रे ॥ सु० ॥ जगति जुगति जलि साचवी, ए
 तो देइ मीठा आहार रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ शु० ॥ जीरे
 वणिक हरीबल कारणें, रहेवाने दीधा आवास रे
 ॥ सु० ॥ कनकरयणमय मालीयां, एतो सोहे रवि
 ज्युं प्रकाश रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ शु० ॥ एतो वास कखो
 जइ तेहमें, एतो हरिबलें आणि उल्लास रे ॥ सु० ॥
 शकुनतणा परजावथी, एतो पुण्यें लहियो सुवास
 रे ॥ सु० ॥ ८ ॥ शु० ॥ हवे हरिबल पूढे वणिकने,
 तुम नाम कहो गुणवंत रे ॥ सु० ॥ तव व्यवहारी
 कहे प्रभु, मुऊ नाम ठे श्रीपति संत रे ॥ सु० ॥ ९ ॥
 ॥ शु० ॥ एतो नाम सुणी तव हरिबलें, श्रीपति बं
 धव कीध रे ॥ सु० ॥ व्यवहारी सनमानीयो, एतो
 सिरपाव देइ प्रसिद्ध रे ॥ सु० ॥ १० ॥ शु० ॥ हवे ह

रिबल सुख जोगवे, एतो वसंतसिरीनी साथ रे ॥ सु०
 ॥ मानवजव सफलो करे, एतो जाणे पामी आथ रे
 ॥ सु० ॥ ११ ॥ शु० ॥ एतो शत्रुकार मांमयो घणो,
 एतो देवे दान उठाह रे ॥ सु० ॥ बंदीजन बिरुदाव
 ली, ए तो हरिबलनी बोले अथाह रे ॥ सु० ॥ १२ ॥
 शु० ॥ ताल कंसाल मृदंगना, एतो वाजे नाद अचंज
 रे ॥ सु० ॥ हरिबल आगल शोजता, एतो होवे नाटा
 रंज रे ॥ सु० ॥ १३ ॥ शु० ॥ चाली पुरमें वातडी, ए
 तो हरिबलनी आख्यात रे ॥ सु० ॥ मदनवेग नृप
 आगलें, एतो हरिबलनी थड वात रे ॥ सु० ॥ १४ ॥
 शु० ॥ एतो कृत्रीवंशें राजवी, एतो वीरबल केरो धी
 र रे ॥ सु० ॥ जुजबली जीम समो वडी, एतो दानें
 विक्रम वीर रे ॥ सु० ॥ १५ ॥ शु० ॥ आव्यो आपणा नय
 रमां, एतो परदेशी प्राहुणो जोर रे ॥ सु० ॥ वसंतश्री
 तैस जारजा, एतो रूपें रंज चकोरं रे ॥ सु० ॥ १६ ॥
 शु० ॥ एहवी थड दरबारमां, एतो हरिबल केरी वा
 त रे ॥ सु० ॥ कृत्री वंश शिरोमणी, एतो वीरबल के
 रो जात रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ शु० ॥ मदनवेग नृप सां
 जली, एतो मनमें दुठ हेराण रे ॥ सु० ॥ तो बोला
 बुं एहने, एतो जोबुं ते अहिनाण रे ॥ सु० ॥ १८ ॥

शु० ॥ इम जाणीने नृप तदा, एतो सचिवने दीध
 आदेश रे ॥ सु० ॥ आग्रह करि तस तेडीने, तुमें
 आवजो अत्र विशेष रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥ तत
 खिण सचिव तिहां जई, हरिबलने कीध प्रणाम
 रे ॥ सु० ॥ नृपनुं तेडुं तुम अढे, तुमें आवो आतमराम
 रे ॥ सु० ॥ २० ॥ शु० ॥ उठी हरिबल ततखिणे, च
 ढयो अश्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ जेट जली नृप
 आगलें, जइ सूकी नृप प्रणमेह रे ॥ सु० ॥ २१ ॥ शु० ॥
 नृप पण हरिबलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे
 सु० ॥ बेठा एकण गादीयें, एतो हरिबल नृप उंहा
 ह रे ॥ सु० ॥ २२ ॥ शु० ॥ आगम नीगमनी करी, एतो
 बे घडी वातनी गोवि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी
 थया, जिम कर चढे साकर पोवि रे ॥ सु० ॥ २३ ॥
 शु० ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिबल केरुं तेज
 रे ॥ सु० ॥ राज्यसनादिक नृप तणुं, एतो देखी वा
 ध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ २४ ॥ शु० ॥ बंदीजन बि
 रुदावली, एतो बोले कृत्री वंश रे ॥ सु० ॥ माता
 वीरायें जनमीयो, एतो वीरबल कुल अवतंस रे ॥
 सु० ॥ २५ ॥ शु० ॥ हरिबल गुण नृप सांजली,
 एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आनूषण अंगें

(३६)

ठवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ १६ ॥
 शु० ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिबल च
 ढवा काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षे करी, एतो
 प्रबल वधारी लाज रे ॥ सु० ॥ १७ ॥ शु० ॥ एतो
 जलें आव्या तुमें नयरमें, तुम आवे वध्युं हम हेज रे
 ॥ सु० ॥ नगरी अम पावन थई, एतो दिन दिन चढते ते
 ज रे ॥ सु० ॥ १८ ॥ शु० ॥ इम सनमानी बोलावियो,
 एतो वसंतसिरीने गेह रे ॥ सु० ॥ लब्धि कहे ढांल
 आवमी, एतो पुण्ये लप्ते एह रे ॥ सु० ॥ १९ ॥ शु० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिबल ते निज मंदिरें, आव्यो करी आमंग ॥
 वसंत सिरि हरखित थई, देखी पियुनो रंग ॥ १ ॥ म
 दिन वेग नृपनी सदा, सारे निशदिन सेव ॥ बांध ठो
 ड दरबारनी, हरिबल करे ततखेव ॥ २ ॥ हाल दुकु
 म हरिबल तणो, थयो विशालामंघ्र ॥ जीरण सचिव
 कोरें रह्या, अलसा थई अकल ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं
 एक मन, दीसंता तन दोय ॥ बाजी पूरण प्रीतडी,
 ज्युं नख मांसने ह्सेय ॥ ४ ॥ वसंतसिरि अपठर स
 मी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंडुक सुरनी परें, हरिब
 ल जोगवे जोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें, दंपति

करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतररी, दीजें नोजन
 सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांजलो प्राणा
 धार ॥ इण वार्ते कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचा
 र ॥ ७ ॥ पण एक वात विचार ठे, धारो चित्त म
 फार ॥ दीपक लेइ देखाडवो, तेडी नृप आगार
 ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चाडीयो, काग अही सोनार ॥
 एता नोहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ९ ॥ ते
 माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरी
 ने नोतररी, द्यो नोजन अजिराम ॥ १० ॥ सांजल
 गोरी माहरी, साच कही तें वात ॥ जो ठे दाहांडा
 पाधरा, गुं करजो नृप घात ॥ ११ ॥ पुण्यें वैरी आं
 धला, पुण्यें पाप विलाय ॥ पुण्य प्रबल जो कीजियें,
 तो सयलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे सांजल प्रि
 या, जो प्रभु दीधी आथ ॥ जिमणे हाथें दीजियें, तो
 ते आवे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल नवमी ॥.

॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा; एम कही
 आब्यो जब रातें ॥ ए देशी ॥ हके हरिबल मनहरख
 धरीने, आतमरंगें नेली रे ॥ गोधूम तंडुल मिशरी
 खंभा, घृत सामग्री मेली रें ॥ १ ॥ खटरस नोजन

सार निपाई, सागर देव प्रजावें रे ॥ नोतरुं देवा नृप
 दरबारें, हरिबल पोतें जावे रे ॥ ख० ॥ १ ॥ आग्र
 ह करि निज आसन आपे, हरिबलने नृप हेतें रे ॥
 मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें ठो जीवन जेते रे ॥
 ॥ ख० ॥ २ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, नांखे
 सांजलो स्वामी रे ॥ हुं सेवक हुं तुम पद केरो, तुमें
 मुज अंतरजामी रे ॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी महोटा
 थावं अमें महोटा, तुमें ठो वंठित पोटा रे ॥ तुमें ठो
 गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थावं घेटा रे ॥ ख० ॥
 ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटो ठे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें
 सहुगा रे ॥ तुमें ठो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें किं
 बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणपरें मीठे वचने नृपने,
 गीजवी हरिबल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रभुजी
 अमारी, नोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ख० ॥ ७ ॥ नग
 र सहित तुमें राज पधारो, अम धरे नोजन करवा
 रे ॥ हुं आब्यो हुं तेडवा सारु, तुमने जमण आचर
 वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित अइ नृप परिवारें,
 हरिबल मंदिर आके रे ॥ सोवन थाल कचोलां मां
 मी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी
 नवनवा शणगार पेहरी, नृपने नोजन प्रीसे रे ॥ ह

(३९)

रिबल पण नृप जमता नाखे, पंखे पवन जगीसें
रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविंश जातनी सुखडी पिरसी,
फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महौ
टा, देव आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत
पाक ने आंबां पोली, श्रीखंम सीरा सुंदाजी रे ॥ शा
ल दाल ने घृत परनालि, पिरसे ज्युं गंगा वाली रे ॥
॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तीखां व्यंजन, बत्रीश
जातिनां धामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जम
तां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जमतां जमतां
अन्योअन्यें, रसवती जीजें वखाणे रे ॥ के गुं देव
आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥
॥ १४ ॥ रसीयावाले मढ्यो जन ऊपर, फूजे मन आ
व्हादें रे ॥ अमली जंगी जंगी जन ते, कीधां जोजन
स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, दे
मुखवासनी बूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जमार्डा,
जागोलें चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस
पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर
कुल लहि हरिबल पोतें, सुकृत काज कीधुं रे ॥ ख० ॥
॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जमतां, वसंतसिरी ते
दीठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूपं सुकोमल, देखत लागी

मीठी रे ॥ ख० ॥ १८ ॥ नृपतुं मन विह्वल थयुं ज
 मतां, कामें कीधो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुऊ स्त्री ठे न
 छेरी, पण नहि एहवो तोरो रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ ख
 टरस जोजननी सुघडाई, नृपना मनमें बेठी रे ॥
 कामज्वरभी जोजन नूख्यो, स्त्रीनी चिंता पेठी रे ॥
 ॥ ख० ॥ २० ॥ खाधुं न खाधुं करीने नृपते, मन
 विमनो थइ ऊठयो रे ॥ असेनियो थइ नृप घरे वली
 यो, जाणे जगदीश रूठयो रे ॥ ख० ॥ २१ ॥ चमंकी
 चितमें चतुरा ततखिण, दीतुं नृप मन बिगडयुं रे ॥
 तव प्रीतमने कहे निज प्यारी, चेतो नृप हेत उघ
 डयुं रे ॥ ख० ॥ २२ ॥ तव हरिबल कहे सांजल
 प्यारी, नावी हजे ते थाजे रे ॥ खणजे ते पडजे
 खाईमां, आपणुं कांइ न जाजे रे ॥ ख० ॥ २३ ॥
 चिहुं जगमें हरिबलनी कीर्ति, बोले गुणिजन जीहा
 रे ॥ सुखें समार्धें दंपति दोये, सुखमें काढे दीहा रे ॥
 ॥ ख० ॥ २४ ॥ जोजो नविया धीवर जाति, एक
 जो जीव उगाखो रे ॥ सुरसानिध मनबंधित फलि
 थुं, जगमें जस विस्ताखो रे ॥ ख० ॥ २५ ॥ छुट परं
 परं सोहमस्वामी, हीरविजय सुरिराया रे ॥ साह
 अकब्बर जे प्रतिबोधी, जैनमार्ग दीपाया रे ॥ ख० ॥

(४१)

॥ ३६ ॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल गु
एँ करि ढाजे रे ॥ कोविदशिर मुकुटामणि सोहे, तस
शिष्य धनहर्ष राजे रे ॥ ख० ॥ ३७ ॥ तस शिष्य कु
शलविजय कविराया, दिनमणि तेज सवाया रे ॥
तस बंधव गणि कमल विजय गुन, तस श्रुतज्ञान
सुहाया रे ॥ ख० ॥ ३८ ॥ तस शिष्य पंन्तित लक्ष्मी
विजय गुरु, सोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया दो
विधिगुं आराधी, आतम साधन कीना रे ॥ ख० ॥
॥ ३९ ॥ तस शिष्य दो हुवा साधु शिरोमणि, कुमती
मद जीपंता रे ॥ पंन्तित केशर अमर दो चाता, रंवि
शशिपरें दीपंता रे ॥ ख० ॥ ४० ॥ ते गुरुचरण प
सायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥ पहेलो उद्भास
कह्यो नव ढालें, हरिबल केरो संबंध रे ॥ ख० ॥ ४१ ॥
॥ इति श्रीहरिबलचरित्रे हरिबल राजर्षि पुरवर्णन
नृपवर्णनादि प्रथमउद्भासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीजद्भासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ परम ज्योति परकाश कर, त्रिष्ठवन तिलक स
मान ॥ गरिब निवाज गोडी धणी, जयजंजन जग

वान ॥ १ ॥ अविनाशी अव्यय अरूप, अशरीरी अ
 अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, ते प्रणमुं शुच सं
 त ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतले, शारद मात वि
 शाल ॥ वचनामृत वरसे सदा, प्रगट थई उजमाल
 ॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोबडा, अकलविहूणा जेह ॥ त
 स घट नीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥
 परउपगारी मातजी, बाला त्रिपुरा सोय ॥ तेहुं प्रण
 मुं नारती, जिम मुळ वंढित होय ॥ ५ ॥ कोविद के
 शर अमरना, चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल म
 ङ्गीरायनो, पनणुं बिजो उद्भास ॥ ६ ॥ रंग रंगीली
 जनसजा, सांजल वेधक जाण ॥ मधुकरनी परें रस
 लीए, गुणवंत जाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस र
 सिया लहे, चातुर वेधक जेह ॥ पण मूरख पणु बा
 पडा, शुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥ सरस निरस मधुक
 र लहे, जे सेवे वनराय ॥ घूण शुं जाणे जीवडो, सू
 कां लक्कड खाय ॥ ९ ॥ खटपद सरिखा चतुर नर,
 वेधक वचन रसाल ॥ राचे सरस कथा सुणी, विक
 शा तजी विचाल ॥ १० ॥ वक्ताने श्रोता सुणी, सा
 हामो साहामी दृष्ट ॥ एक सरीखी जो दुवे, सु
 णतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेमाटे जावुक तुमें, सां

जलजो चित लाय ॥ पण ते सुणतां मत करो, महि
षी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हखिल्लें, की
धी नक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो नवियण तुमें, शी शी
निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आढे लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार, जोयण
देइ सार ॥ आढे लाल ॥ हखिल्लें कीध पहेरा मणी ॥
मणि माणक लख लेय, अंग आनूषण देय ॥ आ० ॥
वोलाव्यो नृप गृह जणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम,
मंदिर वलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें व
सी ॥ अंगनारूप निहालि, मनमां थइ चकचाल ॥
आ० ॥ नृप मननी मगली खसी ॥ २ ॥ जीवरह्यो
ललचाय, ज्युं मधु खग लपटाय ॥ आ० ॥ काम व
शें करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्या
कुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥
परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥ आ० ॥
विकलमूर्ति परें जयो ॥ खिण बाहिर खिण मांदि, जक
न पडे खिण क्यांदि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वहि
गयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतेठरी
हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान

तबोल, न गमे वात टकोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक म
 न नवि रमे ॥ ५ ॥ ह्नी परजापाल, मदनवेग म
 ह्नी ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बा
 ण लागां अशेष, पडयो गिडंदा पेच ॥ आ० ॥ का
 मिनीयें कख्यो जाजरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरठा अचे
 त, जाणीयें लाग्यो केत ॥ आ० ॥ सघला सचिवने
 तेडीया ॥ पंहेरी नव नवा वेश, धव धव धाड् अ
 शेष ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ जा
 ण्या जोषो विशेष, पट्टा जे खाता हमेश ॥ आ० ॥
 तेड्या ते वैद राजने ॥ दशो दिशें दोड्या सर्व, जाण
 प्रवीण ते सर्व ॥ आ० ॥ आव्या तेडी लवाजने ॥
 ॥ ८ ॥ जरडा नूवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ० ॥
 आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गा
 रुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखा
 णता ॥ ९ ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक ब
 जाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ जगत
 वेरागी धाय, लांबां टीलां बनाय ॥ आ० ॥ आया
 ते दंत उवासनी ॥ १० ॥ इणि पेरें मलिया लोक, उद
 रने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप त
 णी ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांमी अगर्व

॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा नणी ॥ ११ ॥ कहैं
 एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दा
 ह ज्वर मूर्च्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, ठे मुऊ गो
 ली सद्य ॥ आ० ॥ ठत्रीश रोग हणो सही ॥ १२ ॥
 जे हता वैद्य ते सर्व, मनछुं राखता गर्व ॥ आ० ॥
 पाली मठ पोषी रह्या ॥ बहु ते कीध उपाय, पण
 नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोषी वह्या
 ॥ १३ ॥ बोल्या जोषी जाण, नांखे लगन प्रमाण
 ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा ठे रायने ॥ ते माटे करो होम,
 जाय ज्युं रोगनो जोम ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुम्हें
 लायने ॥ १४ ॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे
 प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या
 जगतजन एम, मानो ते बिणु जेम ॥ आ० ॥ हम्
 णां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें नार,
 ठे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजि
 यें ॥ कहे एक गांठनो रोग, पीहो लक्ष्मी योग ॥ आ०
 ॥ चूरण बूकी दीजियें ॥ १६ ॥ नूवा बोले जगीश,
 नृपने जोटिंग खवीस ॥ आ० ॥ वेलाबली विलगण
 अइ ॥ धूणे धूणावी शीश, पाडे बहुली चीस ॥ आ०
 ॥ वाण उतारे चिंता जइ ॥ १७ ॥ मांमयां मांमलां के

य, वाज्यां मांकलां जेय ॥ आ० ॥ पण लेखे को ना
 वियां ॥ जेणें कछुं जे जेम, तेणें कछुं ते तेम ॥ आ० ॥
 पण नृप चित्त न जावियां ॥ १७ ॥ एम अनेक उपा
 य, जलजला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं पट
 की वळ्या ॥ विराजला हता जेह, परबंधी पण तेह
 ॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सघला गळ्या ॥ १८ ॥ न
 गत संन्यासी कूण, गलिया ज्युं पाणी लूण ॥ आ० ॥
 फोंगट गाल फुलावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, वादी
 गर गया ठाण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे हुंलावता ॥
 ॥ १९ ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्रविवेक ॥
 ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढया ठे रा
 य, तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोड
 तिहां गुणकरु ॥ २० ॥ लाधो नाडी जेद, मंत्री लह्यो ते
 अमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नड्यो ॥ मूरठा
 लह्यो तिण योग, पूरव कर्मना जोग ॥ आ० ॥ काम
 अनल कुंमें पड्यो ॥ २१ ॥ जेह ठे नृपने रोग, तेह
 शुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कुण लहे ॥
 कामनुं जेहर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ० ॥
 कहो ते रोगने कुण ग्रहे ॥ २२ ॥ जिहांथी प्रगट्युं दुः
 ख, तिहांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बळ्यो अग

नी ठरे ॥ विरहानलनी बाफ, जेहने रहि तन व्याप
 ॥ आ० ॥ ते शीतल रमणी करे ॥ १४ ॥ इम चिंती
 मनमांहे, सजा समझ उछाहे ॥ आ० ॥ मेहर मंत्री
 इम जणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फोगट कीधा उपा-
 य ॥ आ० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणे ॥ १५ ॥ आं
 खनुं उषध कान, कीधुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
 साधक मूरख मळ्या ॥ अंतरगतनी पीडं, कामज्वर
 नी रीड ॥ आ० ॥ ते कुणे नवि अटकळ्या ॥ १६ ॥
 जे लहे शास्त्र विचार, होवे जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥
 ते जाणे सघली कला ॥ गुं करे चिकित्सा कर्म, न जा
 णे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे ठाशने बाकळ्या
 ॥ १७ ॥ सजा विसर्जी ताम, सद्गु पोहोता निज धा
 म ॥ आ० ॥ मंत्री हवे वैदूं करे ॥ बीजा उल्लासनी
 ढाल, पहेली कही उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविज
 य इम उच्चरे ॥ १८ ॥ आ० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृप
 नी पीडा टालवा, बेगो आइ नजूक ॥ १ ॥ कामा
 तुर नृपने लही, सचिव करे उपचार ॥ राणी सघ
 ली तेडीयो, शोल सजी शणगार ॥ २ ॥ रम ऊम क

रती आवीउं, रूपें अपरवर सार ॥ मदन तणी जे
 वाटिका, कमीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना प
 गे तलां, उलासें उलास ॥ पवन करे रंजादले, आं
 जे नेत्र बरास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपनुं
 नीडी अंग ॥ शयन कछुं घडि दो लगे, उतखो ताम
 अनंग ॥ ५ ॥ कोकशास्त्र तणे बजे, कीधो ए उप
 चार ॥ आंख उघाडी ततखिणें, महिपतियें तिण वार
 ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको अयो, पाम्यो चेतन सार ॥
 मेहर मंत्री जस लह्यो; वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
 मदनवेग हरख्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो
 मंत्रीसरु, देई बहुलुं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें
 कख्यो, राख्यो एह प्रधान ॥ मुऊने मोहोटी गुण कख्यो,
 दीधुं जीवितदान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं अयो, म
 हारा डुखनो जाण ॥ में राख्यो तुऊने सही, तन मन
 करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं
 हुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करखुं अमें, तन मन क
 रि एकरास ॥ ११ ॥ पण मुऊने साची कहो, ए कां
 रण अयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जे
 म ॥ १२ ॥ वगर कहे किम जाणियें, पारका मननी
 वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे, मांमी सघली घात ॥ १३ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए
देशी ॥ नृप कहे साजल मंत्री, कहुं तुऊ नीपनी ॥ हरि
बल केरे मंदिर, जमतां जे ऊपनी ॥ हरिबल केरी नारि,
वसंतसिरी सदा ॥ प्रीसवा आवी नोजन, में दीठी तंदा
॥ १ ॥ रूप अनोपम जाणीयें, अजिनव अपठरी ॥ के
रंजा के उर्वशी, के विद्याधरी ॥ नागकुमारी ए जाणुं
के, लखमी किन्नरी ॥ एहवी रूप निधान में, दीठी ए
सुंदरी ॥ २ ॥ ए रूप आगल बीजी, स्त्रीयो बापडी ॥
मान गुमान ते मूकी, दशो दिशि त्रापडी ॥ रंजा उर्वशी
अपसर, जइ नजमें रही ॥ पद्मइहमें लखमी, रही
अंबुज ग्रही ॥ ३ ॥ नागकुमारी किन्नरी, नूतलें जइ
वसी ॥ वैताढयें विद्याधरी, रही जइने खसी ॥ जे
रमणीनी उपमा, ते देतां सही ॥ वसंतसिरी को आग
ल, मांझि शकी नही ॥ ४ ॥ ते अंगनानुं रूप, देखि
हुं वश थयो ॥ खटरस नोजन जमतां, ते नूली गयो ॥
मन ललचाणुं मुऊ, नमर जिम केतकी ॥ जिम मधु ख
ग लपटाय, थयुं तिम एथकी ॥ ५ ॥ कोइक चोघडी
यानी जे, आवी हिये चडी ॥ खिण खिण सान्न
रे बीसरे, नही ते अध घडी ॥ चित्रलिखित जो माव

त, गजथकी उतरे ॥ तो मुऊ हृदयथी वसंत, सिरी ते
 वीसरे ॥ ६ ॥ ते विण जे घडि जाय ते, मास स
 मान ज्युं ॥ मास ते जाणीयें होवे, वरस प्रमाण ज्युं ॥
 मोहविलुधो जीव, फूरे दिन रातडी ॥ साले साल
 समान, खुई निज जातडी ॥ ७ ॥ मत कोझे प्रभु ला
 गो, एकांगी प्रीतडी ॥ बाले सुरंगी देह, पतंग ज्युं
 रीतडी ॥ अगनी जंपापात, करेवी सोहिली ॥ पण वि
 रहानल बाफ, सहेवी दोहिली ॥ ८ ॥ संग्राम करतां
 लागे ते, जलकां सोहिलां ॥ पण ते कामिनी जलकां, ख
 मवां दोहिलां ॥ जिम रोगी ज्वरयोगथी, सेजें तडफ
 डे ॥ तिम विरही नर काम, ज्वरथी लडथडे ॥ ९ ॥
 चिंता चिता दोमें, अधिकी कुण वहे ॥ चिता दहे नि
 जीव, सजीव चिंता दहे ॥ जिहां सुधी ते नयणें न,
 निरखे अति जले ॥ घरनां कारज तिहां सुधी, कांहि न
 ऊकले ॥ १० ॥ लोचीनी परें जीव, रहे निज ते क
 ने ॥ खाधा पिधानी सुध, नही ते जीवने ॥ शूनी
 फरे तस देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागी घ
 णुं जोर जे, ललना अजिनवी ॥ ११ ॥ विरुड विष
 य विकार के, दृष्टि लागे जिका ॥ वीषयीनो दिल दाह,
 जाणे केवली तिका ॥ मदिरा पीधे जीव, घुमाई ज्युं रहे ॥

विरहानो लीणो जीव, मुंजाइ त्थुं वहे ॥ १२ ॥ जोजो
 नवियां प्रीतडी, लागे जेहने ॥ होये एह हवाल के,
 मानव तेहने ॥ विरहनी वारता बीती, हशें ते जाणशें
 ॥ पण निसनेही मूरख, शुं ते पिढाणशे ॥ १३ ॥ मननी
 लालच रात, दिवस रहे तेहशुं ॥ न गणे सुख दुःख जीव,
 बंधाणो जेहशुं ॥ प्रीतिनो लीणो जीव, पडे ते कूप
 मां ॥ तन धन सोंपे नेही ने, सरवे ते चूंपमां ॥ १४ ॥
 रमणी तणां जे नेत्र ते, कळाल पंकथी ॥ प्रगटे कंदर्प
 मत्त, वराह निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह
 ते संचरी ॥ मानलता खिण एकमें, जाये ते चरी ॥ १५ ॥
 कामी जनने काम, सुअर केडें पडे ॥ विरही जनने अह
 निशि, विण खूनें नडे ॥ काम वराह ते कामिनी, संग
 थी उंसरे ॥ वीरहीजननां मन ते, तव शीतल करे ॥
 १६ ॥ सबल पुरुष गढ कोट ते, जीते पराक्रमें ॥
 कामिनी जीते त्रीजग, एक कटाक्षमें ॥ कामणगा
 री नारी ते, सहुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर, स्त्री
 केडें फरे ॥ १७ ॥ सबला ते नबला आई, स्त्री वश
 रहे बहु ॥ तो माहरो कोण आशरो, मंत्री तुज कहुं ॥
 रे मंत्री तुज आगल, मांमी में कही ॥ वसंतसिरीनुं कार
 ण, एनीपनुं सही ॥ १८ ॥ जोजन करवा गया तव, ए

फल लाविया ॥ कारण करीने कारण, लोकने लाविया ॥
 कारण विंथावतां नाक, विंथावी आवियो ॥ ए ऊखा
 णो लोकमें, साचो करावियो ॥ १ ए ॥ ते माटे हवे
 कोइक, उद्यम कीजियें ॥ वसंतसिरीमुख देखि, सु
 धारस पीजियें ॥ जो कोइ विद्या होय तो, पलकमें
 जइ मलुं ॥ राचुं माचुं मन, तिहांथी न नीकलुं ॥ २० ॥
 बुद्धि अकल परपंच, करी कोय केलवे ॥ ठे कोय प्रभु
 नो वाहालो, मुळने मेलवे ॥ तन मन करुं खुरबान,
 के जो मुळने मले ॥ आपुं कोडि पसाय, करी नले नले
 ॥ २१ ॥ ए अधिकार ते सघलो, मंत्रीयें सांजल्यो ॥ कामा
 तुरं थयो राय, ते मंत्रीयें अटकल्यो ॥ घणुं बलीयो
 पण सिंह, अजाडीमें पड्यो ॥ तिम रमणी मोह
 जालमां, नृप पूरो जड्यो ॥ २२ ॥ तो हवे कोइक
 बोल, सुबोल कही जला ॥ नृपना मनमें खीनी, फि
 कर काहुं बला ॥ सवलुं कमल हरो तो, कहुं नृप मा
 नरो ॥ तो शीखामण सघली, लेखें आणरो ॥ २३ ॥
 सांजलजो नवि आगल, मीठी वारता ॥ सांजलतां
 खुशियाल, श्रोता दिल वारतां ॥ बीजा उल्लासनी
 ढाल, ए बीजी पूरी करी ॥ नेहीने मन गमती ए,
 लब्धियें उच्चरी ॥ २४ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे मंत्री नृपने कहे, सांजलो प्रभु महारा
ज ॥ अंतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥
॥१॥ पण ए वात हलकी नहीं, ठे नारे महिनाथ ॥
गणवा दशन यमदंमना, नजगुं जरवी बाथ ॥ १ ॥
तिम ए स्त्रीगुं नेहलो, करवो अति दुर्जेन ॥ ठंमो सं
गति एहनी, ज्युं लहो सुख सुलंन ॥ २ ॥ जे कीधे
तुमने प्रभु, खामी लागे अपार ॥ वाड जो गलरो ची
नडां, क्यां होय तास पुकार ॥ ४ ॥ परडुःखनंजन
राजवी, परजन पाले लाड ॥ वाहार जोश्यें जिहां
थकी, तिहां किम ऊठे धाड ॥ ५ ॥ अणघटती ए वातड़ी,
किम कीजें प्रभु नाथ ॥ देखी पेखी वाघना, मुखमें
घालवो हाथ ॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो की
जें प्रतिबंध ॥ ठानी वातो नवि रहे, हिंग तणी जे
म गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंग
रेल ॥ जगमें ठे परणी नली, पर परणी विषवेल ॥ ८ ॥
कांणी कोची करबली, काली कुबडी जाण ॥ परणी
जेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिढाण ॥ ९ ॥ आप
णी गावडी चंडमा, जे दोही पीवाय ॥ गुं कीजें पर
नी नली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्त्री संग

ति जे करे, तेहनां पूरण पाप ॥ ऊंप करी बेसे नही,
 न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंज सरिखा नर क
 ह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी अस्तिधार
 ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना लाल
 ची, जे थया विषयाअंध ॥ नरकनिगोदें रडवड्या,
 सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ नणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रावण स
 रिखो राजवो, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ ला
 ख बेहेंतालीश गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे रा
 जन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विडंबना, कामें लुब्धा
 जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांइ नवि गणे, न
 गणे सुख दुःख तेह ॥ हे रा० ॥ २ ॥ धि० ॥ ब
 त्रीश सहस अंतेउरी, रूपें अपठर प्राय ॥ हे रा०
 ॥ ते सरखीने अवगुणी, रावण सीता हराय ॥ हे
 रा० ॥ ३ ॥ धि० ॥ राम मे लखमण बेहु मली, मेली
 कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वरस लगे आकरा, जू
 क्या नर कुंजार ॥ हे रा० ॥ ४ ॥ धि० ॥ सीताकारणें
 रावणें, केइ सुनट हणाय ॥ हे रा० ॥ अंतें पण रा
 वण तणां, दश मस्तकं ठेदाय ॥ हे रा० ॥ ५ ॥ धि० ॥

त्रिजगमें कंटकेश्वरी, नाम धरावतो जेह ॥ हे रा० ॥ चो
 थो नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥
 ॥ ६ ॥ धि० ॥ लंका परलंका करी, निजनारीने लेयं
 ॥ हे रा० ॥ निज नगरीयें रघुपति बळ्यो, जितना मं:
 का देय ॥ हे रा० ॥ ७ ॥ धि० ॥ बाणुं लख मालव
 धणी, जे थयो राजा मुंज ॥ हे रा० ॥ ते पण दासी
 मृणालथी, लुब्ध्यो कामीनि पुंज ॥ हे रा० ॥ ८ ॥
 धि० ॥ ते दासीना संगथी, घर घर मागी जीखं ॥
 हे रा० ॥ अंते शूलि रोपण थयो, कामथी लह्यो ए
 शीख ॥ हे रा० ॥ ९ ॥ धि० ॥ लुब्ध्यो डोंपदी ऊपरें,
 कीचकें कीयो चूक ॥ हे रा० ॥ घालियो देवल कुंन
 मां, जीमें कीधो चूक ॥ हे रा० ॥ १० ॥ धि० ॥ सर
 सति नामें साधवी, कालिकसूरिनी बेन ॥ हे रा० ॥
 गर्धनिल नृपें तस अपहरी, कीधुं ए कामी चेन ॥
 हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ कालिकसूरियें ततखिणें, मे
 ली प्रबल खंधार ॥ हे रा० ॥ गर्धनिल नृप शिर बेदी
 युं, वाली निज बहेन सार ॥ हे रा० ॥ १२ ॥ धि०
 ॥ इत्यादिक कामीजना, पाय्या दुःख अपार ॥ हे रा०
 ॥ परस्त्री गमन कखाथकी, पडिया नरक मऊर ॥
 हे रा० ॥ १३ ॥ धि० ॥ कामिनी जे संसारमां, जां

खी पापनी राश ॥ हे रा० ॥ कामी जनने पाडवा,
 मोहकूपें धखो पाश ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ नय
 ऐं देखाडी प्रीतडी, बोली मीठा बोल ॥ हे रा० ॥
 प्राण हरी लीये कामीनां, देखाडी रंग चोल ॥ हे रा०
 ॥ १५ ॥ धि० ॥ आंसूं पाडी नयणथी, दुःख देखाडे
 आप ॥ हे रा० ॥ आ जवमें मुऊ तुम विना, बीजा
 जाइने बाप ॥ हे रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ कडकडता
 करि आकरा, खाये खोटा सूस ॥ हे रा० ॥ ऐं पर
 मेसर साचलो, ठेतरे जलजला पुंस ॥ हे रा० ॥ १७ ॥
 धि० ॥ जोलवे जोला जामिनी, राखी ते कूडी बुद्धि ॥
 हे रा० ॥ जडक प्राणी बापडा, माने ते धोलुं दूध ॥
 हे रा० ॥ १८ ॥ धि० ॥ कूड कथन चाले घणुं, स्त्रीनो
 एह सजाव ॥ हे रा० ॥ चरित्र रमे केइ जातिनां, पा
 मी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ १९ ॥ धि० ॥ कूड क
 पटनी उरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अ
 जया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा०
 ॥ २० ॥ धि० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां पाकां बोर
 ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कठोर
 ॥ हे रा० ॥ २१ ॥ धि० ॥ महिला केरो नेहलो,
 जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ आसो मासनो मेहलो,

तेहवो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ ११ ॥ धि० ॥ स्वारथ
 पहाँचे जिहां लगें, तिहां लगें करे रंग रेल ॥ हे रा०
 ॥ तूठी तन धन हरि लिये, रूठी विषनी वेज ॥ हे रा०
 ॥ १३ ॥ धि० ॥ सुरीकंतायें कंतने, हणियो देई जेर
 ॥ हे रा० ॥ नारी छुष्ट होवे सदा, न जुवे करतां कैस
 ॥ हे रा० ॥ १४ ॥ धि० ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाख
 नां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुल्लणीयें निज पुत्रने,
 स्वहस्ते वन्हि दीध ॥ हे रा० ॥ १५ ॥ धि० ॥
 पायुं रक्त जुजातणुं, खवराव्युं उरमांस ॥ हे रा० ॥
 ते जितशत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें तास ॥ हे
 रा० ॥ १६ ॥ धि० ॥ नारी न होवे आपणी, वानां
 जो करियें लक्ष ॥ हे रा० ॥ दूधने मांग दो नामिनी,
 देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ १७ ॥ धि० ॥ मोह देखा
 डी दगो करे; स्त्रीनो ठे ए ठंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तु
 में राजवी, म करो परस्त्री संग ॥ हे रा० ॥ १८ ॥
 धि० ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥
 हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मजे, वसंतसिरी चित्त
 आंत ॥ हे रा० ॥ १९ ॥ धि० ॥ मन लागुं जेह उपरें, विसाखुं
 नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा ठाकमां, उप
 देश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ २० ॥ धि० ॥ लब्धि बी

जा उध्वासनी, ए कही त्रीजी ढाल ॥ हे रा० ॥ आ
गल नवि तुमें सांजलो, सरस कथा उजमाल ॥ हे रा०
॥ दोहा ॥

॥ बलि मेहर मंत्रीसरु, नृपने दे उपदेश ॥ जाणे
किम करि नृप बले, होवे लाज विशेष ॥ १ ॥ इम जा
णी मंत्री कहे, सांजलो तुमें माहाराज ॥ चिहुं जगमें
ढे अति घणी, तुमची महोटी लाज ॥ २ ॥ साचवी
यें जल आपणुं, अणसाचवियुं जाय ॥ नात्तीकेर
परें साचव्युं, अधिक अधिक जल थाय ॥ ३ ॥ परडुः
ख नंजन राजवी, जगमें इम कहेवाय ॥ परनारी ते
सहोदरु, बिरुद एम देवाय ॥ ४ ॥ ते मारग किम मू
कीयें, आपणि जे कुलवट्ट ॥ शील सुरंगुं सेवतां, ल
हियें सुख परगट्ट ॥ ५ ॥ शीलें सुर सांनिध करे, शी
लें शीतल आग ॥ शीलें अरि करि केशरी, नय जाये
सवि जाग ॥ ६ ॥ शीलें मनवंठित फले, शीलें लहे
सौजाग्य ॥ शील धर्म जे चित धरे, जाए दुःख
दौर्जाग्य ॥ ७ ॥ शील प्रनावें नविजना, चढे चउद
गुण ठाण ॥ केवल कमला ते वरे, पामे पद नि
र्वास ॥ ८ ॥ शीलथकी कुण कुण तव्या, ते सुण ज्यो
दृष्टांत ॥ मदन वेगने बूजवे, मेहर मंत्री विख्यात ॥ ९ ॥

(५९)

॥ ढाल चोथी ॥

॥ बिंदलीनी देशी ॥ एतो शीलनो महिमा म
होटी, सहि जांखे त्रिशलानो ढोटी रे ॥ नरपतिजी
निसुणो ॥ ए तो शीलथी लील विलास, शीलें पृहों
चे सघली आश रे ॥ न० ॥ १ ॥ ए तो जे नर शील
लने पाले, ते आतम नव अजुवाले रे ॥ न० ॥ जे
धरे शीलशुं राग, ते पामे नवोदधि तांग रे ॥ न०
॥ २ ॥ ए तो शील ठे कुलनुं आचरण, शील टांले
कर्म आवरण रे ॥ न० ॥ ए तो शील ठे कुलनुं रूप,
शीलें माने सुरनर नूप रे ॥ न० ॥ ३ ॥ ए तो शीलथी
शुक्ल ध्यान, शीलें पामे केवल ज्ञान रे ॥ न० ॥ ए
तो शीलशुं रहे एक तान, शिव रमणी दे तस मान
रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए तो शील ठे गुणनुं निधान, शी
लें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें संकट
चांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न० ॥ ५ ॥ ए तो
शीलें कुंअर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे ॥
न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेर, शूलि फीटी सिंहा
सन बेठ रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी,
लघुवयमें थयो शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें
नेम कुमार, थयो शिवरमणी उरहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥

ए तो शीलें मेघकुमार, जेणें ठंमी आठे नार रे ॥
 न० ॥ ए तो शीलें गयसुकुमाल, शिवपदवी लही
 सुरसाल रे ॥ न० ॥ ७ ॥ ए तो शीलें थूलिजइ ना
 म, राख्युं चिहुं जगमें अनिराम रे ॥ न० ॥ ए तो शी
 लें श्रीमद्धिनाथ, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे ॥
 न० ॥ ए ॥ ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां
 शीलें समारी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें सुजडा सुहाडी,
 जेणे चंपा पोल उघाडी रे ॥ न० ॥ १० ॥ ए तो डुपट्टी पां
 मव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवेरी रे ॥ न० ॥ ए तो
 तेहने शील प्रनावें, सुर सत अष्ट चीर पहेरावे रे ॥
 न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल, अहि फीटी
 थइ फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनबाला,
 वीरें करी जाक जमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इ
 त्यादिक अवदात, कहुं शीलनी केती आख्यात रे ॥
 ॥ न० ॥ जे पाले शील नर नारी, हुं जावें तस बलिहा
 री रे ॥ न० ॥ १३ ॥ कुशीलियो किहां न खटाय, कुकर
 ज्युं धक्का खाय रे ॥ न० ॥ कुशीलने काढे कूटी, जिम घरं
 मांथी हांमी फूटी रे ॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे
 विस्मस, कुशीलियो करे थइ दास रे ॥ न० ॥ कुशी
 लियो गति नवि पामे, जाये नरक निगोदने ठामें रे

॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले जंमाय, चाविश
दंमकें दंमाय रे ॥ न० ॥ कुशीलनां कर्म अघोर, ज
वो जवें फिरे थई चोर रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्र यंत्र नैं
विद्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध
साधक नाम धरावे, कुशीलने जस कदि नावे रे ॥
न० ॥ १७ ॥ माहादेव जे देव कहाय, सरगथी मरि
नरगुं जाय रे ॥ न० ॥ अहिव्यागुं इंद्रे जे लुब्धो,
तो सहस्रजगो नाम दीधो रे ॥ न० ॥ १८ ॥ कुल
वालुठ साधु कहातो, गुरु डोहित किम जातो रे ॥
न० ॥ ते गयो गणिका संगें, ठछी नरकें कुशीलने ठं
गें रे ॥ न० ॥ १९ ॥ वर्ष सहस्र ते चारित्र पाली, कुं
मरीकें तप परजाली रे ॥ न० ॥ ते मरीने एकण रा
तें, जइ बेगो नारकी पांतें रे ॥ न० ॥ २० ॥ कुशील
नी करणी खोटी, करतो फरे नानी महोटी रे ॥ न०
॥ कुशीलनुं तप जंप फोक, वध बंधन लहे फल रोक
रे ॥ न० ॥ २१ ॥ स्वदारा दिल नवि आवे, कुशीलियो
उखर खावे रे ॥ न० ॥ ए तो जेहने जे पडी हेवा, तेह
नी जाए टेव मरेवा रे ॥ न० ॥ २२ ॥ ते माटे तुमें मही
नाथ, ठंमो परस्त्रीनो साथ रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं नाम
धराशो, लोकोमें हांसुं कराशो रे ॥ न० ॥ २३ ॥ दिल

साबुत राखो राजा, खत्रीवटनी राखो माजा रे ॥ न०
 ॥ ए तो तुमें ठो प्रचुने वाला, इण वातें मत थाउ
 काला रे ॥ न० ॥ १४ ॥ ए तो वसंतसिरी जे बा
 जा, तुमें न करो एहशुं चाला रे ॥ न० ॥ जाये जन
 स ते जशने कमातां, पण वार न लागे जश जातां
 रे ॥ न० ॥ १५ ॥ ए तो परदेशी थई बूटे, पण मही
 मां तुम जग खूटे रे ॥ न० ॥ इम मंत्री ते परचावे, प
 ण नृपने दिल कांइ नावे रे ॥ न० ॥ १६ ॥ मंत्रीयें जे
 कही वातो, ते सांजली नृप दुउ तातो रे ॥ न० ॥ तव
 मंत्री थयो खिसियाणो, साहामुं नृप रोषें जराणो रे ॥
 ॥ न० ॥ १७ ॥ हवे सुणजो जे नृप बोले, मंत्री आगल
 पोथुं खोले रे ॥ न० ॥ ए तो बीजा उद्वासनी ढाल,
 कही चोथा लब्धें रसाल रे ॥ न० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी हिंग ॥
 नृतनराड ते नृप थयो, जाणे लागु विंग ॥ १ ॥ हित
 शीखामण देवतां, नृपने कठी जाल ॥ आगें थहि
 ठंतेडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगें वा
 नरने वली, विठ्ठीयें चरको कीध ॥ आगें केशरीने वली,
 श्वाननुं बिरुद ते दीध ॥ ३ ॥ तिम नृप मंत्री उपरें,

कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवशुं, बो
 ल्यो चक्रुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं ज्ञाणतो, तुज
 ने चातुर कोक ॥ बे दाणा तुजमें नही, जे बोले
 ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुशीलिया, करणी
 हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पठें, स्वर्गे पढोता केह
 ॥ ६ ॥ ते सांजल तुजने कहुं, शास्त्र तणे अनुसार ॥
 व्रत नांगी ते मुनिवरा, पाय्या जवनो पार ॥ ७ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ जीणा मारुजीरी करहलडी ॥ ए देशी ॥ जूनेता
 कहे सचिवने, सांजल तुं एकंगो थइने कान उघाडी हो
 राज ॥ चोविश वर्ष घरे रही, मुनिवर आईकुमारें व्र
 तने लाज लगाडी हो राज ॥ १ ॥ ते गयो ज्योति आगा
 रमें, सिद्ध वधूना संगमें जइ सुख नोगवे पूरां हो
 राज ॥ साख जली तस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंम
 में अद्भुत जो तुं सनूरा हो राज ॥ २ ॥ श्रेणिक
 रायनो कुंवरुं, नामें नंदिखेण जे बलियो थइ व्रत ली
 नो हो राज ॥ तेणें पण व्रत नांजाने, गणिकाशुं घर
 मांनि रह्यो रंग जीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस
 सुख नोगवी, अजरामर पद लहियो करणी सहु ज
 ग जाणें हो राज ॥ माहानिशीय जे सूत्रमां, साख

नली जाणजे मंत्री लिखित प्रमाणें हो राज ॥ ४ ॥
 पापी चलाती पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणें कीधी महोटी
 कामें व्याप्पो हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आठमे,
 साख नली तुं जाणजे श्री योगशास्त्रें उपायो हो राज
 ५ ॥ आषाढनूति अणगार जे, नाटकणीने साथें
 बार वरस घर मांज्यो हो राज ॥ साख नली तस
 चरित्रमां, ते गयो शिवगति मांहे जाणी जे व्रत खंज्यो
 हों राज ॥ ६ ॥ चंङ्गेश्वर विद्याधर, ते निज नगि
 नि साथें निशिदिन रंगें रमतो हो राज ॥ ते लह्यो
 मुगतिवधू प्रिया, श्रीसेत्रुंजो माहातम साखी ठे मन
 गमतो हो राज ॥ ७ ॥ चक्री नरत नरेसर, गंगा दे
 वीने घेर रहियो थड सुखवासी हो राज ॥ सहस्र व
 रस सुख नोगवी, जुवन आरीसामांहे पाम्या ज्ञान
 उद्धासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टापद गिरि उपरें, रुषन
 जिणेसर साथें मुगति पुरीयें पुहता हो राज ॥
 तेनी साख तुं जाणजे, जंबुदीवपन्नतिमांहे अक्षर
 सुहता हो राज ॥ ९ ॥ नामें एलाची जाणीयें,
 नाटकणीनी लारें नटक्यो प्रेम बिलुखो हो राज
 ॥ केवल रयण ते पौमिने, मुगति पुरीमें जडने बेगो नि
 र्जय सूधो हो राज ॥ १० ॥ गज सुकुमालिका साधवी,

(६५)

शशक मसक दो जाइ तेहनी बहेन कहाणी हो राज ॥
 चिरकाल सुधी ते साधवी, सारथवाहनी घरणी
 थइ रही उपगार जाणी हो राज ॥ ११ ॥ ते
 थइ आर्या कुशीलणी, अणसण खंमी पहोती तेहिज्जः
 नव सुरलोकें हो राज ॥ तेहना परगट अह्वरा, श्री
 उपदेशनी मामामांहे वांची जोकें हो राज ॥ १२ ॥
 ब्रह्मा ध्यानैं चूकव्या, नाटारंन देखाडी रंनार्यें जो
 लब्धो. ब्रह्मा हो राज ॥ चिहुंदिशि चउमुख नी
 पनां, गर्दननुं मुख प्रगटनुं पांचमुं उपजे शर्मा हो
 राज ॥ १३ ॥ मारग जातां ब्रह्मार्यें, वनमें दीठी रीं
 ठडी मीठी मनमें लागी हो राज ॥ तेहनुं अनिलप
 सेवतां, रींठरुषि तें रींठडी पेटें उपनो सागी हो राज
 ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेसर करि मानें
 डुनियां एकल ध्यानैं हो राज ॥ तारक जग परमेसरु,
 निज पुत्रीनुं विलसें रंगें थइ एक तानें हो राज ॥ १५ ॥
 उमया नारी उवेखीनैं, जटामध्यें ठनी राखी ईश्वरें
 गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंभुने, वरण अठार
 जे मानवि रुडने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पुत्री .
 उखा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गव
 राणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी, लिंग

पुराणें चावो अकर ठे सपराणो हो राज ॥ १७ ॥ विष्णु
 पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल यइने लोकमांहे पूजा
 णो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते ठंमी मही
 गारी राधा साथें गवाणो हो राज ॥ १८ ॥ कुंता पांछु
 नृप तणी, लघुवयमें कुमारी सुरज देवे विलसी हो रा
 ज ॥ करण थयो ते उदरनो, जग चक्रु ते देवनी सहु जग
 माने उलसी हो राज ॥ १९ ॥ ए अवदात जे में कह्या,
 करंमां दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बल
 वंतमांहे शिरामणि, ते सरिखा पण बलिया गलिया
 कर्में नडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण
 आशरो, तिन जुवनमें सर्वने कर्में मुक्या चूणी हो
 राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवनें करी धाई
 मोकरी लेवा पूणी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुग
 ति जे पामवी, ते करणी ठे सघली नवितव्यताने हाथें
 हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, गुनागुनना बंध
 जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र त
 पस्यानो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हुं
 तो हो राज ॥ ते मूरीने थयो सूअडो, किहां गइ कर
 णी तेहनी तिरियंचो गतिमां पहतो हो राज ॥ २३ ॥
 ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहात्म मांहे

ठे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नही,
 नवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी • जांखी हो.
 राज ॥ १४ ॥ नवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव
 करे पण लेखे कदिय न आवे हो राज ॥ माली स्त्री-
 चे सो गणां, पण तेहनी कतावलें कृतु विना फल नवि
 पावे हो राज ॥ १५ ॥ तिम आपणी कतावलें, समकि
 त रयण विना किम नवस्थिति पाकी जाय हो
 राज ॥ १६ ॥ नूख्यो पण गुं करे, लाख उतावल करी
 यें बे करथी न जमाय हो राज ॥ १७ ॥ तिम इव्य
 क्रियाथी न कवडे, जावक्रिया जब न्यंतर प्रगटे तव
 शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि ल
 ह्युं, तिहां सूधी ते जीवने चिहुं गति कर्म जमावे हो
 राज ॥ १८ ॥ इव्यथी उधा चरवला, एकठा कीधा जी
 वें मेरु जेवडा • ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी
 नही, जाव विना जें किरिया कीधी दंन्नी ज्युं बगला
 हो राज ॥ १९ ॥ ते माटे मंत्री तुमें, शील कुशील
 नुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे
 कारण जब मिले, नवितव्यताने जोगें गुनागुन तव
 नणजो हो राज ॥ २० ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मद
 नवेगें दीधो चोखो हाथमें लांडु हो राज ॥ बली

(६७)

कहे सांजल मंत्रवी, तुऊ करणी विगतावी ताहरा का
न उघाडुं 'हो राज ॥ ३० ॥ लब्धें बीजा उद्धास
भां, मंत्रीने समजाव्यो जलि परें पांचमी ढालें हो
राज ॥ हवे सुणजो नवियण तुमें, आगल शी शी वा
त निपजे ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पा
पड खाई पदमशी, तुं थयो महोटो पवित्र ॥ १ ॥
पट्टा खाउं अम तणा, व्यो वलि लोकां लांच ॥ ले
वा देवा मापलां, राखो कूडां साच ॥ २ ॥ कूड कप
ट हृदयें धरी, बोलो मीठा बोल ॥ धोले दिन धूतो
घणुं, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फरो
पारकुं ताको बिड ॥ साची जूठी करो घणी, काढे
जूना हुड ॥ ४ ॥ अम उपरालें लोकने, व्यो लेखणनो
मार ॥ बेरें वींटा परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥
अमें उसरीयें पापशी, तुमें न उसरो कोय ॥ मरण
बीक राखो नही, ठाती दृषद जुं होय ॥ ६ ॥ पर
उपदेश देवा घणुं, फाहापण राखो ठीक ॥ आप न ज
यें सासरे, दिये पायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण
जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांध

गांवडी, हींमो शीश धरेय ॥ ७ ॥ चंदन नार गर्दन
 शिरें, जाणो लोकें दीध ॥ नारोद्वाह गर्दन थयो, प
 ण चंदन स्वाद न लीध ॥ ८ ॥ तिम मंत्री तुं जाण
 जे, तुज्जमां एह सजाव ॥ मुज्ज उपगार जाण्यो नहीं,
 गर्दन सम थयो ठाव ॥ ९ ॥ एह वचन महिपति
 तणां, सांजलि बमक्यो चित्त ॥ मनमां बीनो मंत्र
 बी, राजा केहना मित्त ॥ १० ॥ हित शीखामण दे
 यतां; साहामुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दजने हणी, गाम
 गुं राखे रोष ॥ ११ ॥ महिपतिनुं मन उलखी, बो
 ल्यो मंत्री तिवार ॥ हा स्वामी तुमें जे कही, मानुं ते
 निरधार ॥ १२ ॥ राजा के परमेसरु, जे बोले ते स
 त्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोमें ठे दैवत्त ॥ १३ ॥
 मुखयी साकर घालीने, नृपने कखो प्रसन्न ॥ महिपति
 यें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन्न ॥ १४ ॥ सिरपा
 व देइ वोलावियो, मंत्रीने निज ठाय ॥ राज काज
 गुंन चालवे, मदनवेग तिहां राय ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ काबिलरो पाणी लागणो, काबिल मत चाले ॥
 अथवा, धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन
 बेगो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त

सांजरी, तस थयो उदवेग ॥ १ ॥ धिग धिग काम विट
 बना, मोहें जोबन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी दुर्जय
 जीततां, घणुं दोहेलुं लागे ॥ २ ॥ धि० ॥ तिण अवसरें
 एक मेहेतलो, कालसेन ते नामें ॥ नृपने नमि अति
 ढूकडो, बेगो अनिराम ॥ ३ ॥ धि० ॥ मननो मेलो
 मायावियो, मद नखो कंठ सूधी ॥ पण ते सर्प तणी
 परें, माहा दुष्ट कुबुद्धि ॥ ४ ॥ धि० ॥ नगद आसा
 मी ठे घणुं, जाणे जठरनो मेल ॥ चाडी चुंगली क
 री घणी, काढे लोकनां तेल ॥ ५ ॥ धि० ॥ एहवो कु
 बुद्धि मंत्रीसरु, पेगो नृपने कानें ॥ हरिबल केरी वा
 रता, मांढी एक तानें ॥ ६ ॥ धि० ॥ हरिबल कीर्ति
 विस्तरी, नगरी जन मांहे ॥ ते सांजली मन मेंतलो,
 रीशें बळे तांहे ॥ ७ ॥ धि० ॥ अवसर लेइ कालसेन
 ते, नृपकान जंजेखो ॥ दुर्जन मुख बाणें करी, नृपनुं
 दिल फेखो ॥ ८ ॥ धि० ॥ लटपट नृप आगें करे, पा
 पी परपंच ॥ हरिबलने ढडापवा, मांढयो सूधो सं
 च ॥ ९ ॥ धि० ॥ स्वामी गुं जाणो अगो, हरिबलनी
 वातो ॥ नगरजन सहु वश करी, करशे तुम घातो ॥
 ॥ १० ॥ धि० ॥ बेत्रीश राजकुली करे, हरिबलनी
 सेवा ॥ कूडो रचे ठे एक मली, तुमचो राज लेवा ॥

॥ ११ ॥ धि० ॥ चेतबुं होय तो चेतजो, घाट घडी
 यो ठे ऊणो ॥ पठें कहेशो जे कह्युं नही, सुऊने ते
 कूणें ॥ १२ ॥ धि० ॥ परदेशी अणजाणने, तुमों
 दोत बंधावी ॥ ते किम होवे आपणा, सुणो नूपति
 ठावी ॥ १३ ॥ धि० ॥ वसंतसिरी अप्सर समी, हरि
 बलनी ठे लाडी ॥ निज हाथें प्रभुयें घडी, कामिज
 ननी ए वाडी ॥ १४ ॥ धि० ॥ ए स्त्री जेणें दीठी न
 हीं, तस जनम अलेखे ॥ बे हाथे प्रभु पूजीया, ते
 स्त्रीने ए देखे ॥ १५ ॥ धि० ॥ धन्य दिवस धन्य ते
 घडी, धन्य वेला तेह ॥ एहवी स्त्री जेने घरे, तस
 पुण्य विशेष ॥ १६ ॥ धि० ॥ इणि परें हरिबलनी
 करी, चुगली बल ताकी ॥ मेहेतले डष्ट कुबुद्धियें,
 कांइ बाकी न राखी ॥ १७ ॥ धि० ॥ महिपतियें तें
 सांजली, चमक्यो चितमांहे ॥ पगथी मांमी माथा
 लगे, नृप परजव्यो दाहें ॥ १८ ॥ धि० ॥ आगें वेरी
 कर चढयो, वली करथकी तूटो ॥ आगें जुहारीने
 वली, मव्यो साथी जूवो ॥ १९ ॥ धि० ॥ आगें सर्प
 ठंढेडिने, कखो पुंढथी बांमो ॥ आगें अग्नि जालमां
 सिंच्यो घृत मांमो ॥ २० ॥ धि० ॥ तिम नृप हरिबल
 ऊपरें, घणुं रोषें जराणो ॥ रे मंत्री हरिबल हणी

तस स्त्री घर आणो ॥ ११ ॥ धि० ॥ तव मंत्री का
 लसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिबलने ह
 णे, जनमां जाय पाणी ॥ १२ ॥ धि० ॥ पण एक
 स्वामी उपाय ठे, तुम बुद्धि बतावुं ॥ हरिबलने तुमें
 मोकलो, लंका गढ ठावुं ॥ १३ ॥ धि० ॥ जलनिधिमें
 जातां थकां, वहेरो एह बोलें ॥ तव नारी तुम मं
 दिरें, आवरो रंगरोलें ॥ १४ ॥ धि० ॥ ठाकर चाक
 रनी इहां, साची खबर ते पडरो ॥ तुम आणा ते
 शिर धरी, लंका गढ चडरो ॥ १५ ॥ धि० ॥ ते माटे
 तेडी तुमें, हरिबलने पूढो ॥ एम कही घरे मेंहेतलो,
 गयो घाली बूढो ॥ १६ ॥ धि० ॥ लब्धें बीजा उद्धा
 सनी, कही ठछी ढाल ॥ आगल जवि तुमें सांजलो,
 मीठी वात रसाल ॥ १७ ॥ धि० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मतो करि दोय ॥
 महिपति पढोतो, महेजमां मंत्री गयो घर सोय ॥ १ ॥
 बीजे दिन रवि ऊगियो, प्रगट्यो राग विजास ॥ शकुं
 नियों बांह पसारीयां, कैरव कीध विकास ॥ २ ॥ वा
 ठरुआं वलगां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा बेसे जा
 मिनी, जेहने ठे घर धेण ॥ ३ ॥ देखल सघले वा

जियां, जालरना ऊणकार ॥ तास शबद सुणतां थकां,
 रजनी नावि तिवार ॥४॥ सुद्धन बोधी जीवडा, मांमे
 निज खटकर्म ॥ साधूजन मुख मोमती, बांधी हे ज्जिं
 नधर्म ॥५॥ मंगल वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर नि-
 शाण ॥ ए करणी परजातनी, जब ऊगे गुन जाण ॥६॥
 मदनवेग नृप तिण समे, परखद मेली एकत्र ॥ बेठो
 सिंहासन हसी, माथे धरावी ठत्र ॥ ७ ॥ खटत्रीस
 राजकुली मली, वडवडा सोहे सामंत ॥ शेठ सेना
 पति मंत्रवी, परखद मेलि अत्यंत ॥ ८ ॥ हरिबल
 पण मंत्रीसरु, बेठो नृपनी पास ॥ बिरुदावलि नृप
 जन तणी, कविजन बोले उल्लास ॥ ९ ॥ रंग विनो
 दनी वारता, परखदमें करे सार ॥ तिण अवसर नृप
 बोलियो, मदनवेग तिणि वार ॥ १० ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ जुंमखडानी देशी ॥ सजा समद्धें नृप कहे रे,
 सांजलजो सामंत ॥ सनेहा सांजलो ॥ माहरे काम
 अठे घणुं रे, अथ्यवसाय अत्यंत ॥स०॥१॥ वैशाख
 शुदि पांचम दिनें रे, लीधुं ठे लग्न विशेष ॥स०॥ अंग
 जने परणाववा रे, मांमचो विवाह विशेष ॥स०॥२॥
 उम्मर मध्यें तुम तणुं रे, काम पडधुं ठे आज ॥स०॥

॥ स्वामी नक्ता जे हुवो रे, ते सारो मुऊ काज ॥
 स० ॥ ३ ॥ लंका गढ जावुं अठे रे, कहो ते जाशे
 कोण ॥ स० ॥ बीडुं ठवो ए माहरुं रे, जे खाता होय लूण
 ॥ स० ॥ ४ ॥ लंकापतिने नोतरी रे, तेडी आवे
 जेह ॥ स० ॥ माहरी रीजें पामशे रे, लाख वधामणी
 तेह ॥ स० ॥ ५ ॥ राय बिजीषण तेहखुं रे, माहरे ठे
 बहु नेह ॥ स० ॥ शीघ्र जई लगन दिनें रे, तेडी
 आवो गेह ॥ स० ॥ ६ ॥ जो ममता माहरी करो रे,
 तो मत करजो ढील ॥ स० ॥ शीघ्र अइ बीडुं ग्रही
 रे, पंथें वहो मेली ढील ॥ स० ॥ ७ ॥ इणि परें महिपति
 यें कहुं रे, सजा समद्व वचन ॥ स० ॥ पण बीडुं
 ग्रहवा जणी रे, कोइ न दीये तन्न ॥ स० ॥ ८ ॥ स
 र्ग मटा मटिनी परें रे, मौन करी रह्या सर्व ॥ स०
 मरण तणी बीकें करी रे, मूक्यो सघले गर्व ॥ स०
 ॥ ९ ॥ अधोदृष्टि करी रही रे, सघली परखदा सो
 य ॥ स० ॥ उंची दृष्टें नबि जुवे रे, लङ्काणा सहु
 कोय ॥ स० ॥ १० ॥ तव कर जोडी मंत्री कहे रे,
 कालसेन ते डुष्ट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता
 रे, सांजली दुआ सौष्ट ॥ स० ॥ ११ ॥ पण विषम
 पंथ आकरो रे, जलधिमें केम जवाय ॥ स० ॥ पण

वटें सिद्ध न संपजे रे, जुजार्थी न तराय ॥ स० ॥
 १२ ॥ गज पाखर जंबुकशिरें रे, नाखी, तुमें राजान
 ॥ स० ॥ ते किम तिणथी कंधरा रे, उंची थावा निदानं
 ॥ स० ॥ १३ ॥ मतकोटनी कटि उपरें रे, मूकी-
 गोलेनी गुण ॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे
 करे गजा विहूण ॥ स० ॥ १४ ॥ तिम स्वामी लंका
 गढें रे, शक्ति विना कुण जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्र-
 मी जे होवे रे, ते जावा अंगमाय ॥ स० ॥ १५ ॥
 के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय ॥ स० ॥
 के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥ स०
 ॥ १६ ॥ बीजानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ताग
 ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांजव्यो रे, जलधियें बां
 धी पाग ॥ स० ॥ १७ ॥ केवली ह्खिलने सुण्यो रे;
 जे बेठो तुम पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गढें रे,
 बीडुं ठवीने उध्वास ॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए
 जाणियें रे, एहमां ठे जगदीश ॥ स० ॥ काज तुमा
 रुं सारज्ञो रे, पूरज्ञो मननी जगीश ॥ स० ॥ १९ ॥
 इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति कीध ॥
 ॥ स० ॥ सुजट शिरोमणि इण सिमे रे, दीसे ह्खिल
 सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेला रे,

हरिबलने कहे राय ॥ स० ॥ शीघ्र थई बीडुं ग्रहो
 रे, जिम मुज वंछित आय ॥ स० ॥ ११ ॥ राय बि
 नीषणने जई रे, तेडि आवजो आंहि ॥ स० ॥ मान
 छुं मुजरो तुम तणो रे, जीवित सूधी उज्जाहि ॥ स० ॥
 ॥ १२ ॥ तव हरिबल श्रवणें सुणी रे, मनछुं विमा
 से आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो न र
 हे मुज लाज ॥ स० ॥ १३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें
 रे, लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें बेखीयें
 रे, लाजें वाधे मान ॥ स० ॥ १४ ॥ लाजें गढ कोट
 लीजियें रे, लाजें राखीयें सत्त ॥ स० ॥ लाज वधी
 मुज चिहुं जगें रे, किम कहुं ना हवे उत्त ॥ स० ॥
 ॥ १५ ॥ इणपरें मनमां सोचीने रे, बोख्यो हरिबल
 ताम ॥ स० ॥ लावुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं खरो
 मुज स्वाम ॥ स० ॥ १६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे,
 तो मुज देजो शाबास ॥ स० ॥ एम कही बीडुं ग्रही
 रे, हरिबल आव्यो आवास ॥ स० ॥ १७ ॥ थइ नि
 जपति मुख देखिने रे, वसंतसिरी उजमाल ॥ स० ॥
 बीजा उज्जासनी ए कही रे, लब्धियें सातमी ढाल १७
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिबल कहे निज नारीने, सांजल प्यारी मुज ॥

जावुं ठे लंका नणी, मागुं आणा तुऊ ॥ १ ॥ थिर
 चित्त करी रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ शील सुरं
 गुं पालीने, करजो निर्मल गात्र ॥ २ ॥ धरजो ध्यान नव
 पद तणुं, चउद पूरवनुं सार ॥ समखा जिम सांनिधः
 करे, आपे शिवसुखकार ॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक
 मनै, जेणे वधारी शर्म ॥ कीडीथी कुंजर कखा, उल
 खावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम वचन ते सांजली, व
 संतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पडे, ते कहो
 जाणुं जेम ॥ ५ ॥ तव मांमी हकिगत कही, प्यारी आ
 गल तेह ॥ तिण कारण जावुं पडे, सांजल तुं ससनेह
 ॥ ६ ॥ पियुनुं गमन तेसांजली, कुमरी अइ दिलगीरा ॥ जाणे
 जाइव मेह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥ ७ ॥ कालजेकौ घाली
 वहो, प्रीतम तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहें तुम
 विना, बले सुरंगी देह ॥ ८ ॥ सघलुं दुःख खमीयें प्रभु,
 पण विरहो न खमाय ॥ विरहानलनी बाफ जे, पियुं
 विण केम उलाय ॥ ९ ॥ तेमाटे प्रीतम तुमें, मत
 जाउ परदेश ॥ मन किम वहरो मूकतां, मुऊने बाले
 वेश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियुं तुमें, महोटुं लाव्या
 विंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, जिहां गयां उंटनां शिंग

॥ १ ॥ जो प्रितम चालो तुमें, तो मुऊ तेडो संग ॥ टेह
ल करेछुं तुम तणी, जोछुं लंका रंग ॥ १ ॥

॥ ढाल आठमी ॥

॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव प्रीतम कहे
सांजल प्यारी, मुऊ तुं ठे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी स
सनेही ॥ तुऊ मुख देखि दुं सुख पाउं, तुऊ निशि दि
न चितमें ध्याउं रे ॥ १ ॥ सुं० ॥ प्राणथकी ठे तुं
मुऊ वाहाली, जिम चंडने रोहणी वाहाली रे ॥ सुं० ॥
तुं मुऊ चित्रावेल समानी, तुं मुऊ बुद्धि निधानी रे
॥ २ ॥ सुं० ॥ जब थइ ते प्रचुनी महेरबानी, प्री
तडी तुऊछुं ठानी रे ॥ सुं० ॥ लेख लिखित थयो
तुऊछुं मेलो, थयो संबंध पुण्ये जेलो रे ॥ ३ ॥ सुं० ॥
अहोनिश लालच रहे तुऊ केरी, घणुं घणुं करि कहुं
छुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुऊने मुकतां मन नथी कहेतो,
पंथे चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ ४ ॥ सुं० ॥ पण
छुं करीये नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे
॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्युं नवि करिये, तो नृपनो
जस किम वरिये रे ॥ ५ ॥ सुं० ॥ जेहना घरनो को
लियो खावो, तस घरनो धोलो बंधावो रे ॥ सुं० ॥
ए संसारमें रीति ठे सघले, काम कीधे जस वधे स

बज्जे रे ॥ ६ ॥ सुं० ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरी, मुने
 आणा दे हवे तोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रगतें जई आ
 बिश वहेलो, नृपनुं लगन ते पहेलो रे ॥ ७ ॥ सुं० ॥
 तव रमणी कहे सांजल प्यारा, तुम हेज लताना
 क्यारा रे ॥ प्रीतम ससनेही ॥ मुऊ वखतें तुमे सुरप
 ति सरिखा, मळ्या ठो पुण्यें आकर्ष्या रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥
 जगती जोतां प्रभु तुमें जडिया, सुरमणि सम मुऊ
 कर चडिया रे ॥ प्री० ॥ सुकृतवद्वि फली सुखदा
 यी, थइ तुमथी साची सगाई रे ॥ ९ ॥ प्री० ॥ में तु
 मचुं जे पालव बांध्यो, जीवित सुधी नेहलो सांध्यो
 रे ॥ प्री० ॥ हवे मुऊ प्रेम पयोधिमें नाखी, केम जा
 उ ठेहलो दाखी रे ॥ १० ॥ प्री० ॥ वसी मुऊ हृदयें
 थया परदेशी, तन मनना सोदागर वेशी रे ॥ प्री० ॥
 नाखी मुऊने प्रेमनी फांसी, बेठा चालवा मूकी निरा
 शी रे ॥ ११ ॥ प्री० ॥ मुऊ सरिखी नारी कां मूको,
 नृप मंत्रीने वयणें कां चूको रे ॥ प्री० ॥ एहवो कुण
 मूरख ठे जांजी, जे पय मूकी पीये कांजी रे ॥ १२ ॥
 प्री० ॥ ते उखाणो प्रभु तुमें मेव्यो, पढे बीजानो अ
 विहेलो रे ॥ प्री० ॥ में तुमने कहि आगें चितारो,
 नृप जमतां वात संजारो रे ॥ १३ ॥ प्री० ॥ ते फल

उग्यां तुमारां वाव्यां, निज करनां घड्यां दहए जाव्यां
 रे ॥ प्री० ॥ ते कारण लंकायें जावुं, नृपें कीधुं चूक
 ते चावुं रे ॥ १४ ॥ प्री० ॥ दुर्जन नृप मंत्री पड्यो
 केडें, पण कोइक दिन ते वेडे रे ॥ प्री० ॥ सांजलो
 प्रीतिम हुं तुम नांखुं, नीतिशास्त्रमें जे कह्युं दाखुं रे ॥
 १५ ॥ प्री० ॥ एतां सूनां कदीय न मूके, जे माह्या
 ते नवि चूकें रे ॥ प्री० ॥ स्त्री धन पुत्र जे राज सुहर्म,
 सूनां मूक्यां ए न रहे शर्म रे ॥ १६ ॥ प्री० ॥ ते मा
 टे तुमें सांजलो स्वामी, तुम वीनवुं अंतरजामी रे
 ॥ प्री० ॥ बहुश्रुतने करी वचनें वहीजें, दुर्जनथी
 दूर रहाजें रे ॥ १७ ॥ प्री० ॥ निज नारीने साथें
 लीजें, पीयु प्रेम सुधारस पीजें रे ॥ प्री० ॥ कामिनी
 जाणे कंथ विहूणी, जेम दीसे नांगी दूणी रे ॥ १८ ॥
 प्री० ॥ कंत विना नारी नवि शोने, पग पग लहे दो
 ष ते ठोने रे ॥ प्री० ॥ कंथ विना स्त्री दीन समान,
 जिहां जाय त्यां न लहे मान रे ॥ १९ ॥ प्री० ॥
 पियु विण स्त्रीने मंदिर मांहे, घडी जंप वले नहिं
 क्यांहे रे ॥ प्री० ॥ पियु विण पहेरवा जे शणगारा,
 ते तो लागे जाणे अंगारा रे ॥ २० ॥ प्री० ॥ पियु
 डा विण ते सुखनी सैज, जाणे लागे कौअच रेज

रे ॥ प्री० ॥ केइ लख लाख मंदिर जन जरिया, केइ
 कोडि सखि परवरीया रे ॥ २१ ॥ प्री० ॥ पण ते प्रि
 य विण न लागे नीका, जिम घृत विण नोजन पी
 कां रे ॥ प्री० ॥ धन्य ते नारीनो अवतार, जस मं
 दिर रहे नरतार रे ॥ २२ ॥ प्री० ॥ शा अवगुण तु
 में मुऊमें दीठा, विण खुनें वहो थइ धीठा रे ॥ प्री० ॥
 तुमथी तिरियंच पंखी रूडां, दूरें न रहे स्त्रीथकी सूडा
 रे ॥ २३ ॥ प्री० ॥ चार पहोरनो रह्यो जो अंतर, तो
 फूरे खग निरंतर रे ॥ प्री० ॥ तो केम तुमें निसनेही
 थावो, निज स्त्री विण लंका जावो रे ॥ २४ ॥ प्री० ॥
 के शुं माहरो मोह उतारी, नौतन कोइ नारी संचारी
 रे ॥ प्री० ॥ के शुं लंका मसलुं काढी, जाउ परणवा
 दूजी लाडी रे ॥ २५ ॥ प्री० ॥ तुम चित्तनी पियु क
 ल नवि सूजे, ए तो केवली विण कुण बूजे रे ॥ प्री० ॥
 तो हवे तुमने वेगला न मूकुं, निज स्वामीनी सेवा न
 चूकुं रे ॥ २६ ॥ प्री० ॥ जो मुऊने साथें नवि तेडो,
 पण हुं किम मेलिश केडो रे ॥ प्री० ॥ कायानी ठाया
 पेरें वलगी, केम रही शकुं तुमथी अलगी रे ॥ २७
 ॥ प्री० ॥ एणी पेरें नारी प्रेमं बिलुद्धी, करी विनति

(८१)

पियुने सूधी रे ॥ प्री० ॥ बीजा उल्लासनी आठमी ढा
लें, कही लब्धि रंग रसालें रे ॥ प्री० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल कहे नारीने, सांजल तुं गुण गेह ॥
प्राणजीवन मुज तुं अढे, हुं केम देश ठेह ॥ १ ॥ पाल
व बांधी ताहरो, डुर्मन केम अवाय ॥ राखुं जो वहे
रो तुज्यकी, तो मुज प्रभु डुहवाय ॥ २ ॥ ते किम
हुं करुं सुंदरी, तुज्यी दिल बदलाय ॥ देखी पेखी म
हिका, जीवति केम गलाय ॥ ३ ॥ पण कोय दैवना
योग्यी, पूरव नव मेलाप ॥ अणचिंतित जो स्त्री
मले, तो तस करवुं माफ ॥ ४ ॥ तुज्यी उपर बट थइ,
नवि जागुं तुज आण ॥ ठेह न दाखुं तुज नणी, उगे
पह्निम जाण ॥ ५ ॥ साथें तुजने तेडतां, नथी पूरव तुं
गुळ ॥ स्त्री ते पग बंधण अढे, पंथें हुं कहुं तुळ ॥ ६ ॥
मत जाणे तुं मन्नमें, प्रीतम देशे ठेह ॥ एकज मास
ने अंतरे, आविश हुं ससनेह ॥ ७ ॥ ते माटे थिर चित्त
करी, रहेजो थइ सावधान ॥ दान सुपात्रें पोखजो, धर
जो अरिहंत ध्यान ॥ ८ ॥ शीख नलामण शिण पेरें,
वसंतसिरीने दीध ॥ लंका गढ जावा नणी, हरिबल
मुहूरत लीध ॥ ९ ॥ चैत्र शुदि एकम दिनें, शुज

कारी नृगुवार ॥ रमणीने राजी करी, हरिबल चा
 ले तिवार ॥ १० ॥ तव कुमरी कहे कंझने, वरसति
 आंसु धार ॥ पियुजी पूरण प्रीतडी, मत मूर्खों
 विसार ॥ ११ ॥ मंदिर एकलां नवि गमे, सूतां सूनी
 सेज ॥ अवधी उपर आवशो, तो जाणसुं तुम हेज ॥
 १२ ॥ प्राणवध्नन नहि वीसरो, अध घडी आत
 राम ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, करीने रुडां काम
 १३ ॥ प्रीतमजी तुमें सिद्ध करो, वड ज्युं विस्तर
 जोह ॥ उंबर केरां वृद्ध ज्युं, थडथी तुमें फलजोह ॥
 १४ ॥ इम आशिष ते देइने, बोलाव्यो जरतार ॥ हरि
 बल पण शिख मागवा, पढोतो नृप दरबार ॥ १५ ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ राम सीताने धीज करावे रे ॥ ए देशी ॥ नृपने
 जइ प्रणिपत कीधी रे, सहु साथनी आगना लीधी रे
 ॥ हवे हरिबल लंकायें चाले रे, नृप जन बहु बोलावा
 हाले रे ॥ १ ॥ शकुने पण बंदिज दीधी रे, लीधी वाट लं
 कानी सीधी रे ॥ घणी नूयें बोलावी वलिया रे, नृप
 मंत्री दो हर्षे नलिया रे ॥ २ ॥ पय मंजारी देखी ज्युं
 हरखे रे, तिम महीपति मनमें वरशे रे ॥ जाणे नृ
 प चिंतव्युं आशे रे, मुऊ वसंतसिरी घेर आशे रे ॥

૩ ॥ જે કહેજો તે વિધ કરશું રે, મનવંઠિત સુખ તે
 વરશું રે ॥ એમ ચિંતવી નૃપ ઘરે આવે રે, નિજ મન
 શું બુદ્ધિ ડાલે રે ॥ ૪ ॥ મન ગમતા મીઠા મેવા રે,
 જેહ સ્વાતા લાગે હેવા રે ॥ ડાઘ રાયણ આંબા કેજાં
 રે, દીઠાં દાઢ ગલે તિણ વેલા રે ॥ ૫ ॥ બેઝ બદામ નિ
 મજાં પિસ્તાં રે, મુખ દેતાં ન લાગે સસ્તાં રે ॥ ૬ ॥ ક
 મિશરીના પકવાન્નરે, બેઠા જોગ લિયે જગવાન. રે
 દૂધ પેંડાને ઘૂત પૂર રે, ચઢે સ્વાતાં દાંતે શૂર રે ॥ ૭ ॥
 સિંહ કેસરીયા ને જલેબી રે, સ્વાતાં નૂર વધે તે સતેબી રે ॥
 એમ સુખડી મેલી તાજી રે, જિમ વસંતસિરી હોવે રા
 જી રે ॥ ૮ ॥ ચુવા ચંદન અરગજા તાજાં રે, મુખમૂ
 લાં અંતર જાજાં રે ॥ ૯ ॥ કેડ સુગંધ ડવ્ય અણાયાં રે, શ
 તપાક તે તેલ બણાયાં રે ॥ ૧૦ ॥ તિલ માત્ર જો વ
 સ્ત્ર લગાવે રે, ચિહું દિશિ પરિમલ પસરાવે રે ॥
 જાણે સુગંધપુરી વસાઈ રે, જોગી જનને સુખ દાઈ રે
 ॥ ૧૧ ॥ એણી પેરેં સુગંધી ચૂવા રે, સીંસા નરિયા
 નવ નવા જૂવા રે ॥ નૃપ જાણે કુમરી રીજે રે, મુજ
 કારજ શીઘ્ર તે સીજે રે ॥ ૧૨ ॥ બહુ નારે ચીર અ
 ણાવે રે, ઝરતારી શંખુ મગાવે રે ॥ કસબી મશરુ એક

री रे, पंचरंगी मसजर जारी रे ॥ १३ ॥ हेम रयण
 घाट सुघाट रे, मेले आनूपणना आट रे ॥ रम
 दोना जे गुंगारा रे, नृप मेले ते श्रीकारा रे ॥ १३ ॥
 णी परें सामग्री मेली रे, नरी ठावमें सघली जेली
 ॥ ते उपर उठाड ढांकी रे, करी मुझा को न जाय
 गंखी रे ॥ १४ ॥ हवे दासी जे चतुरा माही रे,
 गमी जनने मूके जे वाही रे ॥ तेहने तैडी नृप जां
 रे, निज चित्तनी वारता दाखे रे ॥ १५ ॥ तुमें
 जावो हरिबल गेहें रे, जिहां वसंतसिरी ठे नेहें रे ॥
 जइने तुमें ठाव ए संपो रे, कहेजो नृपें मूकी ए चूपो
 रे ॥ १६ ॥ सुललित वचनें करी कहेजो रे, तेहनुं म
 न वश करी लेजो रे ॥ घणी शी रे जलामण दीजें रे,
 अस अमृतफलरस लीजें रे ॥ १७ ॥ तै वात वधाम
 णी वहेली रे, लेइ आवजो दी ठतां पहेली रे ॥ एम
 गिख जलामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी
 ॥ १८ ॥ दासी पण ठाव ने लेई रे, पढोती हरिब
 ल घेरें बेई रे ॥ जिहां वेठी हरिबल नारी रे, मूकी ठा
 व ते आगल सारी रे ॥ १९ ॥ कहे दासी मधुरी
 वाणी रे, नृप मूकी ए तुमने जाणी रे ॥ तुम उपर
 छे घणो नेह रे, घणुं गुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥

जिण दिनथी तुम घेर आब्या रे, तिण दिनथी ते
 दिल जाब्यां रे ॥ जलां नोजन जव तुमें प्रीस्यां
 तिण वेलाथी नृप दिल हींस्यां रे ॥ ११ ॥ देखी
 मची सुघडाइ रे, नृप चाहे तुमने सदाइ रे ॥ ए कट
 लच रहे तुम केरी रे, जिम लोजीने नाणा केरी रे
 १२ ॥ तुम विरहें करी नृप जूरे रे, राज काज ते
 क्प्यां दूरें रे ॥ जेम योगी प्रजुने ध्यावे रे, तेम नृ
 तुम नाम जपावे रे ॥ १३ ॥ इम राखे एकंगी तुम
 गुं रे, मन मेल करो तुमें नृपगुं रे ॥ सरिखा सरि
 खो मय्यो जोडो रे, नृपगुं तुमें तान म तोडो रे ॥
 ॥ १४ ॥ बाइ तुम मोहोटी पुण्याइ रे, नृपगुं थइ प्री
 त सगाइ रे ॥ ए वात विधातायें मेली रे, जाणे पय
 मां साकर जेली रे ॥ १५ ॥ तुमें जो कहो सारंगनय
 णी रे, नृप आवे तुम घरे रयणी रे ॥ इण वार्ते ल
 ज ठे तुमने रे, राजी करी बोलावो अमनें रे ॥ १६ ॥
 एम दासीनी सांजली वाणी रे, तव कुमरी रोषें जर
 णी रे ॥ जिम लागे विंढीनो चटको रे, तिम कुमरी
 ने लागे नटको रे ॥ १७ ॥ हवे सुणजो कुमरी व्या
 पे रें, शेर सुखडी दासीने आपे रे ॥ एतो बीजा उ
 द्दासनी ढाल रे, लवधें कंदी नवमी रसाल रे ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कोपें करी, दे दासीने मार ॥ निं
 दे तिम जीवित लगें, गडदा पाटु प्रहार ॥ १ ॥ ना
 ठी जीवित लेइने, चतुरा माही जेह ॥ नृप आगल
 आवी कहे, सघली मांमी तेह ॥ २ ॥ नासैंत नू
 नारे थइ, केत्ती कहुं माहाराज ॥ लहेणैथी देणे प
 डी, ए फल लखुं तुम काज ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प
 रसादथी, जडियो कुंदीपाक ॥ साजी हलदर सेवछुं,
 तव होशे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी प्रिया,
 दीठी बडी कुपात्र ॥ जाणे कौअचवेलडी, घर सर
 खी नही यात्र ॥ ५ ॥ ते माटे प्रभुजी सुणो, ए नावे
 तुम हाथ ॥ एहथी मनहुं वाल जो, कर जोडी कहुं
 नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांजलि नृप
 उलजाय ॥ हा हा में ए छुं कछुं, इम नृप धोखो क
 राय ॥ ७ ॥ शी मनमें धारी हती, दैवें शी करी वा
 त ॥ नृप कन्या परसादथी, व्याघ्रें द्विज नह्नात ॥ ८ ॥
 जाण्युं हतुं वश आवशे, हरिबल केरी नारि ॥ पण
 साहामुं इणि नारियें, उताखुं नृपवारि ॥ ९ ॥ हाणि
 अने हांसी बहु, थइ नृप चिंते एम ॥ एह डख के
 हने दाखवुं, होतें दाधो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति

जूरण करे, सांजलि दासी वेण ॥ ते दिन क्यारें आ
 वशे, देखुं.ते स्त्री नेण ॥ ११ ॥ वलि बीजी फरि
 मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ दृषद सरीखा मान
 वी, निजवी आणे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी नि
 जप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप क
 हे, सांजल तुं ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमहुं
 अठे, सुगुण लही कहुं तुळ ॥ हरिबल केरी जे प्रिया,
 मेलव आणी गुळ ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने,
 सांजलजो महिनाथ ॥ प्रीति वधारी पलकमें, लेइ
 सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, बीडुं
 ठवि तिण वार ॥ चाली हरिबल मंदिरें, राणी लेइ प
 रिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ सूरती महिनानी देशी ॥ हवे कुमरी अमरी प
 रें, वेठी महोल मजार ॥ निज संखीयांहुं परवरी,
 करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे
 गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें, वसंत
 सीरीयें तिवार ॥ १ ॥ कुमरीयें जाण्युं जे में हणी, दा
 सीमे काढी रे सोथ ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी
 आवी ए लोथ ॥ स्त्रीज्यो नृप तव जाणी रे, मूकी ए

(८९)

राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट
मांढयो उपाय ॥ १ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, रा
णीने जीडी रे बाय ॥ अंगोअंग मलीने रे, चरणों
नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें
कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीऊवे, वसंतसिरी ति
ए गोर ॥ ३ ॥ चंडवदनी दो बेठी रे, वातें एकण था
न ॥ जाणे स्वर्गस्थी ऊतरी, रंजा उरवशी मान ॥ रूप
अनूपम बेढुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंद
र्प वाडीयें, प्रगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राज
कुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे
जोडी, मलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुन सुं
दरी, कहे पटराणीने आज ॥ जळें रे पधाखां राणी
जी, कोडी सुधाखां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अम मं-
दिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सरिखुं जे काम हु
वे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, ठे
एक तुमशुं जी काम ॥ बहिन करीने थापवा, आवी
हुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो
नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु मूलां, नूषण आपे
श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें मांढयो
जी पास ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महो

टो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने डुहवतां, पूरवे
 नहि इण ठाम ॥ ते जाणीने कुमरीयें, नूषण रा
 ख्यां जी ताम ॥ मुखनी मिठाजें करी कहे, कुमरी
 राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापो, ते अमें जाण्युं जी
 तेह ॥ ८ ॥ ते मत जाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे
 जोलाय ॥ ते नही कोट जे आकरा, पवनें करी मो
 लाय ॥ उगमणी दिशि मूकी जो, ऊगे पङ्क्तिम नाण ॥
 ससिहर जो अग्नि ऊरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥
 पण शुं करीयें राणी जी, अंतें तुमशुंजी काम ॥ नृपने
 जो अमें डुहवीयें, तो वली फेडेजी ठाम ॥ ते जाणी
 अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी रा
 खीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक
 सांजलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत
 लीधुं ठे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप ठे एक
 मासनुं, ते जव पूरूं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणी
 जी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम सत्य राखवा
 कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा
 खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणी
 ए, सांजली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुऊ आव्या
 नो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही

(९१)

कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अशन वसन करी
रीऊवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृ
पने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृ
प तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें,
मांमथुं महोटे मंमाण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुम
री मलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नाथजी बेठा, प्रभुनुं
नजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीवने धैर्य धरे
य ॥ १४ ॥ इणपरें राणीनी सांजली, वाणी नृप हे
रखंत ॥ जाग्य दिशा मुळ जागी, जांगी जावठ चां
त ॥ नृपना मनमें गंग, तरंग जुं उलढ्यो रंग ॥ जा
णे माणशुं मासनें, अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥
सागर पव्योपमनां जे, कह्यां महोटां रे आय ॥ ते
सरखा पण जीवने, जोगवतां वही जाय ॥ तो शुं
इणमें मासनुं, जावुं केतिक वार ॥ आजने काल क
रंतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणपरें आशा
वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थ
इ, जुं मद पीध विलास ॥ आशायें जीव जीवाडवा,
जीव रुळे संसार ॥ पण चउलख जोजन लगें, नर
वहे आशा मजार ॥ १७ ॥ आशा अंबर जेवडी, क
हे डुनियां सहु कोय ॥ आशायें इमां अनल तणां,

(९३)

ते पण वृद्धज होय ॥ तिम ए नरपति आशामें, फू
ले दिन ने सत ॥ वसंतसिरीनुं ध्यान, धरे ते उठी
प्रजात ॥ १७ ॥ आंगुलीना वेढा गणे, निशिदिन
मासना दीह ॥ आशा पासमें विचरे, नरपति जेह
अबीह ॥ प्रीतिमती पट्टराणीयें, प्रीति वधारी रे जे
ह ॥ नृपनी रे मननी डुविधा, दूर विदारी तेह ॥ १८ ॥
नृप राणी दो रंग, विनोदमें काढे रे दीह ॥ राजनां का
ज सधारे, मदनवेग ते सिंह ॥ वसंतसिरी पण पोता
ने, मंदिरे करे गहगाट ॥ निज सखीयोशुं परवरी, नि
जपतिनी जोड वाट ॥ १९ ॥ हवे सुण जो नवियण तु
में, जे थई आगल वात ॥ हरिबल चाव्यो लंकार्ये,
ते सुणजो अवदात ॥ बीजा उद्गासनी पनणी, पूरण
दशमी ढाल ॥ शास्त्रतणे अनुसारें, लब्धि कही
उजमाल ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृप आणा लेइने, हरिबल चाव्यो लंक ॥ वि
प्रम पंथ जे आकरो, ते कापे निःशंक ॥ १ ॥ गिरिग
व्हर महोटां घणां, विकटां घाटां जेह ॥ मानवनो जि
हां पग नही, ते पण उतरे तेह ॥ २ ॥ जंगी जाडी
वनतणी, चिहुं दिशि वंशनि जाल ॥ जटाजूट जे

(९३)

वनलता, तिणमें वहे उजमाल ॥ ३ ॥ बाघ सिंहने
चीतरा, अजगर महोटा व्याल ॥ अष्टापद बलि गज
घटा, देता मृग अरि फाल ॥ ४ ॥ नूत प्रेतने व्यंतरा,
जोटिंग मोहोटा खवीस ॥ हरिबलने ठलवा जणी,
पाडे महोटी चीस ॥ ५ ॥ पण ते मन बीये नही, ठा
ती वज्रसमान ॥ लोह पंजर सम चालतो, धरतो
अरिहंत ध्यान ॥ ६ ॥ सूपडकन्ना हयमुहा, बलि
इकटंगा जेह ॥ काला हबसी काबरा, हरिबल निर
खे तेह ॥ ७ ॥ अजबगुल मेहरी घणी, निरखे ठा
मो ठाम ॥ ऊडपी ले नर पंखमें, सेवे तेहशुं काम
॥ ८ ॥ एह्वि अटवि उजाडमां, हरिबल चाव्यो जाब ॥
ध्यान धरे नवपद तणुं, जेहथी विघन पुलाय ॥ ९ ॥
देश नगर जोतो थको, पुर पाटण केइ गाम ॥ धरती
केइ उल्लंघतो, आव्यो दरिया ठाम ॥ १० ॥ जाणे
आपाढो गाजतो, गाजतो जाइव मास ॥ तिम गऊ
रव जलनिधि, करतां दीखे तास ॥ ११ ॥ कालामंवर
उहली, जलना लोढ चलंत ॥ जाणे हिमाला टूक ज्युं,
जल कल्लोल करंत ॥ १२ ॥ जोजन ऐंसी सहस्सनो,
कोरण विशेषें जेण ॥ लवणनिधीनी वेल ते, सगरें
आणी तेण ॥ १३ ॥ जल जेहवा मन्हा घणा, दीसे नव न

(९४)

वरूप ॥ बाघ सिंह जलमाणसां, जलमें देखे सरूप
॥ १४ ॥ एहवो लवणसमुद्र ते, देखी कंफे काय ॥
हरिबल पगलुं जल नणी, देतां सग पच थाय ॥ १५ ॥
॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ ए देशी ॥ हरिबल
मनमें चिंतवे रे, शो हवे करुं उपाय ॥ सहस एंसी जोय
ए जलनिधि रे, पृथुल उंमो देखाय ॥ १ ॥ प्रजुजी ते केम
मुऊथी तराय ॥ पगवट पण न जवाय ॥ प्र० ॥ जुज बलें
पण न तराय ॥ प्र० ॥ तो लंका केम हलाय रे ॥ प्र० ॥ ते ० ॥
एआंकणी ॥ जलना लोढ वहे घणा रे, श्यामला जल ऊ
जस ॥ ज्वाला वडवानल तणी रे, निकसे प्रबल आ
काश ॥ २ ॥ प्र० ॥ न वहे पंखी मानवी रे, न वहे तारु
ऊहाज ॥ मारग को दीसे नहिं रे, नवि दीसे किहां
पाज रे ॥ ३ ॥ प्र० ॥ शीतल पवन वहे घणो रे, जा
ए शीतल हेम ॥ अरहर कंफे देहडी रे, खडहडे अस्थि
सेम रे ॥ ४ ॥ प्र० ॥ एहवो खारो सागरु रे, उठले जलें
असमान ॥ ते देखी धीवर घणुं रे, मरप्यो गइ तस
शान रे ॥ ५ ॥ प्र० ॥ जो फरी पाठो घर नणी रे, जावं तो न
रहे मान ॥ बीडुं ठवी डुं आवियो रे, कीधुं अजाणुं
काम रे ॥ ६ ॥ प्र० ॥ नागें ग्रही ज्युं ठुंडरी रे, मूकें

तो अंध थाय ॥ नहणथी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय
 रे ॥ ७ ॥ प्र० ॥ वली चरकलीयें ग्रहं रे, मुखमां चणियुं
 बोर ॥ आधुं पाहुं न ऊतरे रे, करे पस्तावो जोर
 ॥ ८ ॥ प्र० ॥ इम धीवर फूरे घणुं रे, सागर कांते ज्ञा
 य ॥ धीवरें जाणुं आवी बन्यो रे, वाध न दीनो
 न्याय रे ॥ ९ ॥ प्र० ॥ किहां गयो माहरो इण समे
 रे, प्राणवद्धन मुज इष्ट ॥ समखां सार करे घणुं रे,
 टाले सघलां रिष्ट रे ॥ १० ॥ प्र० ॥ इम चिंतवतां ततें
 खिणें रे, आव्यो सागर देव ॥ कहे सुर शी तुं चिंता
 करे रे, मूकुं लंका तुज हेव रे ॥ ११ ॥ प्र० ॥ गुं वठ
 तुजने इहां कणे रे, आवहुं थयुं हो केम ॥ सुर कहे
 कहो मुज मांमिने रे, जाणुं जाये जेम रे ॥ १२ ॥ प्र० ॥
 तव हरिबल कहे देवने रे, सांजलो तातजी मुज ॥
 नृप हैतें बीडुं ठबी रे, आव्यो कहुं हुं तुज रे ॥ १३ ॥
 प्र० ॥ ते सांजली जलपति थयो रे, देव स्वरूपी अ
 श्व ॥ हरिबल ते अश्वें चढी रे, जलधित्तरी लह्यो विश्व
 रे ॥ १४ ॥ प्रभुजी नलें आव्या तुमें नाथ ॥ सुर तरुनी
 ग्रही बाथ ॥ प्र० ॥ मुज शरण थयो तुम हाथ ॥ प्र० ॥ तव
 हुं थयो महोटो सनाथ रे ॥ प्र० ॥ १५ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ लं
 का बागमें मूकीने रे, देव थयो परगट्ट ॥ काम पडे तुं सं

(६६)

नारजे रे, मुऊने करी गहगट्ट रे ॥ १६ ॥ ॥ प्र० ॥ एम
कहीने सुर गयो रे, पहोतो ते निज ठाम ॥ हरिबल
लंका देखीने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥ १७ ॥ प्र० ॥
तेजें जलामल जलकती रे, हेममय लंका पीठ ॥ जेहवी
जनमुखें सांजली रे, तेहवी नजरें दीठ रे ॥ १८ ॥
प्र० ॥ नंदन वन सम वाटिका रे, देखी ययो सुप्रस
न्न ॥ परिमल पसखो चिहुं दिशें रे, कुसुम तणां जि
हां वन्न रे ॥ १९ ॥ प्र० ॥ चंपा गुलाब ने केतकी रे,
मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाडी फुली रे, हरिबल
निरखे तेह रे ॥ २० ॥ प्र० ॥ अंब कदंब ने सुरतरु रे,
सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी उषधी रे, पस
री चिहुं दिशें रेल रे ॥ २१ ॥ प्र० ॥ नागरवल्ली डा
खना रे, मांमवा अति सोहंत ॥ केलि जंबेरी फालसां
रे, दाडिम पक्क मोहंत रे ॥ २२ ॥ प्र० ॥ जातीफ
ल जावंतरी रे, तज ने तमाल ते पत्र ॥ एके तरुअरें नी
पजे रे, चातुरजातक तत्र रे ॥ २३ ॥ प्र० ॥ देव कु
सुम ने एलची रे, सुंदर केसर ठोड ॥ निमजां पिस्तां
चारोली रे, बेय बदाम अखोड रे ॥ २४ ॥ प्र० ॥
पूगी श्रीफल सेजडी रे, सीताफल सह तूत ॥ खार
क रायण करमदां रे, लिंबू जांबू जूत रे ॥ २५ ॥ प्र०

इम अनेक ते जातिनी रे, वणसइ नार अठार ॥
 जोगी जनने कारणे रे, प्रगट थई संसार रे ॥ १६ ॥
 प्र०॥ वापी कूप सरोवरु रे, जरियां अमृततोय ॥ हंस
 चकोर ने सारसा रे, जलक्रीडा करे सोय रे ॥ १७ ॥
 प्र०॥ इम हरिबल जोतो वहे रे, लंकावन सुरसालं ॥ ल
 ब्धि बीजा उल्लासनी रे, पनणी इग्यारमी ढाल रे ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ लंकापरिसर वाटिका, सोहे अति रमणीक ॥
 जाणे नंदनवन तणी, जगिनी प्रगटि नजीक ॥ १ ॥
 कनक रयणमें जलकता, महोटा मेहेल अत्यंत ॥
 खंमोखली जलशुं नरी, कारिंज तिम उबलंत ॥ २ ॥
 नर नारी विद्याधरी, किन्नर अप्सर बाल ॥ सरखे स्वरें
 टोलें मली, गावे गीत रसाल ॥ ३ ॥ मधुरी ध्वनि आ-
 राममें, थइ रहि ठामो ठाम ॥ हरिबल ते श्रवणें सुणी,
 मगन थयो अनिराम ॥ ४ ॥ मानव नव जलें में लह्यो,
 जलें लह्यो गुरु उपदेश ॥ सागरदेव पसायथी, लंका
 दीति विशेष ॥ ५ ॥ वन उपवन जोतो थको, हरिबल
 हर्ष कलोल ॥ आव्यो अतिही चूंपशुं, लंकागढनी
 पोल ॥ ६ ॥ साव सोवनमय दुर्ग ते, उपे मणिमय
 शीर्ष ॥ जाणे चूरमणी करे, उपे कंकण नीर्ष ॥ ७ ॥

(६८)

एहवो वप्र विराजतो, नगरी राखण चंग ॥ जाणे जंबु
द्वीपनो, जगती कोट उत्तंग ॥ ८ ॥ इणिपरें डिंगनो
छुंते ते, निरखी हरखित होय ॥ पेसारो पुरमें करे,
शुन लगनैं करि जोय ॥ ९ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ उढणीनी देशी ॥ सासु काठा हे गहुं पीसाय,
आपें न जाशो हेमाल ते सोय नारी जणे ॥ १ ॥ देशी ॥
पेगे डिंगतणी वर पोले, निरखे रे हाट मंदिर बहु ॥
सहु कोय सुणो ॥ जाणे दक्षिण उत्तर उल, चुवनपति
मंदिर सहु ॥ २ ॥ स० ॥ ए तो साव सोवनमय थंज,
कन्दक रयणमें मालीयां ॥ स० ॥ तेजें जाकजमाल,
अचंज दीसे मोतिनां जालियां ॥ ३ ॥ स० ॥ जाणे
नजथी दिनकर सार, आवी घर घर प्रगटीया ॥ स० ॥
नवि दीसे तिमिर लगार, उद्योत सघले उजटीया ॥ ४ ॥
स० ॥ एतो कोरणी धोरणी जोर, जाणे देवपुरी
वसी ॥ स० ॥ सोहे राय बिजीषण ठोर, राज करे मन
उद्धसी ॥ ५ ॥ स० ॥ वसे वसती वरण अढार, राक्षस
रूपें मानवी ॥ स० ॥ एतो न गणे नहु अजहु, एवी
लंका जाणवी ॥ ६ ॥ स० ॥ घोडा गज रथ ने सुख
पाल, राज्य मारगमें वहे घणा ॥ स० ॥ देखे महोटा

(६६)

नव नवा ख्याल, हास्य कुतूहल नही मणा ॥ ६ ॥
स० ॥ जोतो इणि परें नगरी मजार, हरिबल आगल
संचरे ॥ स० ॥ दीतुं तव एक तेज जंमार, सुंदर मं
दिर जलि परें ॥ ७ ॥ स० ॥ सोहे सुंदर पोल प्रकार,
रमणिक दृष्टें देखे सही ॥ स० ॥ पण देखे ते शून्य
आगार, माणस को दीसे नही ॥ ८ ॥ स० ॥ ए तो तव
तिहां अचरिज देखि, पेठोहे मंदिर पोलमें ॥ स० ॥ जखां
निरखे रयण विशेष, उरा उरी उलमें ॥ ९ ॥ स० ॥ इम जो
तो सातमी जूमि, हरिबल चढीयो चूपछुं ॥ स० ॥ जाणे
स्वर्गविमाननी जूमि, रचना ते दीठी रूपछुं ॥ १० ॥
॥ स० ॥ तिहां निरखे अचरिज एक, हिंमोला खाट
सोहामणी ॥ स० ॥ तेह उपर सूती विवेक, सुंदर
स्त्री रलियामणी ॥ ११ ॥ स० ॥ जाणे देही कुंकुम-
वर्ण, अप्सर सम करी उपती ॥ स० ॥ पण दीसे ते
मृतक समान, चेतन रहित ते द्योतती ॥ १२ ॥ स० ॥
चिंते हरिबल निरखि रे तास, विस्मय पाय्यो मन्नमें ॥
स० ॥ एसो दीसे देव अन्यास, सास नही ए तन्नमें
॥ १३ ॥ स० ॥ इम चिंतवी धीवर धिंग, अरहुं पर-
हुं विलोकतां ॥ स० ॥ दीठी तुंबडी जल जरी चंग,
खाट तले लही ढोकतां ॥ १४ ॥ स० ॥ तिणें तुंबीनुं

(१००)

जल लेय, ठांटयुं स्त्रीतन ऊपरें ॥ स० ॥ ऊठी ततखि
 ए लङ्का धरेय, हिंमोला खाटथी सूपरें ॥ १५ ॥ स० ॥
 मेह्नी चिंतवे चित्त मजार, ए शुं कौतुक नीपनुं ॥ स० ॥
 ए तो थइ नवजोबन नारि, मनोहर ज्युं तेज दीपनुं
 ॥ १६ ॥ स० ॥ दीसे रंजा उर्वशी रूप, कामिनी
 काम जगावती ॥ स० ॥ मोहे सुर नर किन्नर
 नूप, कामी जन मन जावती ॥ १७ ॥ स० ॥ इम
 अचिरज लहिने तास, पूढे हरिबल उद्वसी ॥ स० ॥
 किम रहे तुं शून्य आवास, एकली शबपणें वसी ॥
 ॥ १८ ॥ स० ॥ किहां गया तुज सयण संबंध, मात
 पितादिक ताहरां ॥ स० ॥ तव कहे अबला प्रबंध,
 सांजलो पंथी माहरा ॥ १९ ॥ स० ॥ जलें आब्या
 तुम इहां स्वामि, उपगारी दीसो जला ॥ सोय नारी
 जणे ॥ बेसो आसन्न शुज ठाम, कहुं तुमने सघली कला
 ॥ २० ॥ तो ॥ इहां राय बिजीषण सार, राज करे लंका
 धणी ॥ सो ॥ वाडी ठे तस वृद्ध श्रीकार, वद्वज ते नृप
 ने घणी ॥ २१ ॥ सो ॥ तेह वाडीनो ए रखवाल, नीम
 नामें आरामी अढे ॥ सो ॥ हुं हुं तेहनी पुत्री जी
 बाल, कुसुमसिरी मुज नाम ठे ॥ २२ ॥ सो ॥ जब हुं
 थई जोबनवेश, तब मुज जनक चिंता करे ॥ सो ॥

कुण वरजो ए पुण्य विशेष, अहोनिशि इम चिंता धरे
 ॥ १३ ॥ सो० ॥ तव तिहां एक जोषी जाण, फिरतो
 ते आव्यो मंदिरें ॥ सो० ॥ पूढे तेहने पिता गुण
 खाण, तेडी जई घर अंदरें ॥ १४ ॥ सो० ॥ जुठ
 जोषी ज्योतिष जोय, कहो मुऊने तुमें दुःख खसे ॥
 सो० ॥ जिम मुऊ मन वंढित होय, मुऊ पुत्री वर कु
 ण हरो ॥ १५ ॥ सो० ॥ तव जोषी कहे वनपाल,
 सांजलो जोषथी हुं कहुं ॥ सो० ॥ तुम पुत्रीनो तो मही
 पाल, पति होरो गुणवंत लहुं ॥ १६ ॥ सो० ॥ तव
 हरख्यो पिता मनमांहे, सांजली जोषी वयणडां ॥
 सो० ॥ दीधुं जोषीने दान उहाह, मूठ नरी शुनरय
 णडां ॥ १७ ॥ सो० ॥ इम कही गयो जोषी थान,
 वंढित दान ते लेईने ॥ सो० ॥ चिंते जनक ए पुत्री
 निधान, गुं करुं परने देईने ॥ १८ ॥ सो० ॥ राखुं
 मुऊ घर पुत्री रतनं, परणी हुं थाउं नरपती ॥ सो० ॥
 लोनी लंपट थइ एक मघ्न, वात करी इण डुरमती
 ॥ १९ ॥ सो० ॥ मुऊ जनकीयें जाणी वात, फिट फि
 ट कख्यो मुऊ तातने ॥ सो० ॥ लागी वज्र समान
 नो घात, जाल चढी कमजातने ॥ २० ॥ सो० ॥
 पंथी सांजजो मोहनी जाल, महोटी ए निपनी कार

(१०३)

मी ॥ सो० ॥ ए तो बीजा उल्लासनी ढाल, लब्धियें
जांखी बारमी ॥ ३१ ॥ सो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ वलिकहुं पंथी सांजलो, महारा तातनां चिन्ह ॥
न्याय करे जइ नृपकने, माली जीम.अदीन ॥ १ ॥
कहो स्वामी जे करषणी, मसकत करी निपाय ॥ ते
कण फलने करषणी, जोगवे के न जोगाय ॥ २ ॥
तव नरपति कहे मालिने, जे करे मसकत अंग ॥ ते
कण फल सुखें वावरे, न्यायी थइ ते अजंम ॥ ३ ॥ ए
हवो न्याय ठरावियो, मालियें परषद मांह ॥ पंचनी
साखें ए न्यायनुं, लिखित कहुं ते उगाह ॥ ४ ॥ तेह
लिखत लेई करी, आव्यो जनक ते गेह ॥ वात लही
मुऊ जनकियें, मौन धरी रहि तेह ॥ ५ ॥ तव मु
ऊ जनक संबंधियें, जाण्यो महोटी अन्याय ॥ गृह भू
की तव निकसियां, वसियां बीजे जाय ॥ ६ ॥ तिण
दिनथी गृह शून्यमें, मुऊने राखे तात ॥ मृतकसमा
न करी वहे, मंत्रबलें ते प्रजात ॥ ७ ॥ सारो दिन
वाडियें रहे, करे ते वननुं काज ॥ नृपने फल फुल दे
इने, आवे मुऊकने सांज ॥ ८ ॥ तुंबी जल लेई करी,

(૧૦૩)

ઠાંટે મુજ તનુ જામ ॥ ચેતન લહિ જાગું તદા, કરે
મુજ જનક એ કામ ॥ એ ॥

॥ ઢાલ તેરમી ॥

॥ મુજરો લ્યોને હે જાલિમ જાટણી ॥ એ દેશી ॥
॥ સાંજનો પંથી માહરા તાતની, કહું કરણી વલીં એક ॥
પૂર્વે પણ એક હુંતું દેશને, કીધો ન્યાય વિવેક ॥ ૧ ॥
શ્રેયાંસનાથ શ્યારમા, તેહને જે વારે કંહાય ॥ પર
જાપતિ નામેં રાજવી, મિણવા રાણી સુહાય ॥ ૨ ॥
સાં ॥ તેહની કૂચેં પુત્રી ઉપની, પદમિની રૂપ અ
ત્યંત ॥ અનુક્રમેં થઈ નવ યૌવના, કામિની કામ લ
હંત ॥ ૩ ॥ સાં ॥ તે પરજાપતિ પુત્રીનું, દીતું રૂપ
સરૂપ ॥ જાણ્યું એ ફલ બીજે જાયશે, જોગવશે અન્ય
જૂપ ॥ ૪ ॥ સાં ॥ તો એ પુત્રી માહરે રાખવી, નહિ-
દેઝું બીજે એ ક્યાંહ ॥ પંચમેં ન્યાય કરાવીને, પરણ્યો
પુત્રી ઝહાહ ॥ ૫ ॥ સાં ॥ પંચની સારેં એ સહી
કરું, મેલી પરખદા સાર ॥ જિમ મુજ લોકમેં નવિ હુ
વે, નિંદા વિકથા લગાર ॥ ૬ ॥ સાં ॥ હમ જાણી
નૃપ તિણિ વેલમાં, મેલવી પંચ સમઠ્ઠ ॥ પૂઠે પરજા
પતિ પરજને, કરો ન્યાય વિચઠ્ઠ ॥ ૭ ॥ સાં ॥ જે
બીજ વાવે વાડી સ્વેતમેં, તે ક્રતુસમે ફલ દેય ॥

ते फलने मसकतीनो धणी, जोग लीये के नवि
 लेय ॥ ७ ॥ सां० ॥ तव ते बोली परजा एकमर्ते,
 सांजलो नाथजी एम ॥ जे फल वावे ते फल बीजने,
 जोग ते नवि लीए केम ? ॥ ८ ॥ सां० ॥ पंच मलीने
 जे करी थापना, ते उहापी न जाय ॥ स्थिति ठे अ
 नादि ए कालनी, एहवो ते न्याय ठराय ॥ ९ ॥ सां० ॥
 तव परजापति हरखिने, लोधुं पुत्री लगन ॥ परण्यो
 ते निज पुत्रीने, यइ रह्यो तेहुं मगन ॥ १० ॥ सां० ॥
 तेहनी कूखें जी ऊपनो, हरि ते नामें त्रिष्ट ॥ श्रीजिन
 वीरनो जीव ते, जाणे सयल ते शिष्ट ॥ ११ ॥ सां० ॥
 त्रेशउ शिलाका चरित्रमें, ठे तेहनो अधिकार ॥ ते न्या
 यधारी लंकापति, कने जइ चढ्यो दरबार ॥ १२ ॥
 सां० ॥ ए करणी माहारा तातनी, में कही पंथिजी
 तुम्म ॥ लालची लोनी जे लंपटी, न वळे ते कदि
 जुम्म ॥ १३ ॥ सां० ॥ माहरो तात ते लालची, अहनि
 श राखे निराश ॥ दुःखदायी दुःख देयतां, तेहने थया खट
 मास ॥ १४ ॥ सां० ॥ कहुं ए पंथी हुं हवे केहने, नाखुं मो
 होटो निशास ॥ आजयी बीजे मासडे, वरशे मुऊने उ
 छास ॥ १५ ॥ सां० ॥ माहारा मननी पंथी में कही,
 सघली मांमीने गुऊ ॥ जलें तुमें आव्याजी मंदिरें, सु

ख शाता थइ मुऊ ॥ १७ ॥ सांचलो पंथी जीवन मा
 हरा ॥ ए आंकणी ॥ कुसुमसिरी कहे सांचलो, पंथी क
 रुणा कृपाल ॥ जाग्य बली में तुम्ह उलख्या, साहसिक
 महोटा मयाल ॥ १८ ॥ सां० ॥ सघली वातें पूरा जा
 णीने, में तुम्ह जाव्यो जी हाथ ॥ दुःखनिधि पार उ
 तारवा, जलें आव्या तुम्हें नाथ ॥ १९ ॥ सां० ॥
 मन ललचाणुं तुम देखतां, जिम मन केतकी चंग ॥
 बे करं जोडीने वीनवुं, मुऊने परणो सुरंग ॥ २० ॥ सां०
 ॥ सूरज चंड साखें करी, परणी पूरो जी लाड ॥ नि
 ज नारीने सुख देयतां, शो ते चढावुं जी पाड ॥ २१ ॥
 सां० ॥ माहरे वखतें तुम्हें आणीया, ताणी पुण्य
 विशेष ॥ ते हुं टाली ते किम टलुं, लखीया पानें जे
 लेख ॥ २२ ॥ सां० ॥ इणि परें वयण वेधालुयें, कु
 मरीयें नारव्यां जे बाण ॥ वेधक बाणें ते वेधियो, हरि
 बल चतुर सुजाण ॥ २३ ॥ सां० ॥ परण्यो तेह कु
 सुमसिरी, हरिबल पाम्यो ते चेन ॥ जाणे परण्यो बीजी
 अप्सरा, वसंतसिरीनी ते बेन ॥ २४ ॥ सां० ॥ लंका
 धणीने तेडवा, मन्ही बीडुं ठबेय ॥ गडदो ते गुण आ
 वियो, लोक उखाणो कहेय ॥ २५ ॥ सां० ॥ माली
 नीमो जोतो रह्यो, परण्यो पुत्रीने कोय ॥ नुतखां जो

षी कोली जम्या, ए उखाणो ते होय ॥ १६ ॥ सां० ॥
 सिंहनो नद्ध ते जंबुकें, कहो ते केम कराय ॥ कलिंगमहो
 टुं कीडी मुखें, कहो ते केम समाय ॥ १७ ॥ सां० ॥
 हरिबल केरा जे नाग्यमें, कुसुमसिरी लखी जेह ॥ मा
 लीनें किम मोलवे, लख्या विधातायें लेह ॥ १८ ॥
 सा० ॥ हरिबल पुण्यना जोगथी, पाम्यो मंगलमाल ॥
 लब्धि बीजां उद्गासनी, पनणी तेरमी ढाल ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे कुमरी कहे कंतने, निसुणो प्राणाधार ॥ आ
 पण वहियें बे जणां, जिहां ठे निज आगार ॥ १ ॥
 सांजें माली आवरो, आखें पडरो लूण ॥ आपण बे
 हुने दूवरो, तो ते राखरो कूण ॥ २ ॥ तव हरिबल क
 हे नारिनें, सांजल प्यारी मुऊ ॥ लंकापतिने तेडवा,
 आव्यो बुं कहुं तुऊ ॥ ३ ॥ विशाला पुरनो धणी, मद
 नवेग ते नाम ॥ अंगजने परणाववा, मेले नृप अजि
 राम ॥ ४ ॥ वैशाखे सितपंचमी, लीधां लगनज जेह ॥
 सघला देशना राजवी, तिण दिन मिलरो तेह ॥ ५ ॥
 तव वीशालानो धणी, बोल्यो सजा समद्ध ॥ को ठे लं
 का रायने, तेडी आवे विचद्ध ॥ ६ ॥ तव तिहां को
 इ न बोलियो, बीडुं न लबे कोय ॥ तव तुऊ नाग्यब

लें करी, बीडुं में ठव्युं सोय ॥ ७ ॥ ते नृप आणा
 लेइने, हुं आव्यो हुं आंहि ॥ लंकापति तेडथा विना,
 किम जवराए त्यांहि ॥ ८ ॥ कुसुमसिरी वलतुं कहे
 सांजलो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वरें, उंधमें
 केइ युग जात ॥ ९ ॥ ते सांधो किम बाऊरो, आप
 ए जावुं गेह ॥ लंकापति कने जायवुं, कठिण कयुं
 तुम्हें एह ॥ १० ॥ जो प्रीतम मुऊने कहो, जावुं बी
 नीषण पास ॥ देवनमी एक खड्ग ठे, लावुं ते जइ तास ॥
 ॥ ढाल चउदमी ॥

॥ धणरा ढोला ॥ ए देशी ॥ तव हरिबल कहे ना
 रीने रे, जाउ उतावलां त्यांहि ॥ मोमन प्यारी ॥ ला
 वजो तुमें संजारीने रे, खड्ग जे चंडहास आंहि ॥
 ॥ मो० ॥ १ ॥ लावो लावो रे सुगुण जई लावो, तुमें ढील
 म करशो क्यांहि ॥ मो० ॥ ए आंकणी ॥ वैशाख शुदि दि
 न पंचमी रे, लगन उपर जवराय ॥ मो० ॥ तो गणे मु
 ऊने साचमें रे, मदनवेग ते राय ॥ २ ॥ मो० ॥ ते
 सहिनाणी खड्गनी रे, लंकाधणीनी जेह ॥ मो० ॥
 लाज वधे निज वर्गनी रे, ते विधें लावजो तेह ॥
 ॥ ३ ॥ मो० ॥ पण शिर बदलामी चढे रे, जगमें हां
 सुं होय ॥ मो० ॥ लेहणेनी देणे पडे रे, ते मत कर

जो कोय ॥ ४ ॥ मो० ॥ करतां होय ते कीजियें रे,
 अवर न कीजें कग्ग ॥ मो० ॥ मुंमी रहे सेवालमां
 रै, ऊंचा रह्या दो पग्ग ॥ ५ ॥ मो० ॥ ते मत करजो
 कामिनी रे, सांजलि ते दृष्टांत ॥ मो० ॥ इम शीखाम
 ए स्वामीनी रे, धारी ते चितमें खांत ॥ ६ ॥ मो० ॥
 हवे कुमरी गई तिहां कणो रे, राय बिजीषण ज्यांहि
 ॥ मो० ॥ जर निझामें सूतो लह्यो रे, मदिरा ठाकनी
 मांहि ॥ ७ ॥ मो० ॥ कल विकल करीने ग्रह्युं रे; खड्ग
 जे ठे चंडहास ॥ मो० ॥ जात वलत कोणो नवि
 लह्युं रे, आवी प्रीतम पास ॥ ८ ॥ मो० ॥ व्यो
 स्वामी आ खड्गनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥
 मो० ॥ देवनमी खड्ग स्वर्गनी रे, उलखे मल्ली विशे
 ह ॥ ९ ॥ मो० ॥ हवे सामग्री दंपती रे, मेलवे जावा
 गेह ॥ मो० ॥ सार रयण ते सोंपती रे, पियुने जे
 कोश जरेय ॥ १० ॥ मो० ॥ तुंबीं जलसार्थे ग्रही रे,
 दंपती चाव्यां दोष ॥ मो० ॥ आव्यां जे लंका वही
 रे, लहे मनोवन्धित सोय ॥ ११ ॥ मो० ॥ समखो
 सागर देवता रे, मल्लीयें थई उजमाल ॥ मो० ॥ आ
 व्यो-सुर पण देवता रे, करुणावंत कृपाल ॥ १२ ॥
 मो० ॥ किहां मूकुं हवे तुळाने रे, सुर बोढ्यो ततका

ल ॥ मो० ॥ मूको स्वामी मुकने रे, निज नगरी वि
 शाल ॥ १३ ॥ मो० ॥ अश्व चढावी दो जणा रे, मू
 क्या नगर नजीक ॥ मो० ॥ चिंतव्युं होशे तुम तणुं
 रे, सुर कहे जाणजो ठीक ॥ १४ ॥ मो० ॥ एम क
 हीने ते गयो रे, नाखी जे निज थान ॥ मो० ॥ मन
 वंछित सफलुं अयुं रे, दंपतिपुण्य निधान ॥ १५ ॥
 मो० ॥ नगरीनी जे वाटिका रे, तेहमें उतारो की
 ध ॥ मो० ॥ दंपति करे गहगट्टिका रे, जाणे मनो
 रथ सिद्ध ॥ १६ ॥ मो० ॥ हवे माली संध्या समे रे,
 आब्यो निज घर हेत ॥ मो० ॥ शय्या खाली दृष्टि
 में रे, आवी ते नजरें रेत ॥ १७ ॥ किहां गई प्यारी,
 मो मन प्यारी ॥ ए आंकणी ॥ हल फलतो जोतो फरे रे,
 सघले मंदिर मझ ॥ कि० ॥ पुत्री न दीठी शुं करे रे,
 बलि थयो जोवा सज्ज ॥ १८ ॥ कि० ॥ बलि नवि
 दीठी तुंबडी रे, जे नरी अमृत तोय ॥ कि० ॥ ले ग
 ई सार्थे तुंबडी रे, कोइक पुरुषने जोये ॥ १९ ॥ कि० ॥
 पगलुं जोवा नीकल्यो रे, पग पग जोतो वाट ॥ कि० ॥
 परद्वीपनो पग अटकल्यो रे, तव थयो तेहने उच्चा
 ट ॥ २० ॥ कि० ॥ पग जोयो जलधि नणी रे, पुत्री
 गइ करि नाथ ॥ कि० ॥ आरामिक ते नीमना रे,

नूमि पडया दोय हाथ ॥ ११ ॥ कि० ॥ जोतो रोतो
 ते वढ्यो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विर
 हें ते चढ्यो रे, शुं हवे करुं ते पेर ॥ १२ ॥ कि० ॥
 पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ रंमानी
 रंमा गई रे, टपसुं पण गइ लेत ॥ १३ ॥ कि० ॥ रां
 क तणे घरे सुरमणी रे, रहे कहां केती वार ॥ कि० ॥
 पूरव जवनी वेरणी रे, दे गइ महोटो खार ॥ १४ ॥
 कि० ॥ पुत्री परणें जाणतो रे, पामशुं महोटुं राज ॥
 कि० ॥ होंश घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री रा
 ज ॥ १५ ॥ कि० ॥ तेहमें एके न संपजी रे, फोक
 फजेती कीध ॥ कि० ॥ देवना मनमां शी जजी रे,
 एको वात न सीध ॥ १६ ॥ कि० ॥ पण पुत्री पर
 घरें जई रे, वसति जाणे संसार ॥ कि० ॥ एक
 एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर बार ॥ कि० ॥ १७ ॥
 ते में खोटी आदरी रे, लोनें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो
 किम आवे पाधरी रे, लोप्यो म्हें व्यवहार ॥ १८ ॥
 मो० ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति
 विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पदमणी रे, रांक घरे
 मुऊ सार ॥ १९ ॥ मो० ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो
 रे, ठाना करीने लोच ॥ मो० ॥ जे थावुं हतुं ते थयुं रे,

शो हवे करवो शोच ॥ ३० ॥ मो० ॥ मालीयें एम
मन वालीयुं रे, जावीनो ग्रह्यो पछ ॥ मो० ॥ आ
तम कुल संजालीयुं रे, काढी नाख्युं शछ ॥ ३१ ॥
मो० ॥ सगां संबंधि नारीने रे, रीश उतारी तास
॥ मो० ॥ मालियें वात विसारीने रे, तेडी आब्यो
आवास ॥ ३२ ॥ मो० ॥ सघला वियोग ते नांगियां
रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुकृत जागीयां
रे, नांगीया दुःख जंजाल ॥ ३३ ॥ मो० ॥ हवे हरिब
लनी जे थइ रे, सांजलो पुण्यविशाल ॥ मो० ॥ बीजां
उछासनी ए कही रे, लब्धे चौदमी ढाल ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल रजनीसमे, वाडियें कीधुं ठाम ॥
कुसुमसिरी मूकी तिहां, पढोतो ते निजधाम ॥ १ ॥
वसंतसिरी पेहेली प्रिया, जोउं तेहनुं चरित्र ॥ मुऊ
ऊपर पण केहवुं, राखे मनह पवित्र ॥ २ ॥ इम जा
णी निज मंदिरें, आब्यो रजनी मध्य ॥ तस्करनी
परें सांजले, देई कान ते शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण अवसर
जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाब्यो मा
संतरें, तेहनी थइ चकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी
सूवटो, पाब्यो ठे घरमांदि ॥ तस आगल कहे विरह

एी, वसंतसिरी जे उठांहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुऊ पीछु
 डो, गयो लंका शुन काज ॥ अवधि कही एक मास
 मी, ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केशरनख पिया कह
 चले, ठाम गयंदनखमांहि ॥ जलनख रयण पोका
 रियो, मो नख जावत नांहि ॥ हजीअ लगण आव्यो
 नही, नाव्यो को संदेश ॥ नाह नितुर मेहेली गयो,
 मुऊने बाले वेश ॥ ७ ॥ तो दीहा किम निर्गमं, किम
 करि राखुं शील ॥ मदनवेग ते नूधणी, केडें पडियो
 कुशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो माहरुं, में पण राखुं
 एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चूकरो ते ॥
 शुकवाक्यं ॥ दधिसूता सुत तासरिपु, ता त्रिय वा
 हनाहार ॥ सो सुंदर तुऊमें नहिं, कीधो कौन वि
 चार ॥ ९ ॥ ते माटे तुं सूडला, जा मुऊ प्रीतम पा
 स ॥ संदेशो मुऊ घरतणो, जइने कहेजे तास ॥ १० ॥

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ विंजाजीन्नी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमीरस पा
 उ तुऊने रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम डाख ॥ सूडा
 सयण वारु ॥ ए आंकणी ॥ सुडा० ॥ चांच नरावुं
 चूरमे रे ॥ सु० ॥ देउं वली आंबा साख ॥ सु० ॥
 ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो, मुऊ दाखवी रे ॥ सु० ॥ मेल

व तुं मुऊ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइश हुं गुण ताह
 रा रे ॥ सु० ॥ जीवित सुधी सदीव ॥ सु० ॥ १ ॥
 ॥ सु० ॥ दूधें जरीश तुऊ पेटने रे ॥ सु० ॥ देश क
 हीश ते लांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सही
 रे ॥ सु० ॥ मानजे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥
 हुं कर जोडी खीनवुं रे ॥ सु० ॥ सांजल माहरी
 वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सधला पंखीमें कही रे ॥ सु० ॥
 उत्तमः ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
 शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं ठे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥
 ॥ सु० ॥ रूपें तुं रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ता
 हरी वाण ॥ सु० ॥ ५ ॥ सु० ॥ लीली ताहरी पंख
 डी रे ॥ सु० ॥ चांच राती तुऊ चंग ॥ सु० ॥ सु० ॥
 रूडी ताहरी आंखडी रे ॥ सु० ॥ राती केशू रंग ॥
 ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं चांचडी रे ॥ सु० ॥
 दूधें पखावुं पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार ठवुं गले मो
 तीनो रे ॥ सु० ॥ लाख ठकानो अढंक ॥ सु० ॥ ७ ॥
 ॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥ दया
 धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुऊ नाहने
 रे ॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उगांहे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥
 मानिश तुऊ उपगारडो रे ॥ सु० ॥ आइश नही गुण

चोर ॥ सु० ॥ सु० ॥ कीधो गुण जाणे नही रे ॥
 ॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥ ए ॥ सु० ॥
 ऊंठीने तुं पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करजे ढील ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुऊ संदेशडो रे ॥ सु० ॥
 जिहां होये नाह रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अब
 ला तुऊ घर एकली रे ॥ सु० ॥ ठे विरहिणीने वेश
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ फुरि फूरि ऊंखर अइ रे ॥ सु० ॥ अइ
 नारी नरवेश ॥ सु० ॥ ११ ॥ सु० ॥ प्रीतमनः विर
 हायकी रे ॥ सु० ॥ मुठ न दीसे कोय ॥ सु० ॥ सु० ॥
 पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु० ॥ दिन दिन पीलां
 होय ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पियु विरहें करि नारियें रे
 ॥ सु० ॥ तजियां तेज तंबोल ॥ सु० ॥ सु० ॥ खाणां
 पीणां पहेरणां रे ॥ सु० ॥ तजीयां सखीजुं टकोल
 ॥ सु० ॥ १३ ॥ सु० ॥ पियु विण शणगार पहेरतां
 रे ॥ सु० ॥ लागे अंगारा समान ॥ सु० ॥ सु० ॥ चं
 दन चूवा अंगीठियो रे ॥ सु० ॥ नागिणी नागर पान
 ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥ पियु विरहें घडी मासडो रे ॥
 ॥ सु० ॥ मास ते वरसज होय ॥ सु० ॥ सु० ॥ खिण
 घरमें खिण आंगणें रे ॥ सु० ॥ पियु विण ए गति
 जोय ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ नयणें नावे निडडी रे

॥ सु० ॥ जावे न अन्न ने पान ॥ सु० ॥ सु० ॥ नाह
 विना घेली जगुं रे ॥ सु० ॥ कहीयें केतु सयाण ॥
 ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ पूरव पापना योगथी रे ॥
 ॥ सु० ॥ पामी स्त्री जमवार ॥ सु० ॥ सु० ॥ जरजो
 बन पियु घर नही रे ॥ सु० ॥ तस एलें गयो अव
 तार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ ए मंदिर ए मालियां रे
 ॥ सु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ सु० ॥ सु० ॥
 रस रस खारां जेरशां रे ॥ सु० ॥ लागे ते चित्त
 मजार ॥ सु० ॥ १८ ॥ सु० ॥ यौवन करवत धार ज्युं
 रे ॥ सु० ॥ विरहिणी नारीने रोष ॥ सु० ॥ सु० ॥
 नाहविहणी कामिनी रे ॥ सु० ॥ पग पग पामे ते
 दोष ॥ सु० ॥ १९ ॥ सु० ॥ कालजे कउं मेली गयो
 रे ॥ सु० ॥ निशिदिन रही ते धुखाय ॥ सु० ॥ सु० ॥
 नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ सु० ॥ उलवे पियु घर आ
 य ॥ सु० ॥ २० ॥ सु० ॥ ते दिन क्यारें देखवुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ करस्यां मननी रे वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ प्राण
 जीवन मुळ देखीने रे ॥ सु० ॥ कीजें शीतल गात्र ॥
 ॥ सु० ॥ २१ ॥ सु० ॥ दिनकर पहेलां जगते रे ॥ सु० ॥
 जो प्रीतम घरे आय ॥ सु० ॥ सु० ॥ तो माणसनी
 उलमें रे ॥ सु० ॥ जीववुं ते जुगताय ॥ सु० ॥ २२ ॥

॥ सु० ॥ जो कदि नाव्यो जगते रे ॥ सु० ॥ तो जइ गि
 रिजंपाय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ सु० ॥ १३ ॥
 ॥ सु० ॥ कंत विना शुं जीववुं रे ॥ सु० ॥ कंत विना
 किशुं हेज ॥ सु० ॥ सु० ॥ कंत विना शुं मालवुं रे ॥
 ॥ सु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ सु० ॥ १४ ॥ सु० ॥
 डुःख जर ठाती फाटती रे ॥ सु० ॥ रही नथी शकती
 गेह ॥ सु० ॥ सु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे ॥ सु० ॥
 दाजी रही बुं तेह ॥ सु० ॥ १५ ॥ सु० ॥ विरहिणी
 एम विलपे घणुं रे ॥ सु० ॥ वसंतसिरी ससनेह ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ नयणें आंसू रेडती रे ॥ सु० ॥ जा
 ए ज्युं जाइव मेह ॥ सु० ॥ १६ ॥ सु० ॥ वसंतसि
 री एम पाठवे रे ॥ सु० ॥ चुकने संदेशा जिवार ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ नारीनुं डुःख सांजली रे ॥ सु० ॥
 बोव्यो मन्ही तिवार ॥ सु० ॥ १७ ॥ सु० ॥ खोलो
 कमाड सहेलीयां रे ॥ सु० ॥ मूकी मननी राड ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ उलखियो पति आवियो रे ॥ सु० ॥
 हर्षे उवाज्यां कमाड ॥ सु० ॥ १८ ॥ सु० ॥ निजष
 तिनुं मुख देखतां रे ॥ सु० ॥ कामिनि हर्षे जराय ॥
 ॥ सु० ॥ सु० ॥ हर्षे विनोद जे उपनो रे ॥ सु० ॥ पु

स्तकें लखियो न जाय ॥ सु० ॥ ३९ ॥ सु० ॥ वेधकने
मन वल्लही रे ॥ सु० ॥ ए पंचदशमी ढाल ॥ सु० ॥
॥ सु० ॥ लब्धे बीजा उल्लासनी रे ॥ सु० ॥ कही रुज
रंग रसाल ॥ सु० ॥ ३० ॥ सु० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे प्रीतम घरे आवतां, वाथ्यो नवलो नेह ॥
मुह माग्या पासा ढल्या, अमियें वूग मेह ॥ १ ॥
नव मल्लव थइ अंगना, वसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम
सरोवर जीलतां, वानो वधियो देह ॥ २ ॥ दंपति दो
रंगें मल्यां, सुख नर कीधी वात ॥ दुःख दोहग दूरें गयां,
प्रगटी ते सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पियु सांजलो,
धुरथी कहुं ससनेह ॥ तुमें चाव्या लंकाजणी, पाठ
ल वीती जेह ॥ ४ ॥ में तुमने पहेलां कही, ते सं
जारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज
हाथ ॥ ५ ॥ ते वांत आवी आगलें, जव तुमें चा
व्या लंक ॥ तव नृप मुऊ केडें पड्यो, जाणीने निःशं
क ॥ ६ ॥ मेहेमंतो ऊवट थइ, गज शिर नाखे धूल ॥
तिम नृप दासी मोकली, करवा मुऊ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ एतो नथडीरो मोती अजब बन्यो ॥ ए देशी ॥

एतो दासी मुऊ कने मोकली, एतो लेइ नूखण साच ॥
 साहेब मोरा हे ॥ एतो चूवा रे चंदन अरगजा, ए तो सीं
 स्मे जरिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांजलो प्रीतम मा
 हरा ॥ एतो देवा मुऊने लांच ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥
 ॥ एतो मीठी साकर सूखडी, एतो मीठा मेवा डाख
 ॥ सा० ॥ एतो ठाब जरी वली मोकली, एतो मीठी
 आंबा साख ॥ सा० ॥ २ ॥ सां० ॥ एतो जरतारी साजू
 जेजा, एतो आण्यां नव नवां चीर ॥ सा० ॥ जाणे
 वाघा सुरनारी तणा, एतो सोहे तेजमें हीर ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ जेटणां, एतो मूक्यां
 चेठी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेटी मुऊ आवीने, तुम
 जेट करे जूनाथ ॥ सा० ॥ ४ ॥ सां० ॥ एतो दासी कहे
 वली मुऊने, तुमें सांजलो हरिबल नार ॥ सा० ॥
 एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो थइ धणो प्यार ॥
 सा० ॥ ५ ॥ सां० ॥ एतो जे दिन तुम घरे आविया, ए
 तो जोजन करवा सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी.
 तुमें चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लगार ॥ सा० ॥
 ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो ते दिनथी तुमने घणुं, मिलवा
 नी राखे दूंश ॥ सा० ॥ एतो एहमें जूठ न जाणजो,
 तुम सत्य करि कहुं सुंस ॥ सा० ॥ ७ ॥ सां० ॥ एतो

(११ ए)

तव समजी हुं चित्तमां, नृप जाण्यो लंठ कुजात ॥
 सा० ॥ एतो पियु मुऊ रीश चढी घणो, उठीने में दीधी
 लात ॥ सा० ॥ ७ ॥ सां० ॥ एतो कुंदीपाक कखो घणो, करे
 जीवित सुधी याद ॥ सा० ॥ एतो नाठी दासी नृप
 कने, जइ कीधी ते फरियाद ॥ सा० ॥ ए ॥ सां० ॥ एतो
 सांजली नृप विछखो थयो, एतो समजी रह्यो मनमां
 हि ॥ सा० ॥ एतो बलि राणीने मोकली, लेइ नूख
 ए सार उठाह ॥ सा० ॥ १० ॥ सां० ॥ एतो तव में अ
 वसर उलख्यो, एतो राणीने राजी कीध ॥ सा० ॥
 एतो कपटें मासनो वायदो, करी राणीनें शीख में
 दीध ॥ सा० ॥ ११ ॥ सां० ॥ एतो आज ते मास
 पूरो थयो, एटले तुमें आव्या घेर ॥ सा० ॥ एतो फ
 लीया मनोरथ माहरा, मुऊ वाधी पुण्यनी शेर ॥
 सा० ॥ १२ ॥ सां० ॥ एतो पियु तुम मंदिर आव
 ते, मुऊ शीयल रह्युं अखंम ॥ सा० ॥ एतो नृपति रह्यो
 हवे फूलतो, पडि तेहना मुखमें खंम ॥ सा० ॥ १३ ॥
 सां० ॥ एतो इत्यादिक पियु आगलें, कही रमणीयें
 मांमी वात ॥ सा० ॥ एतो हरिबलें सघलुं सांजली,
 गुण लीधो स्त्रीनो विख्यात ॥ सा० ॥ १४ ॥ सां० ॥ हवे
 हरिबल कहे निज प्यारीने, मुऊ बेहेन ठे वाडी मझ

॥ सा० ॥ एतो लंकागढथी लावियो, एतो परणी म
 होटी सलज्ज ॥ सा० ॥ १५ ॥ सां० ॥ तव वसंतसि
 री हरखित थइ, जलें आवी माहारी बेहेन ॥ सा० ॥
 एतो वारे वासे पामगुं, गुण महोटी थयो सुख चेन
 ॥ सा० ॥ १६ ॥ सां० ॥ हवे वसंतसिरी सहेलीगुं, गइ वा
 डीयें तेडवा तेह ॥ सा० ॥ कुसुमसिरी निज बेहेनने, घणे
 हेतें लावी गेह ॥ सा० ॥ १७ ॥ सां० ॥ एतो वसंतसिरी
 ने पाय पडी, दीधो कुसुमसिरीयें लाग ॥ सा० ॥
 नखने मांस ज्युं प्रीतडी, तिम बिहुने थयो एक राग
 ॥ सा० ॥ १८ ॥ सां० ॥ एतो दोगुंडक सुरनी परें, दो
 नात्रीगुं जोगवे जोग ॥ सा० ॥ एतो हरिबल जीव दया
 थकी, सुख पाम्यो पुण्य संयोग ॥ सा० ॥ १९ ॥ सां० ॥
 एतो इणिपरें जे दया पालशे, एतो सांजली गुरु उपदेश
 ॥ सा० ॥ एतो हरिबलनी परें पामशे, एतो नवोनव सुख
 विशेष ॥ सा० ॥ २० ॥ सां० ॥ एतो सोहम गुह
 परंपरा, तस गादीयें हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो सा
 ह अकब्बर बूजवी, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥ सा० ॥
 ॥ २१ ॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य पंमित सोहता, धर्म
 विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनदर्थ
 जग जयो, एतो पंमित मांहे सराय ॥ सा० ॥ २२ ॥

॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, गणि
 कमल विजय तस चात ॥सा०॥ एतो तस शिष्य ल
 क्ष्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रियामें सरात ॥ सा०
 ॥ १३॥सां० ॥ एतो तस शिष्य केशर अमर दो, एतो
 जगमां कर्म फिपंत ॥ सा० ॥ एतो सूरज चंड तणी
 परें, दोय बंधव तेज दीपंत ॥ सा० ॥ १४॥ सां०॥
 एतो तस पद पंकज किंकरु, एतो लब्धिविजय उ
 जमात्र ॥सा०॥ शोले ढालें पूरो कखो, एतो बीजो उ
 छास रसाल ॥सा०॥ १५॥सां०॥ इति श्रीजीवदयापरे
 हरिबलमह्वीरासे लंकागमनागमनसंबंधः संपूर्णः॥१॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामयमें प्रभु, मगन रहे निशिदीस ॥
 केवलज्ञान प्रकाशयी, देखे विश्व जगीश ॥ १ ॥ ज्यो
 तिवधूना संभमें, निशिदिन रह्यो लपटाय ॥ तस पद
 पंकज हुं नमुं, वांमानंदनराय ॥ २ ॥ वचनामृत
 रस वरसती, कविमन महितल जेह ॥ नवपल्लव क
 विने सदा, करती माता तेह ॥ ३ ॥ चरण कमल नमुं
 तेहनां, बाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गातां ध्यातां सदा,
 मुळ मन वंछित होय ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना,
 चरण कमल नमि तास ॥ तस सान्निध हरिबल तणो,

पनणुं त्रीजो उद्धास ॥ ५ ॥ उत्तमना गुण गावतां,
 होवे उत्तम आप ॥ खाइनी खेले नावतां, जाये मल
 सेंताप ॥ ६ ॥ धर्मना रसिया जे हशे, ते सुणशे एक
 मन्न ॥ धर्म कथा गुण लेयने, मानशे ते दिन धन्न
 ॥ ७ ॥ नारे करमी बापडा, सुं जाणे ते धर्म ॥ अवगुण
 ले निंदा करे, साहसुं बांधे कर्म ॥ ८ ॥ ते माटे नावुक
 तुमें, अवगुण मत व्यो कोय ॥ कीजें व्यवसाय धर्म
 नो, तेहमें खोट न होय ॥ ९ ॥ इम जाणी तुमें सांज
 लो, हरिबल केरुं चरित्र ॥ धर्मकथा सुणतां अकां,
 आतम होवे पवित्र ॥ १० ॥ हवे सुणजो नविका तमें,
 हरिबल केरी ख्यात ॥ लंका जइ आव्या पठी, शी शी
 निपजी वात ॥ ११ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ आरा मोहोला ऊपर मेह, ऊबूके वीजली ॥ हो लाल
 ऊबूके वीण ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल पहेरे वेश ते, जाणी
 प्रेह्णनो हो लालके ॥ जाणी प्रेह्णनो ॥ दूरथी आवतो
 जाणे, नरेश ते लेह्णनो हो ॥ नरेण ॥ एहवो वेश ब
 णाय, प्रजातें निकळ्यो होण ॥ प्रजाण ॥ लोकनी दृष्टें
 जणाय, ते हरिबल अटकळ्यो होण ॥ तेण ॥ १॥ चहुटे
 वहेतां जुहार, जुहार ते सहु करे होण ॥ जुण ॥ ह

खिलने मनोहार, करे सहु जली परें हो० ॥ क० ॥
 इम करतां दरबार, ते मांहे आवियो हो० ॥ ते० ॥ जिहां
 बेठी परखद त्यांहे, उवांहे जावियो हो० ॥ उ० ॥ १॥
 नृपजन आदि परज, ते ऊठी सहुं मली हो० ॥ ते० ॥
 एक नृप विना बीजी परज, ते मनमें थड रली हो० ॥
 ॥ ते० ॥ पूढे मांहोमांहे, ते कुशलनी वारता हो० ॥
 ते० ॥ पाठो उत्तर हरिबल, दे दिल धारता हो० ॥ दे० ॥ ३॥
 प्रगटी होलीनी जाल ते, नृपना मन्नमें हो० ॥ नृ० ॥
 लागी अंगो अंग, अंगीठी तन्नमें हो० ॥ अं० ॥ वलि
 मंत्री कालसेननुं, कालजुं नीकळ्युं हो० ॥ का० ॥ श्याम
 वदन थयुं तास, ज्युं श्याम जाजन तलुं हो० ॥ ज्युं० ॥ ४॥
 जाणे ऊहाज निमळा, थयुं दरिया वच्चें हो० ॥ थ० ॥
 तिम हरिबलने देखि, दो नृप मंत्री लचे हो० ॥ दो० ॥
 कारीमो रंग देखाडी, कहे मुखथी घणुं हो० ॥ कहे० ॥
 हरिबल देइ आदर, दे नृप बेसणुं हो० ॥ दे० ॥ ५॥ आ
 गत स्वागत कीध, घणी हरिबल तणी हो० ॥ घ० ॥
 पूढे सोज समाचार, नृप हरिबल जणी हो० ॥ नृ० ॥
 कहो हरिबल तुमें लंका, गढ जणि किम गया ॥ हो० ॥
 ग० ॥ राय बिनीषण केरा, समाचार किम थया हो० ॥
 स० ॥ ६॥ तव हरिबल ते खडग, करे लेइ जेटणुं ॥ हो० ॥

क० ॥ राय बिजीषणे मोकल्युं, ए तुम चेटणुं हो०
 ॥ ए० ॥ हवे हरिबल कहे सांजलो, स्वामी तुम जणुं
 हो०॥स्वा० ॥ लंका गढना समाचार, श्या कहुं तुम
 घणुं हो०॥श्या०॥७॥ विकटा मारग आटां, कांटा ते
 घणां हो०॥कां० ॥ पंथें वहेतां आकरो, लाग्यो नही
 मणा हो०॥ला०॥ इम करतां दुःख सहेतां, पूगो जल
 निधी हो०॥पू०॥ कालामंजर जल नखां, खारो जलोदधी
 हो० ॥ खा०॥७॥ लांबो पहोलो सहस, इसी शोजन
 कह्यो हो० ॥ इसी० ॥ ते परमाणें महोटी, सागर
 जल लह्यो हो० ॥ सा० ॥ नाना महोटी मगर,
 मज्ज ते दीसता हो०॥म०॥ वाघने सिंद्दने रूपें, दीसे
 हिंसता हो० ॥दी०॥ ए॥ चिहुं दिशिमें जल पूरी, दीसे
 वसुमती हो० ॥दी० ॥ माणस पंखीमात्र न, दीसे ए
 क रती हो० ॥ दी० ॥ जलना जोढ चले ते, हिमा
 ला टूक ज्युं हो० ॥ हि० ॥ उठलें जल असमान,
 शिखा चढे हूं कहुं हो० ॥ शि० ॥ १० ॥ जाणो
 अषाढो मेह, ज्युं दरियो गाजतो हो०॥ ज्युं० ॥ शूर
 सुजटनां मान, ते दूरें जांजतो हो० ॥ ते० ॥ एहबो
 जलधि जयंकर, देखी बिहामणो हो० ॥ दे० ॥ जल
 में पगलुं देतां, मन धूज्यो घणो हो० ॥ म० ॥ ११ ॥

(१३५)

पण शुं करीयें स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥
 कठिण कछुं तिहां मन, संजारी रामने हो० ॥ सं० ॥
 पाठुं केम वलाय जे, कामें नीकव्यो हो० ॥ के ॥
 ॥ जे० ॥ मरण कबूल कछुं पण, पाठो नवि टव्यो
 हो० ॥ पा० ॥ १३ ॥ उत्तमना जे बोल, ते गजदंत
 नीसखा हो० ॥ ते० ॥ ते पाठा किम उंसरे, पंचमें
 उच्चखा हो० ॥ पं० ॥ पंचनी साखें बोल, जे बोली
 यो ते ढले हो० ॥ जे० ॥ ते नरनारी जीवतां, मूआं
 मां नले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥ वयण चूकां ते मान
 बी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ इहजव परजव
 कार, गयो तस जिन जणे हो० ॥ ग० ॥ इम जाणीने
 स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ वाव्यो जलमे
 जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वलि
 एक हरिबल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥
 कव्पित वात करी कंहे, ते सहु सांजले हो० ॥ ते० ॥
 जलमें गयो ज न आयो, ते हुं मन संवरी हो० ॥
 ते० ॥ तब एक राखस आव्यो ते, साहामो जल तरी
 हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ ऊंचो तो जाणीयें सप्त ए, ता
 ड प्रमाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥ लांबो होठ ते जाणी
 यें, वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दंता लोढा ताल,

(१२६)

करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली दो
ट, दीये धसी जलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे
आंखो दो उंमी, चूंमी कुंगर दरी हो० ॥ जूं० ॥ माथुं
महोटुं ते जाणीयें, हलपळे धूसरी हो० ॥ ह० ॥ मा
थे काबरा केश, ते जाणीयें जांखरां हो० ॥ ते० ॥
दंताली समा दांत, ते विरला आकरा हो० ॥ वि०
॥ १७ ॥ तांडसमा दो हाथ ते, राखस सोहना हो०
॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा सोहना
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें उंमो, कूवो फूडनो
हो० ॥ कू० ॥ थंज समान दो चरण ते, राखस जूं
मनो हो० ॥ ते० ॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, ज
यंकर जैरवो हो० ॥ ज० ॥ जाणे यमनो बंधव, प्रग
ट्यो अजिनवो हो० ॥ प्र० ॥ क्रोधानलनी जाल ते,
मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्टहास,
ते कर दो पठाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
साप ज्युं गंध, गंधाय डुर्वातनो हो० ॥ गं० ॥ उ
दरथी निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥
एहवो बिहामणो राक्षस, ते साहामो मर्त्यो हो०
॥ ते० ॥ एक तो जलधि बीजो, राक्षस देखी उदयो हो०
॥ रा० ॥ २० ॥ म्हें तव जाणियो जूनो, पूर्वज आवियो

(१२७)

॥ हो० ॥ पू० ॥ विवानीवच्चो, घर्घरणो जगाडियो हो०
 ॥ घ० ॥ राज्यतुं काम सधावा में, तव बुद्धिकरी हो० ॥
 में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राखतने म्हें फरी हो० ॥
 रा० ॥ ११ ॥ आवो मामा जुहार, जाणेज तुमने करे हो०
 ॥ जा० ॥ द्यो अजेदान ते मामा, जाणेजने जलि परें
 हो० ॥ जा० ॥ स्वामी तुम्ह प्रसादथी, बुद्धि ए ऊकली हो०
 ॥ बु० ॥ राजी थयो तव राखस, वाणी सुणी नली हो०
 ॥ वा० ॥ १२ ॥ पूढे राखस जाणेज, तुं इहां किहां थ
 की हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते मुऊ
 कहे बकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा,
 मुऊ लंका तणो हो० ॥ मु० ॥ दाखवो मारग माह
 रे, काम ठे तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ १३ ॥ जावुं
 ठे नृप कारज, शीघ्र उतावलो हो० ॥ शी० ॥ तव रा
 खस कहे जाणेज, दीसे तुं बावलो हो० ॥ दी० ॥
 मीयां वादे चावे, चणा तुं ए नवुं हो० ॥ चा० ॥ श्यो
 तुऊ आशरो जाणेज, लंका में जवुं हो० ॥ लं०
 ॥ १४ ॥ चूसी ले तुऊ राखस, धोले दी ठतां हो० ॥
 धो० ॥ किम तुऊ पूरवें जाणेज, लंका गढ जतां हो०
 ॥ लं० ॥ जेहथी निपजे काम, ते तेह करी शके हो०
 ॥ ते० ॥ बांध्यो गदो खाइ, बुधां त्यां बहु बके हो०

(१३७).

॥ बु० ॥ १५ ॥ चमक्यो चित्तमें स्वामि उखाणो सांजली
हो० ॥ उ० ॥ घर सरखि नहि यात्र, ए वात में अ
टकली हो० ॥ ए० ॥ तव में पूढ्युं स्वामी, राखसने
ते बलि हो० ॥ रा० ॥ मुजने बतावो मामा, लंका
कूंची गली हो० ॥ लं० ॥ १६ ॥ किणिविधें मामा
जवाये, लंका गढ हुं लहुं हो० ॥ लं० ॥ तव राखस
कहे नाणेजं, सांजलो हुं कहुं हो० ॥ सां० ॥ त्रीजा
उल्लासनी ढाल, ए पहेली उच्चरी हो० ॥ ए० ॥ लब्धि
कहे नवि सांजलो, आगें उजम धरी हो० ॥ आ० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे राखस कहे मन्त्रिने, सांजल तुं नाणेज ॥
जो जावुं तुज लंकमें, तो करि कहुं ते हेज ॥ १ ॥
अगनी तुज काया दही, कर तुं रक्षा हब ॥ ते रक्षा
पडी लेइने, सोपुं लंका तब ॥ २ ॥ इणिविधि तुं
लंका लहे, बीजी विधि नवि कांथ ॥ जो तुज बलें
लंका गयो, तो तुज राक्षस खाय ॥ ३ ॥ राक्षस वय
ए ते सांजली, में धाद्युं मनमांहि ॥ जीवित जो वाहालुं
करुं, तो पण न रहे कांहि ॥ ४ ॥ रमणी राज्य ने क
दिते, तन धन जे बलि प्राण ॥ एतां करे अलखाम
णां, वाक्यवढलना जाए ॥ ५ ॥ ते जाएनी तुम कार

(१२९)

जें, कीधुं मरण कबूल ॥ इंधण काष्ठ मेली करी, करवा
मांमथुं सूल ॥ ६ ॥ चिता रची दोयजण मिली,
कीधो अग्नि प्रगट्ट ॥ सलगाडी चय चिहुं दिशें, प्रगटी
जाल त्यां ऊट्ट ॥ ७ ॥ तिण विचमें तुम किंकरें, ऊं
पापात ते कीध ॥ देह दही तुम कारणें, करवा काज
प्रसिद्ध ॥ ८ ॥ सामधर्मि यइने प्रभु, कीधी काया
होम ॥ घृत मधयुं ते परजली, जालज ऊठी धोम ॥
॥ ९ ॥ तेहनी जे रहा यइ, बांधी पोटकी ठार ॥
राखस ले गयो लंकमें, करवा मुळ उपगार ॥ १० ॥
राखस ते लेइ पोटकी, नृप नजरें करि नेट ॥ राय
बिजीषणें पूठियुं, शी करि तें ए नेट ॥ ११ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ नटियाणीनी देशी ॥ हवे राखस कर जोडी हो
कहे आलस छोडी रायने, ए तो लंकापति अवधार ॥
हुं जव सायर कंठें हो उपकंठें ठेक ते जायने, मुळ
बलियो आगार ॥ हवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेठो
हो में दीगो नियंथी पणो, ए तो सायर पेले पार ॥
हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण कहि मामो
नणो, तुमें आवो मामा जुहार ॥ हवे० ॥ २ ॥ में
पण पूठियुं तेहने हो तुं केहने नरोसे इहां रह्यो, तव

(१३०) .

बोझो पंथी सार ॥ राय बिजीषण केरुं हो ठे शरणुं
 जलेरुं मुज कह्युं, ए तो जाणेज बोझो विचार ॥
 ॥ हवे० ॥ ३ ॥ तुम दरिसणनो अर्थी हो करि कर
 थी बारनी पोटकी, मुज बांधी दीधी एह ॥ कहे रा
 खस तुम सयणे हो तुम नयणे मूकि ए पोटकी,
 ए तो जेट करी में तेह ॥ हवे० ॥ ४ ॥ इम राखस
 गयो कहिने हो ए तो वहीने फरी निज थानकें, तव
 चिंतवे बिजीषण चित्त ॥ विस्मय पाम्यो मनमें हो
 राय जनमें ठोडी जाणके, ए तो राखसनी पोटकी
 दीत ॥ ५ ॥ एम हरिबल कहे नृपने हो घणे
 यल्लें नस्म करें ग्रही, मुज ठांटे अमृत तोय ॥ ए
 आंकणी ॥ विद्याबलें करी शुद्धो हो मुज कीधो जी
 वतो देखतां, तिणे दीधो फरि अवतार ॥ सनमान्यो
 मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुज कीधो
 बहु उपगार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुज पूछे हो
 ए गुं ठे तें काया दही, मुज मांमी कहो विरतांत ॥
 तव में लंकापतिने हो कहि यतनें मांमीने सही, एतो
 आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नग
 री हो ठे सघरी सघला देशमें, ए तो महोटी पुण्य
 पवित्र ॥ मदनवेग त्यां राया हो सुखदाया सघला

नरेशमें, ए तो सोहे प्रजामें ठत्र ॥ ए० ॥ ७ ॥ अंग
 जने परणावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें प्रचु, एतो
 मांमयो उहव रंग ॥ तिण कारण नृप मेले हो मंत
 नेले सघलाचुं विचु, एतो तेडी ते आमंग ॥ ए० ॥
 ॥ ए ॥ तेणें तुम आमंत्रवा हो ए तो मंत्रवा हर्ष हि
 पे धरी, तिणे तेडवा मूक्यो मुज ॥ ते माटे तुमें वे
 जा हो ए तो लगननी पहेला परवरी, तुमें आवोज्युं
 गडे स्रुज ॥ ए० ॥ १० ॥ तव लंकापति बोळ्यो हो मन
 बोली कहे मुज आगलें, तुं सांजल पंथी सुजाण ॥
 नें किम तिहां अवराय हो न जवराये निज जागलें,
 नो किम थाय प्रयाण ॥ ए० ॥ ११ ॥ ते माटे
 तुमें कहेजो हो मुज मुजरो लेजो दिन प्रतें, तिहां
 वेठा विशाला मऊ ॥ खड्गनी आ सहनाणी हो गुण
 वाणी मूकी तुम प्रतें, ए तो सघले कामें सकऊ ॥
 ॥ ए० ॥ १२ ॥ एम कहिने बिजीषणें हो मुने नूष
 ग देइ जडावनां, वली पूत्री पण मुज दीध ॥ तुम
 रसादे सांइ हो प्रचु मुज अंतर मांइ जावना,
 मुज कीधी बिजीषणें वृद्ध ॥ ए० ॥ १३ ॥ घणे आमं
 रें कसीने हो जस वरीने मुज बोलावियो, निज पुत्री
 सहित महाराज ॥ वलि निज सेवक साथें हो ए

तो मूकी हाथे जलावियो, मुऊ लंकापति गुन आ
 ज ॥ ए० ॥ १४ ॥ विद्याबलें पंथ काप्यो हो सुख
 व्याप्यो पलकमें ठूकडे, एतो जब थइ प्रभुनी लहेर ॥
 रजनी मध्य प्रदीपें हो निज नगरी समीपें रूखडे, ए
 तो मूकी बलिया घेर ॥ ए० ॥ १५ ॥ हुं पण मंदिर आ
 यो हो सुख पायो प्रभुनी महेरथी, हुंतो जे गयो बीहुं ठ
 वेय ॥ फलि मुऊ चाकरी लंका हो देइ मंका आयो तुम
 लहेरथी, हुं तो लंकालाडी लेय ॥ ए० ॥ १६ ॥ ए सहना
 णी खड्गनी हो जे निपनी सर्गनी तुम जणी, एतो मूकी
 विनीषणें साच ॥ बलि तुमने कर जोडी हो मान
 मोडी प्रणिपत करी घणी, तुम सपगो कह्यो ए मुख
 वाच ॥ ए० ॥ १७ ॥ ए सहनाणी देखी हो मुने
 पेखी आव्या जाणजो, एतो अमने विवाहमांहि ॥
 बलि तुम सेवक जांखे हो मुख वचनें दाखे ते मा
 नजो, तुम मदनवेग उठांहि ॥ ए० ॥ १८ ॥ इणि प
 रें व्यतिकर सघलो हो नृप आगल मांमि परगलो, ए
 तो सपगो मडि कह्यो ॥ ते नृप सांजली वाणी हो मन
 जाणी हरिबल अटकव्यो, ए तो साहस धैर्य धरेय ॥
 ए० ॥ १९ ॥ सघली परषदा निसुणि हो मन हर
 णि सांजली वातडी, ए तो हरखित परषद होय ॥ ध

न्य करणी हरिबलनी हो गयगमणि लंका जातडी, ए
 तो परणी आणी सोय ॥ ए० ॥ १० ॥ नृप पण थ
 यो मन राजी हो गुज देइजाजी वधामणी, ए तो ह
 रिबल कीध प्रसन्न ॥ घणे आमंवरें करीने हो हरिब
 लने काध पहेरामणी, ए तो मूक्यो निज आसन्न ॥
 ए० ॥ ११ ॥ गोखें बेठी देखे हो पियु आवतो पेखे
 रंगशुं, थइ नारी दो उच्चास ॥ दंपतीनी दो दृष्टि हो थइ
 सुधावृष्टि चंगशुं, ए तो पद्मोती सघली आश ॥ ए० ॥
 ॥ १२ ॥ हवे हरिबल मतवालो हो ए तो दो गोरीनो
 नाहलो, ए तो सुख विलसे संसार ॥ प्रेम सुधारस
 प्यालो हो एतो पियुने वालो बाहलो, ए तो सफल करे
 अवतार ॥ ए० ॥ १३ ॥ जुवो नविया प्राणी हो मन
 जाणी जीव ऊगारीयो, एक जलचर जीव जो मल्ल
 ॥ तो तस पुण्य प्रजावें हो गुज जावें जनम सुधारि
 यो, लह्यो मल्ली लल्लि सुलल्ल ॥ ए० ॥ १४ ॥ हुं बलिहा
 री तेहने हो ठे जेहने लेख्या धर्मनी, तस होवे सुर
 नर दास ॥ त्रिजा उच्चासनी पूरी हो बीजी ढाल स
 नूरी मर्मनी, ए तो पनणी लब्धि सुवास ॥ ए० ॥ १५ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे नृपें हरिबल नारीनी, डविधा मूकी दूर

॥ जाग्यो जव मंदिर धणी, लाज्यो चोर मजूर ॥१॥
 तिम नृप समजी मन्नमें, हरिबलशुं करे प्यार ॥ हरि
 बल पण सेवा करे, नृपनी ते दरबार ॥ २ ॥ हरिब
 लनी थइ वातडी, नगरि विशाला मऊ ॥ लंका लाडी
 लावियो, परणी लऊ सुलऊ ॥ ३ ॥ ते वातो श्रव
 णें सुणी, कालसेन परधान ॥ परजले मनमें पापी
 यो, हरिबल सुणि जस वाण ॥४॥ दिनकर देखी घूक
 ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं,
 त्युं वले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो
 एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा,
 तल अरि अंधज होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थ
 यो, हरिबलने ते डुष्ट ॥ ठल ताके ठलवा नणी,
 कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेठो मालीये, मद
 नवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, बेठो प्रण
 मी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन की
 राड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥९॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ इण सरोवरीयांरी पाल, आंवा दोय राउला ॥ ल
 लना ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबलनां वयण, वखाण ते
 नृप करे ॥ ल० ॥ खागी त्यागी निकलंक के, शूर सु

नट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ
 गयो ॥ ल० ॥ माहरुं काज सुधारवा, बली नस्म थ
 यो ॥ ल० ॥ १ ॥ काढ्यो आपणे दो जणें, मल्लीने
 स्त्रीवती ॥ ल० ॥ टाढे पाणीयें वेगली, खस काढी ह
 ती ॥ ल० ॥ पण ते साहामुं लाडी, लंका लेइने ॥ ल० ॥
 आव्यो आपणे. मंदिर, मंका देइने ॥ ल० ॥ १ ॥ तो में
 जाण्यो ए पूरण, जाग्य बली घणो ॥ ल० ॥ जामा
 ता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो
 सहनाणी खड्गनी, नृपशुं मत करी ॥ ल० ॥ लंका
 पतिनी माहरी, दो राखी सरजरी ॥ ल० ॥ ३ ॥
 बुद्धि अकल परपंच ए, में दीगो सही ॥ ल० ॥ सुद
 नवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि कही ॥ ल० ॥ काल
 सेनने पगथी, मांमी माथा लगें ॥ ल० ॥ प्रगटी जा
 ल ते सांजली, जागी अंगो अंगें ॥ ल० ॥ ४ ॥ बोव्यो
 मंत्री ताम, कहे रीशें बली ॥ ल० ॥ जलि तुम अ
 कल जे नरपति, हरिबलनी कली ॥ ल० ॥ शुं तुमें
 जाणो स्वामी, ए धूरतनी कला ॥ ल० ॥ मानो स
 धलुं धोलुं ते, दूध करी जला ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारे
 मिंग असंबंधने, अणघडीयां वली ॥ ल० ॥ गजनुं
 कलिंग तेमांहे, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दी

गो चंड, अमासनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिबल
 नी ए मानजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ छुं
 ज्ञाणी प्रभु वयण, वखाण करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दं
 नीनां सयल, चरित्र लहुं अमें ॥ ल० ॥ जे परदेशी
 लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ नाटक चेटक जाणे,
 वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच,
 करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडीयें
 कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फरे अइ ठेल
 सा ॥ ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, धोबी बेलसा ॥
 ॥ ल० ॥ ८ ॥ बेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥
 ॥ ल० ॥ मिंगे मिंग चलावे ते, लोक जाणे खरी ॥
 ॥ ल० ॥ साची जूठी करे ते, मुखें न लगाडीयें ॥
 ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन बिगाडीयें ॥
 ॥ ल० ॥ ए ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सह्य करी मान
 जो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार एं, हरिबल जाणजो
 ॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥
 ॥ ल० ॥ अणमलती ए वात, घडी एणें बुत्रिका ॥ ल० ॥
 ॥ १० ॥ ए तो कोशक धूर्त, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥
 परण्यो नारी ए उत्तम, मथ्यम जातडी ॥ ल० ॥ ना
 म लिये निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥

किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥
 श्री दुनियामें खोट, पडी हती पुरुषनी ॥ ल० ॥ लं
 कापतियें कीध, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवकुल
 नाग विहेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
 कीडाने, राजसरे ते अणमिले ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उ
 खाणो सांजली, नृप तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम ह
 रिबलनी वातो ए, साची ठारजो ॥ ल० ॥ जो लंका
 पति केरो, जमाइ साचो हरो ॥ ल० ॥ तो तुम
 नोतरी मंदिरें, जमवा तेडरो ॥ ल० ॥ १३ ॥ तेहने
 मिशें जइ आपणें, नारी दो जोइयें ॥ ल० ॥ उत्तम
 मध्यमनी गति, दो कुल सोहियें ॥ ल० ॥ इणि परें
 मंत्रियें नृपना, कान जंजेरीया ॥ ल० ॥ नृपना मन
 ना कषाय, जुजंग ठंढेरीया ॥ ल० ॥ १४ ॥ जूठ कु
 बुद्धी मंत्रीयें, चकमक पाडीयो ॥ ल० ॥ हरिबल उ
 पर धेपनो, सिंह जंगाडीयो ॥ ल० ॥ इणि परें मंत्रि
 यें हरिबल, नी कुबुद्धियें ॥ ल० ॥ नृप मन फेरव्युं जा
 ए, हरिबल रुद्धियें ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम नृप मंत्री
 दो जण, मलि गोमो रचे ॥ ल० ॥ जमण मिशें दो
 नारीने, जोवा नृप लचे ॥ ल० ॥ एहवो संकेत करे
 जिहां, नृप मंत्री मली ॥ ल० ॥ तिण अवसर तिहां

आव्यो, अजाणे हरिबली ॥ ल० ॥ १६ ॥ आगत
 स्वागत हरिबल, नी ते नृप करे ॥ ल० ॥ बांह पसारी
 आवो, आघा आसण धरे ॥ ल० ॥ बेठा एकण गा
 दीयें, हरिबल नृप जिहां ॥ ल० ॥ मुखथी साकर
 घोलतो, बोळ्यो मंत्री तिहां ॥ ल० ॥ १७ ॥ हवे करे
 मंत्री हरिबलनी, खुश मशकरी ॥ ल० ॥ हरिबल
 हर्षे एहवी, बोली उच्चरी ॥ ल० ॥ कहो हरिबल
 तुमैं लंका, लाडी लाविया ॥ ल० ॥ राय बिजीषण
 केरा, जमाई जाविया ॥ ल० ॥ १८ ॥ पण एक नो
 तरुं तेहनुं, तुम कने मागीयें ॥ ल० ॥ लेखावटनी
 लागति, ते नवि जांगीयें ॥ ल० ॥ लाखनी बगसिस
 कोडि, हिसाब न चूकीयें ॥ ल० ॥ ठे संसारमां री
 ति ए, ते किम मूकियें ॥ ल० ॥ १९ ॥ गडदानो पण
 जाग, नथी कोइ मूकता ॥ ल० ॥ तो किम मूकयुं जम
 ण, अमारुं ठतावतां ॥ ल० ॥ बाइना कात्यामां जा
 ग ते, कोइनो पाड ठे ॥ ल० ॥ इम हरिबलने मंत्री,
 कहे हस्त चाड ठे ॥ ल० ॥ २० ॥ इणि परें हास्य कु
 वूहल, नी करी मंत्रीयें ॥ ल० ॥ समज्यो मनमां
 हरिबल, सांजली गंत्रीयें ॥ ल० ॥ पापी कुमति मं
 त्रीयें, चकमक फेरियो ॥ ल० ॥ जमण तणो मिश

काढी, नृपने जंजेरियो ॥ ल० ॥ ११ ॥ एहेवा डुष्ट
 कुबुद्धि ते, कां जगें अवतस्था ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें
 कां न, गया जे गलि नखा ॥ ल० ॥ परनिंदा करत्त
 फरे, डुष्ट सुसाधनी ॥ ल० ॥ खावे उखर निंदकी,
 काक ज्युं वाधनी ॥ ल० ॥ १२ ॥ तप जप क्रिया क
 ष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥ ते मरि जाये नरग, नि
 गोदें ए वकी ॥ ल० ॥ नारे कर्म जीव, कह्या ए जि
 नवरें ॥ ल० ॥ इह जव परजव सुखने न, देखे जली
 परें ॥ ल० ॥ १३ ॥ पारकां ठिड् जूवे ते, निंदकी
 बोकडा ॥ ल० ॥ देवकीवंशें ते ऊपजे, ए फल रोक
 डां ॥ ल० ॥ समजू यज्ञे जीव, करे निंदा पारकी ॥
 ॥ ल० ॥ ते जीवने किम लेती नथी, चंदा बारकी ॥
 ॥ ल० ॥ १४ ॥ इम हरिबल मन समजी, खुणस रा
 खी रह्यो ॥ ल० ॥ खेलहुं दाव ते अवसर, आवे जे
 लह्यो ॥ ल० ॥ गुडथी मरे जे जीव ते, विषथी न
 मारीयें ॥ ल० ॥ ए उखाणो लोक, कहे ते संचारियें
 ॥ ल० ॥ १५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल बो
 लीयो ॥ ल० ॥ ब्यो प्रभु लंकाजोजन, वचन ए खो
 लीयो ॥ ल० ॥ नगरि समेत जे परखद, लेइ पधा
 रजो ॥ ल० ॥ करहुं टहेल ते सगति, सारु अवधा

रजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, हरि
बल उठीयो ॥ ल० ॥ पण हवे नृपने मंत्रीने, जगदीश
रूषीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल ए, त्रीजी पू
री थई ॥ ल० ॥ लब्धि कहे नवि सांजलो, जे आगें
जई ॥ ल० ॥ २७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल घरे आवियो, बेठी नारी दोय ॥
आवतो दीठो नाहने, ऊठी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निश
जर बेठां रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सरोवर
जीलतां, निगमे राति टकोल ॥ २ ॥ हरिबल कहे प
टनारीने, सांजल प्रिया मुऊ वात ॥ लंका लाडी ले
हाणुं, ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच समहें मंत्रीयें,
माग्युं नोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो
हुं आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सां
जल मुऊ ॥ एक वार नृप तेडतां, लाज वली नही
तुऊ ॥ ५ ॥ नकटी देवी देवलें, सरड पूजारो जेम ॥
लोक उखाणो जे कहे, प्रीतम ठो तुमें तेम ॥ ६ ॥
वलि शी शक तुम धाड्यो, प्रीतम बीजी वार ॥ ते हुं
इम जाणुं अहुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ देखी पे
खी कूपमें, दीपक लेइ पडो दह ॥ नृप मंत्री मीतुं

चवे, ते तमें मानो सच्च ॥ ७ ॥ मीठां बोलां मान
 वी, केम पतीजां जाय ॥ नीलकंठ मधुरं लवे, साप
 सपुढो खाय ॥ ८ ॥ तेहनी ठे ए जातडी, नृप मंत्री
 दो लंठ ॥ चूक करी तुमने प्रचु, करशे स्त्री दो जंम
 ॥ ९ ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ विसास ॥
 एतां कबहि न धीरियें, जो वंठो तन आश ॥ १० ॥
 जेष्ठ जुजंगम जामिनी, महेत ने नृपाल ॥ ए पांचने जे
 धीरजो, ते नर पामजो काल ॥ ११ ॥ यम वेण्या दा
 सी नदी, अग्नि जूआरी काल ॥ ए साते नही आप
 णां, प्रीतम निज संजाल ॥ १२ ॥ तव प्रीतम बलतुं
 कहे, हरिलंकी निसुणेह ॥ जो मुज दीहा पाधस,
 गुं नृप करशे तेह ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ प्रीतमसेंती वीनवे ॥ अथवा हो मत बोले सा
 जनां ॥ ए देशी ॥ हरि लाल एहवो जबाप ते धीवरें,
 वसंत सिरीने दीध ॥ मोरालाल ॥ भोजननी जे जो
 इयें, मेली सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार
 निपाई रसवती, जेहवी कही सूर्यपाक ॥ मो० ॥ एक
 जो कवल तेपेटमां, उतरे तो चढी रहे ठाक ॥
 ॥ मो० ॥ २ ॥ हारे लाल सागर देव पसायथी,

नोतख्यां नगरी लोक ॥ मो० ॥ नृपने पण दिये
 नोतरुं, श्रीफल लेइ करे ठोक ॥ मो० ॥ सा० ॥
 ॥ ३ ॥ हां० ॥ शाला करि चउ चिहुं दिशैं, पंचरंगी
 बनात ॥ मो० ॥ जरतारी मेरा किया, केडें बांधि क
 नात ॥ मो० ॥ सा० ॥ ४ ॥ हां० ॥ नर नारीनी पांत
 मां, मांमया सोवन थाल ॥ मो० ॥ रतन कचोलां
 शाकनां, मांमया जाक ऊमाल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ५ ॥
 ॥ हां० ॥ कुमर कुमारी पांतमां, तिहां पण भांमया
 थाल ॥ मो० ॥ बारें दरवाजे जइ, तंडुल ठवे उज
 माल ॥ मो० ॥ सा० ॥ ६ ॥ हां० ॥ जोजन वेलाने
 समे, हरिबलें तेडां कीथ ॥ मो० ॥ राउ राणा नग
 री जना, बेठी पांत प्रसिद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ ७ ॥
 ॥ हां० ॥ ठयल ठबीला ठोगालुआ, रसिया वालम
 जेह ॥ मो० ॥ जांग अमल चढाइने, खाइम फेरा
 तेह ॥ मो० ॥ सा० ॥ ८ ॥ हां० ॥ प्रीसे पांतें प्रीस
 णां, सुखडी एकविश जाति ॥ मो० ॥ मेवा मीठी
 जातना, प्रीसे पांतिमां खांति ॥ मो० ॥ सा० ॥ ९ ॥
 ॥ हां० ॥ घेवर पेंडा मोतीया, कसमसीया कर्णसाई
 ॥ मो० ॥ ऊरमरीया सिंह केसरी, लाखणसाइ स
 वाई ॥ मो० ॥ सा० ॥ १० ॥ हां० ॥ सिरा सुंहाली

लापशी, गुंदवडां गुंदपाक ॥ मो० ॥ मर्कि जलेबी हे
 समी, मेहेसु पतासां चाक ॥ मो० ॥ सा० ॥ ११ ॥
 ॥ हां० ॥ व्यंजन केही जातिनां, खारां खाटां तिरक
 ॥ मो० ॥ स्रडका ने ब्रडका घणा, हिंग वघाखा
 हविख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १२ ॥ हां० ॥ मांहोमांहि
 ते एकमना, मांमे रसिया वाद ॥ मो० ॥ अचला
 सवला जूऊता, करे ते नोजन स्वाद ॥ मो० ॥ सा० ॥
 ॥ १३ ॥ हां० ॥ शूर सुजट रण खेतमें, ज्युं लडे कर
 ता चोट ॥ मो० ॥ तिम रसिया लडे नोजनें, कर
 मुखगुं करे दोट ॥ मो० ॥ सा० ॥ १४ ॥ हां० ॥
 शाल दाल ने घृतसरा, चाली ज्युं नदीनीक ॥ मो० ॥
 रसिया राजन जन जम्या, स्वादे करीने ठीक ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ १५ ॥ हां० ॥ सारनी नीपाइ रसवती, जे
 हमां कांइ नधि दुःख ॥ मो० ॥ नगरी जन सहुको
 जमी, काढी सघली जूख ॥ मो० ॥ सा० ॥ १६ ॥
 ॥ हां० ॥ कपूर कस्तूरी वासिवा, जलगुं करे मुख
 शुद्ध ॥ मो० ॥ पान सोपारी एलची, तंबोल दे मन
 शुद्ध ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥ हां० ॥ पहेरामणी सहु-
 ने करी, नर नारी बिस्तार ॥ मो० ॥ मुझानी करी द
 क्षिणा, वरताव्यो जयकार ॥ मो० ॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ हां० ॥ जशपडहो वजडावियो, नगरीमांहे विख्या
 त ॥ मो० ॥ वातडी चाली चिहुं दिशें, हरिबल केरी
 ख्यात ॥ मो० ॥ सा० ॥ १९ ॥ हां० ॥ हवे सुणजो
 रसीया तुमें, जमता जे थड वात ॥ मो० ॥ नृपने
 प्रिसवा नारी दो, आवी शोजित गात ॥ मो० ॥ सा०
 ॥ २० ॥ हां० ॥ नृप जमतां नूली गयो, निरखी दो
 स्त्री रूप ॥ मो० ॥ विकलेंडिय थयो राजवी, पडियो
 मोहने कूप ॥ मो० ॥ सा० ॥ २१ ॥ हां० ॥ काम
 ज्वर व्याप्यो घणो, नृपने तेह अथाह ॥ मो० ॥ नृ
 प जाणे दो कर ग्रही, ले जावं मंदिरमांह ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ २२ ॥ हां० ॥ मूर्छांगत थयो राजवी, मोह
 बाण लागं असेच ॥ मो० ॥ विषयारसने कारणें,
 पडियो गडदापेच ॥ मो० ॥ सा० ॥ २३ ॥ हां० ॥
 नृपने घाली पात्राची, ले गया निजं दरबार ॥ मो० ॥
 जाणें जमने मंदिराचें गयो जाणें संसार ॥ मो० ॥
 ॥ सा० ॥ २४ ॥ हां० ॥ पूरव जवनी वेरणी, वसंत
 सिरी दो नारि ॥ मो० ॥ चित्त हथुं हरिणाहीयें, नृ
 पनुं उताथुं वारि ॥ मो० ॥ सा० ॥ २५ ॥ हां० ॥ वैद्य
 बोलाव्या तिहां कणें, पकडी जुए बांढ ॥ मो० ॥ वै
 द्य बिचारा थुं करे, करक ते कालजामांह ॥ मो० ॥

॥ सा० ॥ १६ ॥ हां० ॥ आय उपाय करे घणा, टै
की न लागे कोय ॥ मो० ॥ जेणें दीधी वेदना, दूर
करेशे सोय ॥ मो० ॥ सा० ॥ १७ ॥ हां० ॥ जो जो
करणी करमनी, नृप थयो ते असराज ॥ मो० ॥
त्रीजा उद्वासनी ए कही, लब्धें चोथी ढाल ॥ मो० ॥
॥ सा० ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जाणा जोषी जाण जे, परबंधी कहे आय ॥ मु
ख पोथां दूरें रह्यां, जोर न चाव्युं कांय ॥ १ ॥ तिण
समै मेहर मंत्रवी, फरि कीधो उपचार ॥ कोकशास्त्र
तणै बलें, नृपने कस्यो करार ॥ २ ॥ मेहरमंत्री जस
लह्यो, नगरी विशाला मज्ज ॥ वाह वाह सहु को क
हे, मंत्री महोटी सकज्ज ॥ ३ ॥ मेहर चिंते चित्तमें,
नृपने न वली शान ॥ न वले ज्युं खटमासनी, पाध
री पूंढडी श्वान ॥ ४ ॥ वली केताश्क दिन गया, नृ
पने करतां केलि ॥ वली नृप कामें व्यापियो, वसंत
श्रीनी चढि वेलि ॥ ५ ॥ तिण अवसर नृप मंत्रीने,
तेढाव्यो ते छुष्ट ॥ ते पण आव्यो नृप कने, काल
सेन ते कुष्ट ॥ ६ ॥ प्रणमी नृपने मंत्रवी, वतो प्रांसे
नजीक ॥ नृप कहे मंत्री आगलें, सांज मंत्रा ॥

॥ ७ ॥ प्यारी प्राण ते छे गइ, पिरसण आवि जिवार ॥
 र ॥ तन मन सुध जुली गयो, मंत्री देखत वार ॥
 ॥ ८ ॥ मन लाग्युं ते ऊपरें, जिम मन केतकी व्रंग ॥
 तिम मंत्री तुं जाणजे, रह्यो मुऊ जिव तस संग ॥ ९ ॥
 लागी लगन ललना तणी, गुं कहुं मंत्री तुझ ॥
 लालच रहे मुऊ तेहनी, सुण तुं मंत्री गुझ ॥ १० ॥
 ते माटे मंत्री तुमें, कोइक करो विचार ॥ बल बल
 केल ते केलवी, मेलवो ते दो नार ॥ ११ ॥ मानिश
 तुऊ उपगारडो, आइश नही गुण चोर ॥ जीवित
 सुधी ताहरी, अहनिश राखिश होर ॥ १२ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ढोगलो ॥ मा
 रुजी ॥ ए देशी ॥ हवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल का
 लसेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांजलो स्वामी नाथ,
 प्रजाना पाल ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु गुं तुमें एहने ते
 डी, आधो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं
 सोंपी, आपोपुं गुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दनने
 गेम, मरव रंगी देयवो ॥ सा० ॥ तिम हरिबलने प्र
 भु मि ॥ जश लेयवो ॥ सा० ॥ बलि गर्दन पासें
 शा ॥ करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दूध

ने व्याल, उठेरो जनहरो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुमें इणि
 परें राजन साचो, उखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदे
 शी अजाण ते दुर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥
 ए तो वेरी तुमचो प्रगव्यो, रुधिरने शोषवा ॥ सा० ॥
 तुम हृदये नारीनी जाल ते, घाली दोषवा ॥ सा० ॥
 । ३ ॥ ए तो ते माटे प्रचु, जगतो वैरी ठेदीयें ॥
 । सा० ॥ ए तो काल कंटकने ठेदतां, धर्म न वेदीयें
 । सा० ॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोठे लगाडो एहने ॥
 । सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीगो तेहने ॥
 । सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो
 नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धू
 री सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो जाणजो स्वामी महो
 गे ठे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगें मारे मिं
 ।, असंबंध जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रचु तुमें मा
 णी साची, जाणि सवी कही ॥ सा० ॥ पण हुं जाणुं
 णे कल्पित, वात करी सही ॥ सा० ॥ ए तो एहनो
 गो विश्वास, करो तुमें राजवी ॥ सा० ॥ ए तो एह
 ॥ खाधामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥
 । तो शी लंका शी लंका, गढना नाथनी ॥ सा० ॥
 । तो समुद्र उल्लंघी जावुं, ते मुश्कल साथनी ॥ सा० ॥

ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाढो नावतो ॥ सा० ॥
 ए तो महोटा मगरमड्ड, मुखें गली जावतो ॥ सा० ॥
 ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोदुं, जोर ते फावतुं
 ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं
 जावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने
 आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंडहास्य, खड्ग दो
 लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धा
 र्शने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो
 न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो
 जाणजो हरिबल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम
 आगल फूव्यो ए वृद्ध, चोलो मोमर थइ ॥ सा० ॥
 ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकीयें, स्वामी यमघरे ॥
 ॥ सा० ॥ ए तो काढीयें आजड ठेट ते, दूरें जली परें
 ॥ सा० ॥ ए तो हवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धें चाल
 शो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, सार्थें
 मालशो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांजल,
 मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हवे आज पठें कदि आण
 द, लोपुं ताहरी ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करी
 तें, मंत्री ते खरी ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठी माहरे
 मनडे सहचरी ॥ सा० ॥ ११ ॥ पण ते हवे मंत्री

(१४ए)

वात, घडो कोइ अजिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं
जेहथी कार्य, सीजे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिब
लनो जे शय्य ठे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो अण
णे मंदिर रामा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥
तव मंत्री बोव्यो नृपने, प्रणमी डुष्ट ते ॥ सा० ॥
एह वातनुं बीडुं ठबुं बुं, हुं यइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥
तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल् ठरे ॥
॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीजे, काम ते कल
करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हवे ते माटे तुमें सजा, मध्यें
बेसीने ॥ सा० ॥ तुमें यम नोतरवा हरिबल, मूको विह
सिने ॥ सा० ॥ जव बीडुं ठबरो हरिबल, ते चित्त राखवुं ॥
सा० ॥ तव बाली जाली खाख, करीने नाखवुं ॥
सा० ॥ १४ ॥ विण पइरो आपणि दूर, विराध ते जा
यरो ॥ सा० ॥ तव शशिवयणी मृगनयणी, आप
णी थायरो ॥ सा० ॥ नवि शोजे वायस कंठें, रयण
नो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो ठे तुम लायक नाथजी,
नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन हरख्यो महि
पति मंत्रिनी, वाणी सांजली ॥ सा० ॥ ए तो जली
बुद्धि बताइ ते, सुखदायीमां जली ॥ सा० ॥ इम दो ज
णे मलीने परठ, कख्यो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नो

તરવાનો મિશ કરિ, હરિબલ યંત્રીયે ॥ સાળા ॥ ૧૬ ॥ ૬
 મ ડુર્મતિ દીધિ નૃપને, કાલ સેન તે ॥ સાળ ॥ હરિબ
 લને ચુકવા દો જન, રહે લય લીન તે ॥ સાળ ॥ પણ
 એતું ન જાણે મૂરખ, દો જણ સૂટ તે ॥ સાળા ॥ કિણ ઠા
 ણે કિણે કડણે, બેસશે કંટ તે ॥ સાળા ॥ ૧૭ ॥ જીવલાલચિ
 યો થઈ આકરિ, બાંધી મોહની ॥ સાળા ॥ કોડા કોડી સાગ
 ર સત્ત્વર, લહે ડુઃખ ડોહની ॥ સાળ ॥ લાખ ચોરાશી
 જીવા જોનિમેં, જીવ તે બહુ રહે ॥ સાળ ॥ પણ તો
 હિ પાપ જોગવતાં, સાટું નવિ વહે ॥ સાળ ॥ ૧૮ ॥
 એ તો કાટું કાટ વહે જિમ, લોહને જાજને ॥ સાળા ॥
 તેમ જીવને કર્મે કર્મ, વધે સૂસાઝને ॥ સાળા ॥ એ તો પર
 નિંદા પરડોહ, કરે જે આકરા ॥ સાળ ॥ તેણેં દીધાં
 શિવપદ વારણેં, આડાં જાંચરાં ॥ સાળા ॥ ૧૯ ॥ એ તો
 કંચન કામિની એ દો, સારુ બાપડા ॥ સાળ ॥ જીવ
 બાંધેં નિકાચિત કર્મે, ગત્તીનાં કાપડાં ॥ સાળ ॥ જી
 વ જટકે વાર અનંતી, નરક નિગોદમાં ॥ સાળ ॥ એ
 તો સૂઝા બાદર થઈ ફરે, રાજ તે ચૌદમાં ॥ સાળ ॥
 ૨૦ ॥ એ તો કંચન કામિની સારુ, જીવ ચંદ્રાય છે ॥
 સાળ ॥ એ તો સૂઝવ પરજવ ચોર, થઈ દંદાય છે ॥
 સાળ ॥ જિમ મીની દેખે દૂધ, ન દેખે માંગડી ॥ સાળ

॥ तिम जीव न देखे करणी, आगें अधलाकडी ॥
 सा०॥११॥ इम जाणतो जीव चेतें नहिं, कर्मना जोर
 थी ॥सा०॥ ए तो ज्ञान क्रिया दो नवि गमे, कर्म कळो
 रथी ॥ सा०॥ इम मंत्री बांधे निकाचित, कर्मने काल
 ते ॥सा०॥ ए तो हस्बिल उपर द्वेष, धरे चंमाल ते ॥
 सा० ॥ १२ ॥ विण खुने मंत्री वांसे थयो, दीशाशू
 ल ते ॥ सा०॥ पण नृप मंत्रीना सुखमें, पडशे धूल
 ते ॥सा०॥ कोइ वातें पापी बीहे नही, मंत्री व्याल
 ते ॥ सा० ॥ पण अंतें जातां वहेशे, पाणी ढाल ते
 ॥ सा०॥ १३ ॥ ए तो साहिबने घरे जोतां, लेखुं एक
 ठे ॥सा०॥ रूडी जूंमीनो जोनारो, प्रनू नेक ठे ॥सा०
 ए तो काल प्रस्तावने योगें, करणी संजालशे ॥सा०॥
 तव दूधने जलनो वेहरो, करि देखाडशे ॥सा०॥१४॥
 एक समकित विना जे जीवने, घोर अंधार ठे ॥ सा०
 निशि दिन घन घांती कर्मनो, जर्म वधार ठे ॥ सा०
 पुद्गल परावर्तन काल, अनंतो तें करे ॥ सा० ॥
 जप तप क्रिया कष्ट करे ते, सवि निःफल वरे ॥ सा०
 ॥ १५ ॥ जेहने घट न्यंतर समकित, केरी ज्योत ठे ॥
 सा०॥ तस अनुभव सुरमणि वंठित, सुख उद्योत ठे
 ॥सा०॥ तस जोगें ज्योति सरूपीनुं, रूप ते उलखे ॥

(१५१)

सा० ॥ चिदानंद ते आनंदमें लहे, शिव सुख जिन
लखे ॥ सा० ॥ १६ ॥ जेहनी करणी शुन महोटी, ठे
संसारमें ॥ सा० ॥ तस वास कह्यो जगवानें, सुख आ
गारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुन पांचमी, त्री
जा उद्वासनी ॥ सा० ॥ ए तो लब्धि कहे जवि सुण
जो, आगें सुवासनी ॥ सा० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इणि परें परठ करी जलो, नृप मंत्री जण दौय ॥
पहोता निज निज मंदिरे, चूप धरी मन सोय ॥
॥ १ ॥ बीजे दिन नृप मंत्रियें, किधी कचेरी सार ॥
चामर ठत्र बिराजते, बेठो तखत उदार ॥ २ ॥ ठ
त्रिश राजकुली मली, वड वडा ते सामंत ॥ खान
उमराव ते आविया, परखदमें माहंत ॥ ३ ॥ ह
खिल पण तिहां आवियो, बेठो नृपनी संग ॥ एक
ण गादी बिराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥
हवे नृप तेडुं मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महा
जन समसत मेलियां, मूकी निज तलार ॥ ५ ॥ वड व
खती व्यवहारिया, माही माना जेह ॥ माही मति ठे
जेहनी, मलिया ते गुणगेह ॥ ६ ॥ दानें मानें आगला,

दीसंता जडधार ॥ धनद जंमारी सारिखा, राखे वड
व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ठठी ॥

॥ लूहारण जायो दीकरो ॥ सोजागी हे ॥ आयो मास
वसंत के ॥ लाल सोजागी हे ॥ ए देशी ॥ माहाजन
साथें सहू मली ॥ सो० ॥ पहेरी जला, शणगार के
॥ ला० ॥ निज निज घरनां जेटणां ॥ सो० ॥ ले आ
या दरबार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सातशें
॥ सो० ॥ शंकर शंभु सगाल के ॥ ला० ॥ सूरचंद
सूरो सूरजी ॥ सो० ॥ सोजागी सुंदर साल के ॥
॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीठो मालजी ॥ सो० ॥ मा
एक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेठो जगसी जीवणो
॥ सो० ॥ जगजीवन जगमाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥
थानो थोजण थावरु ॥ सो० ॥ जाणो जीमो जवा
न के ॥ ला० ॥ कींको केशव करमसी ॥ सो० ॥ क
ल्याण करमी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देव
सी ॥ सो० ॥ दीपो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ प्रेमो
प्रेमजी पेमसी ॥ सो० ॥ पूरो ने पुण्य पाल के ॥
॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ ना
थो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो रवजी रंगजी ॥

॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥ ६ ॥ वाघो
 वेलो वालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद के ॥ ला० ॥
 हेमो हीरो हर्षसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरचंद के ॥
 ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गलालजी ॥ सो० ॥ गांगो
 ने गोपाल के ॥ ला० ॥ गणजी गणेश ने गांगजी ॥
 ॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ ख
 बो खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥
 ॥ ला० ॥ तारो तुलशी त्रीकमो ॥ सो० ॥ थंवरकने
 त्रिभुवन के ॥ ला० ॥ ९ ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥
 ॥ सो० ॥ शामो ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिव
 शी शामजी ॥ सो० ॥ साचो साकर वृंद के ॥ ला० ॥
 ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहारिया ॥ सो० ॥ मलिया
 माहाजन साथ के ॥ ला० ॥ जेट जली नृपने करी ॥
 ॥ सो० ॥ बेठा प्रणमी नाथ के ॥ ला० ॥ ११ ॥ इणि
 परें सहु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेव्या वर्ण अठार के
 ॥ ला० ॥ बेठी परखद सहु मली ॥ सो० ॥ नृपने
 करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हवे नृप अवसर
 जोइने ॥ सो० ॥ बोव्यो वयण विचहु के ॥ ला० ॥
 बीडुं यम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समह के
 ॥ ला० ॥ १३ ॥ रे सामंतो सांजलो ॥ सो० ॥ बीडुं

ग्रहो तुम एह के ॥ ला० ॥ यमने नोतरुं देइने ॥
 ॥ सो० ॥ तेडी आवो तेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वैशा
 ख छुदि पांचम लगें ॥ सो० ॥ तेडी लावे जेह के ॥
 ॥ ला० ॥ माहरी रीऊ ते पामरो ॥ सो० ॥ मनोवं
 तित ससनेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे बीडुं ग्रहो
 ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित
 लगें हुं तेहनी ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥
 ॥ ला० ॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांजली ॥ सो० ॥
 सजा थई विलह के ॥ ला० ॥ परषद मौन करी
 रही ॥ सो० ॥ जाणे तेलमें बूडी मद्ध के ॥ ला० ॥
 ॥ १७ ॥ निज निज मुख सामुं जुवे ॥ सो० ॥ परषद
 थइ मन चूर के ॥ ला० ॥ उपडे को नहिं जीजडी ॥
 ॥ सो० ॥ जाणे गले देवाणो सिंदूर के ॥ ला० ॥
 ॥ १८ ॥ परषद जाणे मन्त्रमें ॥ सो० ॥ ए छुं बोव्यो
 राय के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सो० ॥ क
 हो किम तिहां जवराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ सहि
 तो ए परजले सहि ॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फरेय के
 ॥ ला० ॥ लूंटी धनने लेयरो ॥ सो० ॥ यमनुं मसलूं
 करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥ आगें तो नृप जाणतो ॥
 ॥ सो० ॥ मिनि कंकण पदेखां केदार के ॥ ला० ॥

पण काम पडे मीनी मुषकने ॥ सो० ॥ मुढने मिश
 करे संहार के ॥ ला० ॥ ११ ॥ ए दृष्टांत ते नृपें क
 खो ॥ सो० ॥ मांमथो बिडानो ए पास के ॥ ला० ॥
 कोइकनी ते फरी दिशा ॥ सो० ॥ लुसी मुसी लेशे
 तास के ॥ ला० ॥ १२ ॥ इम समजी मनमें रही ॥
 ॥ सो० ॥ सहु परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ स्व
 र्ग मटा मट जोइ रही ॥ सो० ॥ पण उत्तर कोइ न
 देय के ॥ ला० ॥ १३ ॥ तव नृप बोख्यो घरकीने ॥
 ॥ सो० ॥ ए तौ लमणे नृकुटी चढाय के ॥ ला० ॥
 ग्रास खाउ तुमें अम तणा ॥ सो० ॥ हवे बेठा कान
 ढलाय के ॥ ला० ॥ १४ ॥ जो अम ग्रासनो खप क
 रो ॥ सो० ॥ तो तुमें ग्रहो बीडुं एह के ॥ ला० ॥
 नहितर को मारग ग्रहो ॥ सो० ॥ अन्य मूलकनो
 होय जेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ इणि परें नरपति बोलि
 यो ॥ सो० ॥ थरकी परखद त्यांहि के ॥ ला० ॥ चम
 क्यां सहुनां शीश ते ॥ सो० ॥ नृप मूकशे ठे यम
 ज्यांहि के ॥ ला० ॥ १६ ॥ मावित्र ये दुःख ठोरुने ॥
 ॥ सो० ॥ कहो तस कुण राखणहार के ॥ ला० ॥
 वाड जो गजशे चीजडां ॥ सो० ॥ किहां होवे तास
 पुकार के ॥ ला० ॥ १७ ॥ हवे सुणजो नवियण

(१५७)

तुमें ॥ सो० ॥ जे बोलशे मंत्री काल के ॥ ला० ॥
ए कहि लब्धि ठी सही ॥ सो० ॥ ए तो, त्रीजा उद्धा
सनी ढाल के ॥ ला० ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

॥ अक्सर लहि कालसेन ते, बोझो तव कर जोडि ॥
अरज सुणो प्रभु माहरी, कहुं तुम आलस गेडि ॥
॥ १ ॥ यम नोतरवा नाथजी, बीडुं ग्रहावो जेह ॥
देखत मरवा कुण ग्रहे, मरणनुं बीडुं एह ॥ २ ॥
गोरनुं बीट जे नवि लहे, गुं जाणो ते यम्म ॥ गज
आखर जंबुकशिरें, नाखी स्वामि तुम्म ॥ ३ ॥ देव
रूप जे मानवी, ते तेहनां ए काम ॥ गुं जाणो शश
कीडलां, यम राजानुं ताम ॥ ४ ॥ आगें काम सुधा
रियां, लंका केरां जेह ॥ ते जाशे यम तेडवा, हरि
बल ते गुणगेह ॥ ५ ॥ साहासिक शिरोमणी, सध
जे कामें सज्ज ॥ वीरबल केरो पुत्रडो, ते करशे तुम
कज्ज ॥ ६ ॥ इणि परें परखद देखतां, महा दुष्ट ते काल ॥
शीशथी चरण उतारीने, दूर रह्यो ते व्याल ॥ ७ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ काली ने पीली वादली राजिंद ॥ ए देशी ॥ हवे हरि
लने नृप कहे, लाला सांजल जीवन गुज्ज ॥ यमरा

(१५७)

जाने तेडवा, लाला सोंपुं ए बीडुं तुझ ॥ १ ॥ पंथी
डा रे यमपंथ पंथें वहे तुं वेगें हो प्यारा लाल ॥ ए
आंरुणी ॥ माहरुं काज सुधारवा, लाला तुज विण
बीडुं न कोय ॥ स्वारथीया सहु को मळ्या, लाला
रोटीतोडा तुं जोय ॥ २ ॥ पं० ॥ जगदीश जेहमें साच
ठे, लाला पाळे ते निजवेण ॥ परडुःख नांगे जे पल
कमें, लाला साचा कहियें ते सेण ॥ ३ ॥ पं० ॥ वयण
विलुक्षां मानवी, लाला अगनी ऊंपे समशान ॥ दो पखें
उझल दाखवा, लाला तन मन करे खुरबान ॥ ४ ॥
पं० ॥ शिर उठे एक वयणथी, लाला रूडी जूंमी गाल ॥
सुख दुःख न गणे मन्नमें, लाला वयण तणा प्रति
पाल ॥ ५ ॥ पं० ॥ श्रेणिक ज्युं वयणें करी, लाला पर
णावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने, लाला कीधो
जमाइ जीय ॥ ६ ॥ पं० ॥ तेमाटे हरिबल तुमें, लाला
बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदिं पांचम लगें, लाला
तेडी यम घरे आण ॥ ७ ॥ पं० ॥ इम नृपवाणी सां
जली, लाला हरिबल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं
करुं, लाला तो न रहे मुज मान ॥ ८ ॥ पं० ॥ जा
मगरी सलगाडीने, लाला डुष्ट रह्यो ते दूर ॥ जरी
गोलिमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ ९ ॥

(१५ए)

॥पं०॥ कोइक जवनो नीमज्यो, लाला मंत्री वैरी व्या
ल ॥ मरणनुं बीडुं ग्रहावतां, लाला कीधो महोदो जंजा
ल ॥ १० ॥ पं०॥ तो गुं थयुं प्रचु माहरो, लालाजो
ढे पाधरो तेह ॥ तास पसायें कालने, लाला जीव
थी टालुं ढेह ॥ ११ ॥ पं० ॥ तो मुजरौ खरो माह
रो, लाला जग सर चाले वात ॥ महिषी नीत ते म
हिषीने, लाला पाईने करुं ख्यात ॥ १२ ॥ पं० ॥
एम विचारी चित्तमें, लाला हरिबल उज्यो त्यांति
नृपने प्रणमी हाथगुं, लाला बीडुं ग्रहुं ते उठांति
॥ १३ ॥ पं०॥ तव परजा कर जोडीने, लाला विनवे
त्यां महिनाथ ॥ हरिबलने उगारीयें, राज बांह करी
दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण वि
शेषें मानो हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी
कीडी उपरें, राज तृण पर कुवार ॥ ते उखा
णो नाथजी, राज मैलो ते ॥ १५ ॥ रा०॥ ए
परदेशी प्राहुणो, राज वायु ऊकोल ॥ आप
णी नगरी जमाडीने, राज देखाज्यो रंग चोल
॥ १६ ॥ रा० ॥ ते नरने किम दूवियें, राज गुण ग
ण रयण करुं ॥ देव करीने पूजीयें, राज होवे लाज अ
खंम ॥ १७ ॥ रा०॥ ते माटे तुमें नाथजी, राज दी

जें वंछित दान ॥ प्रजा मली सहु वीनवे, राज मा
 ने एतुं मान ॥ १८ ॥ रा० ॥ ए बीडुं यमदूतनुं, राज
 द्यो बीजानें जोय ॥ तुम सुखने जे वांढरो, राज
 कररो काज ते सोय ॥ १९ ॥ रा० ॥ परियागतना
 माल जे, राज खाता हरो तुम जेह ॥ ते किम पा
 ठा देयरो, राज काम पडे पग तेह ॥ २० ॥ रा० ॥
 तव नृप रीष चढाश्ने, राज बोव्यो नृकुटी चढाय ॥
 अणबोली परज ते, राज समजो नही तुमें
 कोय ॥ २१ ॥ रा० ॥ तव परजा ठानी रहि, राज
 समजो ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, रा
 ज सुगुणने कररो आंहि ॥ २२ ॥ रा० ॥ ये नृप
 पर्जने शीखडों, राज करतो क्रोध अपार ॥ आव्यो
 चांपलदे शिरें, राज मालव केरो जार ॥ २३ ॥ रा० ॥
 ए उखाणो दाखवी, राज पर्जने कीध विदाय ॥ वि
 लखी यश्ने परज ते, राज उठी मन उलजाय ॥
 ॥ २४ ॥ रा० ॥ चहुटे चहुटे चाचरें, राज मलीयां
 लोक अनेक ॥ टोर्ने टोर्ने सहु मली, राज करतां
 वात विवेक ॥ २५ ॥ रा० ॥ कहे केतांश्क मानवी,
 राज नृप बिगड्यो स्त्री देख ॥ राखे हरिबल उपरें,
 राज ते लालचयी द्वेष ॥ २६ ॥ रा० ॥ कहे केता

(१६१)

इक मेंतलो, राज कालसेन विनिष्ट ॥ साची जूगी ते
करे, राज काग परें ते उच्चिष्ट ॥ २७ ॥ रा० ॥ नृप
मंत्री दो पापीया, राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरि
बलने दुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ २८ ॥
रा० ॥ इणि परें साजन सहु मलि, राज वार्ता थोकें
थोक ॥ करता दाहारव करे, राज सघली नगरीनां
लोक ॥ २९ ॥ रा० ॥ पण जो प्रभु ठे पाधरो, राज
मटशे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम सातमी, राज
त्रीजा उध्वासनी ढाल ॥ ३० ॥ रा० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबलने नृप कहे, सांजल तुं मुक्त जीव ॥
पंथ ग्रहो यम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥
तव हरिबल बोव्यो हसि, सांजलो स्वामी खल ॥
कामें शे ते आवशे, शिवने न चढे फूल ॥ २ ॥ तिम
तुम कारजमें प्रभु, पागो देशे कूण ॥ दशरा अश्व न
ढोडियो, कुण देशे वश तूण ॥ ३ ॥ सेवक जे साचो
हशे, ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम जाणता,
धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठ्यो तुरत, हरि
बल करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते
निज धाम ॥ ५ ॥ निज नारी दो आगलें, हरिबलें मागी

शीख ॥ यमने नोतरवा जणी, जावुं ठे सहि इख ॥ ६ ॥
 नृपनुं कारज साधवा, बीडुं ग्रह्युं ठे एह ॥ यम तेडी
 नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥ ७ ॥ ते माटे तुमें
 शीख द्यो, तुमें ठो चक्रु दोय ॥ होशे मेलो पुण्यथी,
 लिखित जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अहूं,
 तुम दो नारी हब ॥ दान सुपात्रें पोषजो, करजो
 पुण्य कयब ॥ ९ ॥ देव गुरु समरी सदा, धरजो नव
 पद ध्यान ॥ पूजा नक्ति प्रनावना, करजो रहि साव
 धान ॥ १० ॥ कुल मर्यादें चालजो, धरजो श्री जि
 नधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पद्म दो, राखजो निज गृ
 ह नर्म ॥ ११ ॥ शीख जलामण इणि परें, निज ना
 रीने कीध ॥ पंथ जणी संबाहिने, गमन जणी पग
 दीध ॥ १२ ॥ पियुनां वयण ते सांजली, नारी दो अकु
 लाय ॥ जाणे रंजा ढलि पडी, तिम नारी मूर्छाय ॥ १३ ॥

॥ ढाल आठमीं ॥

॥ राम जणे हरि उठीयें ॥ ए देशी ॥ चेतन लहि
 नारी तदा, पछव पियुनो ते साही रे ॥ गदगद कंठ
 स्वें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुमें
 गह रे, म करो मरणनो राह रे, ठो प्रातम सुख ठा
 ह रे, जीजें जोवन लाह रे, होवे ज्युं नारी उहाह

रे, होवे गजबनो दाह रे, नारीनो कुण नाह रे ॥ १ ॥
 ॥ प्रीतम प्यारा रे सांजलो ॥ ए आंकणी ॥ नाह वि
 हूणी ते नारीने, न गमे वात सोझाह रे ॥ जीवित सुधी
 धखती रहे, जाणे इंटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
 दाह रे, विरहनी जाल असाह रे ॥ पीडे मदन अ
 थाह रे, न रही . शके ते क्यांह रे ॥ २ ॥ प्री० ॥ ए
 सुख मंदिर मालियां, जरियां ठे धन धान्य रे ॥ कंत
 विना. ते कामिनी, जाणे अछूणुं ते धान रे ॥ न
 दिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे, कोह्या
 काननुं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री
 विरही ते जाण रे ॥ ३ ॥ प्री० ॥ दे दोष कुमरी दो बै
 वने, श्यो तुज कीधो अपराध रे, विण खूने मुज कंत
 ने, यमगृह मूके असाध रे, शी तें कीधी ए व्याध
 रे, काढि ते को जवनी दाध रे, पाडे वियोग अगाध
 रे, पीडे संतने साध रे ॥ ४ ॥ प्री० ॥ तेहने मुख म
 हिपुत्री पडो, जेह पाडे ठे वियोग रे ॥ गण्या दिनमां
 तें नाथजी, कां नथी लेतो बलिजोग रे, जाये सध
 लाना रोग रे, जांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सध
 ला ते लोग रे ॥ ५ ॥ प्री० ॥ कंत विना ते विजोग
 णी, पामे दुःख अपार रे ॥ विरहानलनी ते बाफ

मां, सीजी रहे तनसार रे, होवे बबूलाकार रे, खावे
 थावे ते ठार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे शकुन
 श्रीकार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन
 ते नार रे ॥ ६ ॥ प्री० ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं,
 ध्यान रहे तस जीव रे ॥ तंडुलमञ्ज परें कर्मने, बांधे
 निकाचि सदीव रे, शमतारस नवि पीव रे, मोहनी
 कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन आजीव रे, चिन्ह
 ए विरही लहीव रे ॥ ७ ॥ प्री० ॥ एणि परें प्यारी कं
 तने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वरसती,
 जाणे नाइव मेह रे, रहो प्रीतम तुमें गेह रे, म दहो
 सुरंगी देह रे, जोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी
 रेह रे ॥ ८ ॥ प्री० ॥ हरिबल कहे दोय प्यारीने,
 जांखी अमृत वाण रे ॥ म करो मन कोइ सोच
 ना, तुमें ठो जीवन प्राण रे, आंखनी कीकी समान
 रे, पण ठे नृपनी ते आण रे, बीडुं ग्रह्युं में ते जाण
 रे, होवे ज्युं कोडि कल्याण रे, तुमें ठो घरना मंमाण
 रे, म करो खांचा ए ताण रे, अमें तुं पंथी केकाण रे,
 करवुं शीघ्र प्रयाण रे ॥ ९ ॥ सांजल गोरी रे मा
 हरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मन्ही चालीयो, रो
 ती मूकी ते नार रे, नृपनुं वयण ते पालवा, आव्यो

वहि दरबार रे, नृपने कीध जुहार रे, कहे मन्त्री ति
 णि वार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे, म करो ढील
 लगार रे, सुणी नृप चित्त मजार रे, पाम्यो हर्ष अपा
 र रे, तेडाव्यो ते तलार रे, चिता विरचावी सार रे ॥
 ॥ १० ॥ सां० ॥ हरिबल बले नृप कारणें ॥ ए आंक
 णी ॥ अगर चंदन काठना, रचना चयनी ते कीध
 रे ॥ सुगंध डव्य ते होमतां, नृप करे मनोरथ लीध
 रे, जाणो रमणी ने रिख रे, प्रचुर्यें मुऊने ते दीध रे,
 अइ मुऊ पुण्यनी वृद्ध रे, आजयी वंछित सिद्ध रे ॥
 ॥ ११ ॥ ह० ॥ हरिबल चय सुधी आवीयो, पहेरी
 वस्त्र विशाल रे ॥ अंगें नूषण शोचतां, पहेखां जाक
 ऊमाल रे, कीधां तिलक ते जाल रे, करमां श्रीफल
 जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, प्रगटी चयनी ते जा
 ल रे, दीसंती • महा विकराल रे ॥ १२ ॥ ह० ॥ ति
 ण समे सागर देवतां, हरिबल समरे ते चित्त रे ॥ तत
 हूण जलनिधि नाथजी, आब्यो सुपरें करि हीत रे,
 जाण्यां सयल चरित्त रे, बोव्यो सुर अइ मित्त रे, हरि
 बल मननो पवित्त रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥
 ॥ १३ ॥ ह० ॥ एम कही सुर ते समे, हरिबल सम
 कखुं रूप रे ॥ नृपजन आदि ते देखतां, बेगो चयमें ते

(१६६).

चूप रे, जन सहु देखे सरूप रे, जलतो मढी अनूप
 रे, हरख्यो मंत्री ते चूप रे, पण ते पडियो नवकूप
 रे ॥ १४ ॥ ह० ॥ हरिबल बलतो जन देखिने, सघ
 ला थया दिलगीर रे ॥ हा हा करता ते मानवी, रोवे
 आक्रंद वीर रे, नयणें वहे नदी नीर रे, वहियां जल
 निधित्तीर रे, सज्जन मन लहे पीर रे, न रह्यां मन
 कोइनां धीर रे ॥ १५ ॥ ह० ॥ होमी काया ते जालमें,
 चरणथी शीश सराड रे ॥ त्रट त्रट त्रटके तन चा
 मडी, कट कट कटंते हाड रे, नट नट नटके ते ना
 ड रे, हरखे नृपने किराड रे, रोवे मृग वनजाड रे,
 रोवे पंखी पहाड रे ॥ १६ ॥ ह० ॥ हरिबल बलता
 नी जाल ते, लागी नजलगे चोट रे ॥ श्याम थुं नज
 ते थकी, दीसे कालो ते धोट रे, रविरथने पण दोट रे,
 दीधी जालें ते जोट रे, थयो रवि आकरो जोट रे, वरुणें
 अरुणनो उट रे, वरसे अगनीनो गोट रे, थयो ते
 दिनथी तपकोट रे ॥ १७ ॥ ह० ॥ इणि परें वैक्रिय
 रूप ते, हरिबलनुं करी त्यांहि रे ॥ कारिमो हरिबल
 जालियो, जोतां खिण एकमांहि रे, नस्म करी
 सहु साही रे, जन कहे मांहो मांहि रे, थयो अक
 राकर ज्यांहि रे, रहेवुं न घटे ते आंहि रे, देखत अ

न्याय थाहि रे ॥ १८ ॥ ह० ॥ जस्म थइ जे चिता
 तणी, ठांटी जलखुं ते लाय रे ॥ जलशरणें करी
 जस्म ते, हरख्या मंत्रीने राय रे, काढ्युं शय्य ते आय
 रे, रमणी रिद्ध दो आय रे, हवे मुऊ वंछित थाय
 रे, वाहवा मंत्रीनुं जाय रे, जनी तें बुद्धि उपाय रे, इम
 जपतां घर आय रे, आनंद अंग न माय रे ॥ १९ ॥
 ह० ॥ फिट फिट करे नृप मंत्रीने, सघला नगरीनां
 लोय रे ॥ अमरपटो कोण लावियो, आखर मरखुं
 सहु कोय रे, खुं लेइ जाशो ते दोय रे, थिर धन रामा
 नवि होय रे, जावुं मूकीने सोय रे, खुं कीधुं ते जोय
 रे, एम कहे लोक सकोय रे ॥ २० ॥ ह० ॥ पुरजन
 सहु वड्यां मंदिरें, मुखमें अंगुलि देय रे ॥ धर्माजन
 धर्म रागथी, हरिबलनुं दुःख लेय रे, कीधा उप
 वास ते केय रे, व्रत पञ्चकाण धरेय रे, केहि जप
 माला जपेय रे, कर्मना बंध कटेय रे, वंछित सुख
 लहेय रे ॥ २१ ॥ ह० ॥ सागरदेवें मया करी, हरि
 बल कीधो अलोप रे ॥ जइ मूक्यो निजमंदिरें, जिहां
 ठे नारी दो जोप रे, हरखी नारी दो चूप रे, विरहा
 नलनी गइ हूँफ रे, थयुं मन शीतल कूप रे, दंपति

इइ ज्युं ऊप रे, त्रीजा उद्धासनी चूंप रे, आठमी
ढाल अनूप रे, लब्धि कहि निर्वाणरूप रे ॥ ११ ॥ ह० ॥

॥ दोहा ॥

॥ तटिनीनाथनो नाथजी, मनगुं थइ सुप्रसन्न ॥
हरिबल मूकी मंदिरे, पहोतो निज आसन्न ॥ १ ॥
जो जो नवियां पुण्यथी, हरिबल केरी ख्यात ॥ वेशें
परवेशें चली, प्रबल ए पुण्यनी वात ॥ २ ॥ दया
सहित पुण्य जे करे, पामी मनु अवतार ॥ इह नव
परनव सुख घणां, पामे ते निरधार ॥ ३ ॥ जेद कहा
नव पुण्यना, गणंगसूत्र मजार ॥ इव्य नावथी सां
धतां, लहियें सुख संसार ॥ ४ ॥ अन्न उदक वस्त्र
सयण जे, शाला धर्म विशाल ॥ नमवुं मण वय
कायथी, ए नव पुण्य रसाल ॥ ५ ॥ जस घर पुण्य
सखायी ठे, तस घर लीलविलास ॥ शक्रपरें थइ जोगवे,
रमणि रुद्रि सुवास ॥ ६ ॥ इम जाणी नाविक तुमें, नि
सुणी पुण्य प्रनाव ॥ हरिबलनी परें साधजो, प्रगटें
पुण्यरो नाव ॥ ७ ॥ ते नावें बेसी करि, तरीयें नव
दधितीर ॥ ज्योतिरूप जगदीश जे, तेहमें करीयें
शीर ॥ ८ ॥ परतख देखो पारिखुं, लोक कहे आख्या
त ॥ पोसानुं परतखपणुं, दल पामे परजात ॥ ९ ॥

(१६९)

॥ ढाल नवमी ॥

॥ माहारी सहि रे समाणी ॥ ए देशी ॥ पांचे जेदे
दान प्रकाशुं, केवलीये जे आख्युं रे ॥ नवि ते पुण्य
कहिये ॥ साते खेत्रे जे इव्य वावे, सुकृत करणी
उपावे रे ॥ १ ॥ न० ॥ श्रीजिन मंदिर बिंब नरावे,
पुस्तके ज्ञान ज्ञावावे रे ॥ न० ॥ साहामीवञ्जल
जाव धरीने, जे करे चाह करीने रे ॥ २ ॥ न० ॥
श्रीजिनकेरी नक्ति करेवा, दुःकृत पाप हरेवा रे ॥ न० ॥
वध बंधनादिक जीव ठोडावे, करुणा आणी जावे
रे ॥ ३ ॥ न० ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे करे
निर्मल गात्रा रे ॥ न० ॥ परियागतनां नाम रखावे,
संघवी तिलक धरावे रे ॥ ४ ॥ न० ॥ तप जप सं
यम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरियादो रे ॥ न० ॥
नय विवहारथी व्रत पञ्चकाण, जे करे चतुर सुजाण
रे ॥ ५ ॥ न० ॥ इत्यादिक शुन करणी नांखी, स
घली ए पुण्यनी साखी रे ॥ न० ॥ इव्यथी जावथी जे
करे करणी, ते नरे पुण्यनी नरणी रे ॥ ६ ॥ न० ॥
इव्य स्तवथी बारमे स्वर्गे, उपजे सुर उपवर्गे रे ॥ न० ॥
जाव स्तवथी केवल नाणी, थइ वरे मुक्ति ते प्राणी
रे ॥ ७ ॥ न० ॥ इव्यथी आशी पणे जे करणी,

करे ते लहे रिद्ध रमणी रे ॥ ज० ॥ जे करे जावथी
 करणी निराशी, होवे ते ज्योतिविलासी रे ॥ ८ ॥
 ज० ॥ पुण्यथी हरि हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जि
 एंदा रे ॥ ज० ॥ त्रिशठ शलाका पुरुष कहावे, उत्तम प
 दवी पावे रे ॥ ए ॥ ज० ॥ ते नव सिद्धि जिनवर
 जांखे, शिव पदनां सुख चाखे रे ॥ ज० ॥ देव दा
 नव पण सहु वश आवे, अरियण सवि गलि जावे
 रे ॥ १० ॥ ज० ॥ अष्ट माहा जय कदिय न देखे, नि
 र्जय सघले चेखे रे ॥ ज० ॥ ईति उपडव रोग न हो
 वे, पातक सघलां खोवे रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ पंचमे स
 घले बोल सुबोला, वाधे जसतरु मोला रे ॥ ज० ॥
 सूत्र सिद्धांतमें ठे नर चावा, दुआ ते पुण्यरा नावा
 रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ ते नावाथी नवोदधि तरीया, उप
 शम रसथी जरीया रे ॥ ज० ॥ अन्यंतरनी गांठ विठो
 डी, शिवरमणी वरी दोडी रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ स
 वा कोडी साधमी जमाडी, समकित शुद्ध जगाडी रे ॥
 ॥ ज० ॥ श्री नरतेसरदर्पण गेहे, केवल लह्युं ते
 नेहे रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ कयवन्नो वली धन्नो वखाण्यो,
 शालिनइ जोगी जाण्यो रे ॥ ज० ॥ ते पण दान
 प्रजावथी तरिया, संजम नारी वरिया रे ॥ १५ ॥

॥ ज० ॥ इत्यादिक अवदात सुणीने, जवि व्यो ते गु
 ण चूणीने रे ॥ ज० ॥ तुमें पण इणिपरें सूत्र सिद्धां
 तें, जवियां चढशो विख्यातें रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ गुरु
 उपदेश सुणीने जवियां, जुठ हरिबल चित्तमें, ठवि
 यां रे ॥ ज० ॥ तो ते जीवदयाने प्रजावें, मन वं
 षित फल पावे रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ जीवदयाथी दधि
 पति मलियो, दुःख दोजागथी टलीयो रे ॥ ज० ॥
 रमणि रुद्धिनो थयो जुगतारी, चिहुं दिशें लाज वधा
 री रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ धीवर जातमां थयो अवतारी,
 थयो शुद्ध समकितधारी रे ॥ ज० ॥ गुरु उपदेशें
 जीवदयाथी, थयो जिनधर्ममां हाथी रे ॥ १९ ॥ ज० ॥
 देव प्रजावें नृपजन दृष्टी, बांधी ज्युं करी सुष्टी रे ॥
 ॥ ज० ॥ कारिमो हरिबल जलतो देखाडी, निजगृह
 मूक्यो उपाडी रे ॥ २० ॥ ज० ॥ गुप्त रहे निज ना
 री दो संगें, सुख विलसे ते अजंगें रे ॥ ज० ॥ निज
 मंदिरमें साते खेत्रें, वावरे डव्य सुपात्रें रे ॥ २१ ॥
 ॥ ज० ॥ नृपजन जाणे मढी न जीवे, यममंदिर
 जइ रीवे रे ॥ ज० ॥ पण हरिबलने पुण्य प्रमाणें,
 जन सद्गु नयरी वखाणे रे ॥ २२ ॥ ज० ॥ हवे तुमें
 सुणजो आगल प्राणी, वारता अमिय समाणी रे ॥

॥ ज० ॥ पुण्य प्रजावथी अतिहे विशाला, होशे मंग
लमाला रे ॥ १३ ॥ ज० ॥ शुद्ध परंपर सोहम स्वा
मी, दुष्टा मुक्त अंतरजामी रे ॥ ज० ॥ तस पाटें गु
रु हीर सूरिंदा, उपजे तेज दिणंदा रे ॥ १४ ॥ ज० ॥
तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, निशिदिन नरे पुण्य
उरी रे ॥ ज० ॥ तस शिष्य धनहर्ष ज्ञानना दरि
या, कवि जनमें अनुसरिया रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ तस
शिष्य कुशलविजय कविराया, जैनमारग दीपाया
रे ॥ ज० ॥ तस लघु बंधव आझाकारी, कमलविज
य जयकारी रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ तस शिष्य लक्ष्मी
विजय गुणगेही, श्रुत चारित्रना नेही रे ॥ ज० ॥ तस
शिष्य केशर अमर दो ज्ञाता, पंक्ति जनने विख्याता
रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ तस पद किंकर लब्धि कहावे, ह
रिबलना गुण गावे रे ॥ ज० ॥ उत्तम भरना ते गुण
गातां, बांधियें पुण्यना खातां रे ॥ १८ ॥ ज० ॥ त्रीजो
उद्घास कस्यो ए पुरो, नव ढालें ते सनूरो रे ॥ ज० ॥
लब्धें कही ए वारता मीठी, जेहवी शास्त्रमां दीठी
रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ इति श्री जीवदयापरे हरिबलच
रित्रे पुण्याधिकारे तृतीय उद्घासः संपूर्णः ॥ ३ ॥

(१७३)

॥ अथ चतुर्थ उद्गासः प्रारभ्यते ॥

॥ दोहा ॥

॥ शांति सुधामय चंद ज्युं, सोहे शांति जिणंद ॥
दुःख तिमिर दूरें हरे, देवे मन सुख वृंद ॥ १ ॥ तस
पदपंकज हुं नमुं, नित्य उठी परनात ॥ केवल कमला
पामियें, देखियें. विश्व विख्यात ॥ २ ॥ सुखदायी वर
सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन घटमें
चंद.ज्युं, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ३ ॥ ते बाला त्रिपुरा
नमुं, विनवुं बे कर जोडि ॥ मुऊ मन मंदिरमें वसी,
पूरो वंछित कोडि ॥ ४ ॥ कोविद केशर अमरना,
चरण कमल नमि तास ॥ हरिबल मल्ली रायनो, प
जणुं चोथो उद्गास ॥ ५ ॥ वेधक रसिया जे हुवो, ते
सुणजो श्क मन्न ॥ हरिबल गुण सुणतां थकां, दोवे
पावन कन्न ॥ ६ ॥ हवे नृप जाणे मन्नमें, हरिबल
कीधो ठार ॥ काढ्युं शल्य जीवित जगें, उपनो हर्ष
अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुऊ अपठरा, प्रचुर्यें दीधी
हड ॥ तो हुं जइ सफलुं करुं, मुऊ जीवित सुकयड
॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय ॥
वज्जी सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥
को नवि जाणे राजमें, तिम चाव्यो धरी आश ॥ रज

नी थइ घडि दो समे, पढोतो मञ्जी आवास ॥ १० ॥ दू
 रथी जूधणी आवतो, वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी
 तिजकंतने, हरिबलगृहमें पइठ ॥ ११ ॥ एटले महिपति
 आवियो, दो नारीनी पास ॥ कुमरी तव उठी तुरत,
 आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ आगत स्वागत घणि
 करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी दो उनी रही,
 कारिमो करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महि
 नाथने, केम पथाखा स्वाम ॥ ते कारण मुऊने कहो,
 खोली मन अनिराम ॥ १४ ॥ दमणां पियु गयो य
 म घरे, राखवो लोकाचार ॥ अथ्यवसाय जे मन त
 एण, कही पहाँचो दरबार ॥ १५ ॥ मुऊ मंदिर स्वामी
 तुमें, आव्या ठो महाराय ॥ पण मोशीने घर बाध
 लो, कहो ते केम समाय ॥ १६ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव हरखित थइ रा
 जवी रे, बोव्यो ते मदनवेग ॥ विषयी वसुधाता ॥
 कोइक पुण्यना योगथी रे, थयो तुमछुं गुन नेग ॥ १ ॥
 वि० ॥ जव आव्यो हुं मंदिरें रे, तुमचे नोजन
 काज ॥ वि० ॥ मोहनी लागी ते थकी रे, ते जाणे
 जिनराज ॥ २ ॥ वि० ॥ जगमां ठे नारी घणी रे, पण

तुमची नावे जोड ॥ वि० ॥ तुम सुघडाइ देखीने रे,
 वाढ्यो मोहनो ढोड ॥ ३ ॥ वि० ॥ ते, दिनथी नवि
 वीसरो रे, दो नारी तुमें चित्त ॥ वि० ॥ जीव रहे चरणं
 बुजें रे, तुमचे अविहड हीत ॥ ४ ॥ वि० ॥ जुं धरे
 ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरुं तुमचो ध्यान ॥ वि० ॥
 सास उसासमें सांजरो रे, शत वार तुम गुण थान ॥
 ॥ ५ ॥ वि० ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आढ्यो लुं
 धरी हूंश ॥ वि० ॥ एहमां जूठ न जाणजो रे, सत्य
 कहुं तुम सूस ॥ ६ ॥ वि० ॥ कांइ न करशो शोचना
 रे, चतुर तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस सां
 जली रे, दो मन सुख अनिराम ॥ ७ ॥ वि० ॥ तन
 धन जोबन पामीने रे, लीजें मनुजव लाह ॥ वि० ॥
 पामी अवसर जूलजे रे, तस रहेशे दिल दाह ॥ ८ ॥
 वि० ॥ यौवनकथ सुख पामीने रे, जे नही माणे पूर ॥
 वि० ॥ वननां कुसुमं तणी परें रे, ते रहेशे मन जूर ॥
 ॥ ९ ॥ वि० ॥ जीवित सूधी तुम तणुं रे, पालणुं निशिदिन
 वेण ॥ वि० ॥ हरिबलनी परें राखणुं रे, तन मन क
 रीने सेण ॥ १० ॥ वि० ॥ तुम अम वस्त्रें कोइ वातनो
 रे, वहेरो न राखियें कोय ॥ वि० ॥ मुज मन प्राणनि
 कुंजमें रे, राखुं तुमने दोय ॥ ११ ॥ वि० ॥ माहारी

ठती जे राजनी रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥
 जो तुमें आपुशो हेतुं रे, ते सही जमहुं अम्म ॥ ११ ॥
 वि० ॥ कोइ वातें डहवुं नही रे, माहरी करीने जी
 ह ॥ वि० ॥ सबलुं कमल हृदें धरी रे, जाव रह्यो
 मुऊ गीह ॥ १३ ॥ वि० ॥ इम नारी दो आगलें रे,
 नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो
 रे, खोई सघली शान ॥ १४ ॥ वि० ॥ धिग धिग काम
 विटंबना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर
 नारी आगलें रे, नवि रहे लज्जा लगार ॥ १५ ॥
 ॥ वि० ॥ कामें केइ नर छेतखा रे, कहेतां नावे पार ॥
 ॥ वि० ॥ काम वशें मल कूपकें रे, पड्यो ललितांग
 कुमार ॥ १६ ॥ वि० ॥ कामवशें थयो नारकी रे,
 सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य प्रहासाकारणें रे,
 पढोतो दरीया पार ॥ १७ ॥ वि० ॥ कामिनी आगें
 ईश्वरु रे, नाच्या ते निःशंक ॥ वि० ॥ काममां बूझ्या
 बापडा रे, कुण ते रांक ने ढीक ॥ १८ ॥ वि० ॥ उत्तम
 मध्यम गीतमां रे, गावे ते पण काम ॥ वि० ॥ नर
 नारीनां जोडलां रे, गावे उच्चव ठाम ॥ १९ ॥ वि० ॥
 कामिनी कामना कूपमें रें, बूझ्यो सहु संसार ॥
 ॥ वि० ॥ केवलरयणने खोजवा रे, दीगो कामकुमार

॥ १० ॥ वि० ॥ श्रेणिक रायनी रागिणी रे, चीलणा
 रूप अपार ॥ वि० ॥ ते देखी शिष्य वीरना रे, ख
 ली चउद हजार ॥ ११ ॥ वि० ॥ बलि जुठ श्रेणिक
 रायनुं रे, रूप अनोपम सार ॥ वि० ॥ निरखी ते
 वीरनी चेलकी रे, बली ठत्रीश हजार ॥ १२ ॥ वि० ॥
 समवसरणें अगुचिता रे, थइ ते जाणी-ताम ॥ वि० ॥
 वीरें दीधी देशना रे, मन आण्यां तस ठाम ॥ १३ ॥
 ॥ वि० ॥ मत को कोइ नेतुं गयो रे, म करो निंदा
 कोय ॥ वि० ॥ त्रस थावर सवि जीवने रे, विषयनी
 संज्ञा होय ॥ १४ ॥ वि० ॥ निशिदिन रहे जस धा
 खना रे, कामिनी काम विकार ॥ वि० ॥ मरण लही
 ते प्राणीया रे, जीवे एकेंडि मजार ॥ १५ ॥ वि० ॥
 कामिनी रस आगलें रे, त्रिजग रहे थइ दास ॥ वि० ॥
 तो शो मदनवेगनों रे, आशरो कहीयें तास ॥ १६ ॥
 ॥ वि० ॥ धन धन ते नव्य जीवमे रे, जे रह्या का
 मथी दूर ॥ वि० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, प्रणमुं
 चढते सूर ॥ १७ ॥ वि० ॥ चोथा उघ्नासनी ए कही
 रे, पूरण पहेली ढाल ॥ वि० ॥ लब्धि कहे नवि
 सांजलो रे, बोले दो कुमरी बाल ॥ १८ ॥ वि० ॥

(१७८)

॥ दोहा ॥

॥ नृपनी, वाणी सांजली, बोली कुमरी ताम ॥ ए शुं
बोल्या नाथजी, असमंजस विण काम ॥ १ ॥ महो
टी मतिना ठो धणी, ए शी कीधि अकछ ॥ विण तेडे
स्वामी तुमें, आव्या थइ धेकछ ॥ २ ॥ एम न कीजें
नाथजी, ठोकरवाली मत्त ॥ विण कहे कोइ गेहमें,
नवि पेसीजें ऊत्त ॥ ३ ॥ ए तो काम ठे लंठनुं, जेहमें
जांगे नार ॥ ते करणी एहवी करे, करवा नरगमे
सार ॥ ४ ॥ परणी घरणी जे दुवे, तेहने चढावो पाड
॥ खाशे ते खमशे प्रभु, रहेवा द्यो ए लाड ॥ ५ ॥
परदुःख नंजन राजवी, ए ठे तुम्म बिरुद ॥ परनारी
सहोदरु, ते किम ठंमो हद ॥ ६ ॥ बुं परजा अमें तुम
तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण घटती ए वातडी,
केम करो राजान ॥ ७ ॥ वाहार जोइयें जिहांथकी,
तिहांथी आवे धाड ॥ कहां ते कुण आगल
कहे, जे निज दुःखनी राड ॥ ८ ॥ आवला जाणीं ध.
कली, जाण्युं ते माखी मर ॥ शुं जाणीने आवी
या, लेवा रमणी रुद ॥ ९ ॥ कंत विहूणी कामिनी,
जाण्युं ते महिराण ॥ पण मुऊ मनडुं हाथ ठे, तेणें
बुं सपराण ॥ १० ॥ लोक उखाणो पण कहे, जो होय

(१७९)

हैय्युं हाथ ॥ काम हुवे तो चिहुं दिशें, जइयें धिंगा
साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कंतने, मूक्यो जम घर
अऊ ॥ वली शुं करवा आवीया, थइ नकटा निर्लऊ
॥ १२ ॥ तुमें तो महारा तात ठो, एवा म कहो बोल ॥
सो वातें एक वातडी, सती न चूके तोल ॥ १३ ॥
एहवां वयण ते सांजली, प्रगटी नृपने जाल ॥ क्रोधा
नलनी बाफमां, सीजि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ तुं तो पाधरुं बोल शीपाइडा ॥ ए देशी ॥ तव
खीज्यो नूप जराडो, जिम आगें हाथी हराडो, बोव्यो
थइ लाडो रे, दो कुमरीशुं रोष धरी खरो ॥ तुमें सांजलो
दोय सहेली, तुम लेखवुं मोहनवेली, चालो थइ वे
हेली रे, मुऊ मंदिर महेल मूकी परो ॥ १ ॥ तुमें पा
धरुं बोलो राजनजी, तुमें वांकुं म बोलो राजनजी,
नारी पीयारी रे, राजनजी थाहरी को नही ॥ सेना
विहूणी जाणी, पण मनथी हुं संपराणी, जांखे इम
वाणी रे, दो कुमरी नृपने मुखें रही ॥ २ ॥ तु ॥
तुम मन तो रहेसो दूरें, अम जाण्युं आशे सनूरें, जांखे
मद पूरें रे, नृप कामातुर थइ घणो ॥ नृप आकुल व्या
कुल थाय, जिम जल विना मठ तडफाय, देखी तव

थाय रे, दो कुमरीनुं रूप सोहामणुं ॥ ३ ॥ तु० ॥ वली
 जंपे ते महिनाथ, तुमें सांजलो कुमरी साथ, कुंची
 तुम हाथें रे, मृगनयणी दीधी में आजथी ॥ तुमें कहे
 शो ते विध करणुं, तुम आतमकमलमें धरणुं, मन सुख
 वरणे रे, मारी मृगानयणी लाजथी ॥ ४ ॥ तु० ॥ तव
 जंपे कुमरी वयणां, तुमें सांजलो नरपति सयणा, दृष
 दणुं रयणां रे, राजनजी नहीं जांगे सही ॥ ए तो जो
 फरे पृथिवी सारी, ए तो जो फरे धुनी तारी, तो षण
 नारी रे, नरपतिजी न फरे सती कही ॥ ५ ॥ तु० ॥ तव
 जंपे महिपति एम, बल बांधो मुण्डणुं केम, कहोजी ते
 जेभ रे, बल बांधो हो ते शे गजे ॥ तव कुमरी बोले ह
 सती, नृप सांजलो कहुं तुम रसती, राखो मन वसती
 रे, महिपतिजी प्रभु सहु नजे ॥ ६ ॥ तु० ॥ फरी जंपे
 वली नृप ताम, नथी प्यारी हवनुं काम, जोरें करी
 धामें रे, मुण्ड मृगानयणी ले चलुं ॥ तव शं करो तुमें
 इहां जोरो, तुम नाखुं तोडी तोरो, शं ते बल फोरो रे,
 मुण्ड आगल गोरी केटलुं ॥ ७ ॥ तु० ॥ तुम प्रीतमने
 करी कपटें, में बाव्यो अगनी ऊपटें, तो शं मन लपटे
 रे, करी ठारने जल शरणें करी ॥ मुण्ड दासीने दीधो
 मार, मुण्ड, नूषण राख्यां सार, नाव्यां मुण्ड जारें रे,

तव में ए दाऊ काढी परी ॥ ७ ॥ तु० ॥ मुऊ आगल .
 हवे किहां जाशो, तुम करणी तुमेंहिज पाशो, मा
 ऊ घणुं थाशो रे, जिम तस्कर संधि मुखें ग्रहे ॥
 जो मुऊने करशो राजी, तुम राखिश अहोनिश ता
 जी, रहेशो तुमें गाजी रे, अगंजी मुऊ चित्तुं वहे ॥
 ॥९॥ तु० ॥ अहि आगें मेडकुं जेते, हरि आगें मृग जाय
 केते, जाय कहो केतें रे, बाऊ आगें चडकली दोडीने ॥ ति
 म तुमेंहीज नामिनी नोली, तुमें रहेशो आंख्यो चोली,
 जाशो किहां रोली रे, मुऊ आगलें डिंग ते गोडीने ॥
 १० ॥ तु० ॥ तव कुमरी नांखे बोल, नृप दीसो गो फूटा
 ढोल, निगुण निटोल रे, वडा दीसो गो कोइ तुमें ॥ क
 हे कुमरी रीषें जंजेरी, जिम कूदे कब्ही वठेरी, नाखुं
 नस वेरी रे, नरपतिजी तुं अबला अमें ॥ ११ ॥
 तु० ॥ के शुं नृप हियडो फूटो, के शुं तुम जगदीश रू
 गो, के शुं कांइ खूटो रे, तुम सासोसास हतो जिके
 ॥ तुमें शुं नृप आप वखाणो, तुमें अबलाशुं मत
 ताणो, अबलाथी जाणो रे, केइ हास्या नर बलीया
 तिके ॥ १२ ॥ तु० ॥ तुमें सुणो परदेशो राजा, जे
 हनी हती महोटी माजा, तेहनी ते चार्या रे, सूरिकं
 तोयें नख देइ हण्यो ॥ बली जितशत्रु महिनाथ, हतो

परजनी महोटी आय, राणीयें नरी बाय रे, पियु ना
 ख्यो जलनिधिमें सुण्यो ॥ १३ ॥ तु० ॥ ए तो इत्या
 दिक नर बलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो छुं
 तमें बलीया रे, अम आगल नरपति गुं बको ॥ अम च
 रित्रथी को नवि जीत्यो, त्रीजगने नाख्यो चीतो, सु
 र नर खूतो रे, स्त्री आगल को नवि जक्यो ॥ १४ ॥
 ॥ तु० ॥ सिद्ध साधक जे होय जाण, तेहनां
 अमें चुकवुं ठाण, एकादश गुणठाणें रे, अमें पाहुं
 तिहांथी नरजणी ॥ अमें जातें ठुं स्त्री चूंमी, अमें
 चालती नरकनी कूंमी, ठुं अमें हूंमी रे, ए तो चाल
 ती नव दंमक तणी ॥ १५ ॥ तु० ॥ तेमाटें नृप तु
 म आखुं, अमें कूडुं कदिय न जाखुं, चपटीमें नाखुं
 रे, उमाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतीय न चुकुं गाहुं,
 अमें दीगो ते आ राहुं, बीजो न चाहुं रे, नरपतिजी
 सुरगिरि जो पडे ॥ १६ ॥ तु० ॥ तुम करवुं होय
 ते करजो, धन लेई पोतुं नरजो, पण में तुम वर
 ज्यो रे, ए तो पहेलां दासी आवी हती ॥ तव में तस
 काढी कूटी, जिम घरथी हांमी फूटी, दासीने में
 लूंटी रे, में मूकी तुम घर दी ठते ॥ १७ ॥ तु० ॥
 तुम असिबल म्यानमां राखो, तुम बल तुम स्त्रीने

दाखो, बांधी मूठी राखो रे, नरपतिजी मत ठेडो कोइ
 ने ॥ तुम कुल मरजादायें चालो, जिम सुखें मंदिरमां
 मालो, मूको तुमें ख्यालो रे, नरपतिजी परस्त्री जोइने
 ॥ १८ ॥ तुं० ॥ तव सांजली नरपति कोप्यो, को
 धारुण अग्निमें रोप्यो, कामें करी लोप्यो रे, नृप विर
 हानल दाजी गयो ॥ तव नृपनी डुर्मति हाली, मुख
 कुमरीने कर जाल, कीधी नृपें काली रें, दो कुमरीगुं
 द्वेषी थयो ॥ १९ ॥ तु० ॥ तव कुमरी रोषें दाधी,
 नृपने तिहां काढयो बांधी, ऊकडबंध बांधी रे, नृप
 नाख्यो उंधे मस्तकें ॥ ये गडदा पाटु प्रहार, करे मुह
 गरना प्रहार ॥ दासी मली मारे रे, ए तो नृपने जबड
 जस्त के ॥ २० ॥ तु० ॥ नृप पाडे बहुली चीस, कहे
 तोबां मुख जगदीश, कुमरी ते रीषें रे, ए तो नृपना
 पाड्या दांतडा ॥ बली त्रोडे नृपनी मूठ, फल लेतो
 जा तुं छुड, कुमरीं दो पूठे रे, नृप किहां गयुं बल
 दुर्म जातडा ॥ २१ ॥ तु० ॥ ए तो कुमरीयें नृपने
 रांक, कखो पूरो कुंदीपाक, काने पडी धाक रे, सुन
 कारें नृप चढयो हेडकी ॥ कुमरी हणे नृपने तमाचे,
 तेतो हरिबल केरी साचें, गारुडीथी नाचे रे, ए तो
 फणिधर माथे देडकी ॥ २२ ॥ तु० ॥ नृपने कखो

घणो उपसर्ग, नृप जाणो पडीयो नर्ग, स्त्रीजन ते वर्गे
 रे, नृपपाणी उताखुं खरुं ॥ कहे कुमरी कर जोडी, नृप
 बोव्यो मान संकोडी, मूको मुऊ ठोडी रे, हुं आज
 थी अनीति नहिं करुं ॥ तु० ॥ इम करतां थयो प
 रजात, जाणी धीवरें सघली वात, मन्नीनी जाती रे,
 हुं पाम्यो स्त्री मरयादनी ॥ ए तो ज्योथा उद्गासनी
 मीठी, कही शास्त्रमें जेहवी दीठी, लब्धि लखी चीछी
 रे, कही बीजी ढाल संवादनी ॥ १३ ॥ तु० ॥ इति
 ॥ दोहा ॥

॥ इम करतां ते प्रह थयो, वाज्यां मंगल तूर ॥
 ऊलरिना ऊणकार तिम, प्रगट्या उगते सूर ॥ १ ॥
 दीन वचन नरपति कहे, कुमरीने कर जोड ॥ हुं अ
 पराधी तुम तणो, तुं मुऊ बंधन ठोड ॥ २ ॥ हुं मूरख
 तुमखुं थयो, सतीखुं घाली बाथ ॥ जेहवी करि ते
 हवी लही, वृद्ध पणानी आय ॥ ३ ॥ जाणखुं तो घणी
 ए थइ, कीजें करुणा सार ॥ गुप्त पणो जावं गृहे, जि
 म रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ वांको चुंको हुं हतो, पण्यो
 कुबुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो पाधरो नेत्र ॥
 ५ ॥ सतीयोने दुःख दाखवी, जे कीधो अपराध ॥
 ते तुमें खमजो मातजी, हुं हुं तुम सुत साध ॥ ६ ॥ इत्या

(१८५)

दिक वचनें करी, रीऊवी कुमरी दोय ॥ बंधनथी ठो
 ज्यो परो, मदनवेग नृप सोय ॥ ७ ॥ गुप्त पणो नृ
 प तिहां थकी, आव्यो निज गृह मख ॥ मुख पो
 थावी आवियो, निगुण थइ निर्लज्ज ॥ ८ ॥ जिम
 कोठीमें मुख घालीने, रोवे तस्कर मात ॥ तिम नृप
 रोवे मन्नमें, जे लह्यो प्रहन्न घात ॥ ९ ॥ जाण्युं हतुं
 सुख मालगुं, दो प्यारीनी साथ ॥ लेणैथी देणे पडी,
 खाली पडी जरी बाथ ॥ १० ॥ जे नर मूरख बापडो,
 देखी परायो माल ॥ लेवा जाये दोडीने, ते थाये पे
 माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने थइ, मनमें रहियो
 फूर ॥ मुख दीवाली दाखवे, वहे मन होलीपूर
 ॥ १२ ॥ रमणीथी मन वालीयुं, मूकी ममता दूर ॥
 राज काज नृप चालवे, दिन दिन चढते नूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥ धण समरथ पियु नानडो ॥ ए देशी ॥ हवे कुम
 रींदो कंतने, कहे कर जोडी सुणो सुलतान ॥ सजनी
 नृपने काढयो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥ १ ॥
 सांजलो प्रीतम माहरा, तुम परसादे वाध्युं जोर ॥
 ठिक पाटूना प्रहारथी, मजबुत काढयो ज्युं करी ढोर ॥
 २ ॥ सां० ॥ जीवित लगे नृप जाणरो, खटकरो निहि

(१७६)

दिन कालजे साल ॥ निराशी थइ दीन ते मारनी,
 पूंजी ले गयो माल ॥ ३ ॥ सां० ॥ साजी हलदर फट
 कूडी, सेववी पडशे मांस बे चार ॥ मम्मइ अशेलीयो,
 खाशे त्यारें थाशे करार ॥ ४ ॥ सां० ॥ इत्यादिक
 श्रवणें सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥
 सुकुलीणी साची तुमें, पणधारी में दीठी सुजाण ॥ ५ ॥
 सांनलो प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें ठो आत
 म जीवन प्राण ॥ आंखनो कीकी ठो तुमें, तुमें ठो
 महोटां घरनां मंमाण ॥ ६ ॥ सां० ॥ कुलवधूनां
 ए चिन्ह ठे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥ कष्ट पडे के
 इजातिनां, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ ७ ॥
 सां० ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथो वरशे जग ज
 लधार ॥ सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य
 आधार ॥ ८ ॥ सां० ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी,
 सत्यथी शशि रवि चाले आकाश ॥ पृथिवी पण फ
 ले सत्यथी, वणसइ नार अठार उह्वास ॥ ९ ॥
 सां० ॥ वणज व्यापार चाले बहु, हुंमी चाले देश
 प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कहुं सत्य
 विशेष ॥ १० ॥ सां० ॥ केवली केवल सत्यने, त्रिगडे बे
 झी करेय प्रकाश ॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य ठे, सत्यथी पामे

ज्योति निवास ॥११॥सां०॥ नर नारी सोहे सत्यथी,
 सत्यथी माने सहु संसार ॥ सत्यथी चूके जे मानवी,
 नव दंमक लहे ते निरधार ॥ १२ ॥ सां० ॥ शिरुनामें
 लखे कागलें, साडी चम्मोतेर आंक जे दोय ॥ तेहमें पण
 जन पंमितें, सत्य ठराव्युं लोकमे जोय ॥ १३ ॥ सां० ॥
 सत्य मत ठोडे मित्र तुं, चोगडे लह्नी चोगणी होय ॥
 सुख दुःख रेखा दो कर्मनी, टाले पण नं टले होय ॥
 १४ ॥ सां० ॥ इणि परें पण लौकिक मतें, सत्यथी पामे सु
 खनी रेख ॥ मानवी चूके जो सत्यथी, तो लहे दुःख
 नी रेखा देख ॥ १५ ॥ सां० ॥ सतीया सत्त न ठोडीयें,
 सत्त ठोडे पत जाय ॥ सत्तनी बांधि लह्नी ते, आब्रे
 सन्मुख धाय ॥ १६ ॥ सां० ॥ जूदेव नामें द्विज थ
 यो, तेणें न मूक्युं सत्य लगार ॥ दश दोकडा नृप
 दानथी, सत्यथी लह्यो ते अखुट जंमार ॥ १७ ॥
 ॥ सां० ॥ धण कण कंचण पामीयें, ते पण सत्य
 तणी परजाव ॥ मनवंठित महिमा मिले, सतिय
 शिरोमणि शुद्ध सुजाव ॥ १८ ॥ सां० ॥ शोल सती
 थइ मोटकी, ते पण अद्यापी गवराय ॥ सत्य जो राखे
 आपथी, जिनवर ते पण सूत्रें चढाय ॥ १९ ॥ सां० ॥
 त्रेशठ शिलाका पुरुष ते, सत्यवादी थया थाशे अने

क ॥ इम जाणी प्राणी तुमें, राखजो पुरो सत्य वि
 वेक ॥ १० ॥ सां० ॥ इणि परें हरिबलें नारीने, सत्य
 उपर देई दृष्टांत ॥ कामिनी दो हरखित करी, दंपती
 मांहोमां हरखात ॥ ११ ॥ सां० ॥ सुखें समाधें दंप
 ती रहें, निज मंदिर मांहे उच्चाह ॥ दो गुंडक सुरनी
 परें, पंच विषय सुख जोगवे त्यांह ॥ १२ ॥ सां० ॥
 निज मंदिर रहेतां थकां, जव थयो पूरण एक मास ॥
 तव हरिबल चित्त चिंतवे, निकलुं डिंगमें मनने उ
 द्वास ॥ १३ ॥ सां० ॥ नृपने ते जडी शीखडी, फरी
 पाढी सर सांधे न सोय ॥ पण मंत्री कालसेन ते,
 एणें कीधी ते न करे कोय ॥ १४ ॥ सां० ॥ जो जग
 दीशनुं चाहुं ठे, तो करुं कालकंटकने दूर ॥ बाली जा
 ली ते ठारने, जेइ जइ नाखुं ते वहेते पूर ॥ १५ ॥ सां० ॥
 विण अपराधें मो परें, अहनिशि करतो खेद अथाह ॥
 नृपना कान जंजेरीने, मुऊनें मूक्यो यमने गह ॥
 ॥ १६ ॥ सां० ॥ तो हुं खरो ए मंत्रीने, नृपने हाथे
 करावुं ठार ॥ शब्य काढुं आखा जमतनुं, मो मननो
 पण काढुं खार ॥ १७ ॥ सां० ॥ हणताछुं हणीयें
 सही, तेहनुं पाप न गणीयें कांय ॥ जेहवी देवी ते
 हवी पातरी, एम उखाणो जगमां कहाय ॥ १८ ॥

(१८९)

॥ सां० ॥ ए मुझायें कामिनी, कालने बाढ्यानुं ठे का
म ॥ काल जूंमो ठे संसारमां, कालथी बिगडे केहिनां
गम ॥ १९ ॥ सां० ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, स
मख्यो सागरसुर उजमाल ॥ लब्धि कहे गुन सत्यनी,
चोथा उच्चासनी त्रीजी ढाल ॥ २० ॥ सां० ॥ इति॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिबल हरखें करी, समख्यो सागर देव ॥
ते पण ततखिण आवियो, कहो वड किम समरेव ॥
॥ १ ॥ तव हरिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोढाह ॥
कालसेन कम जातिने, द्यो तुमें अग्रिमांह ॥ २ ॥
शत्य काढो प्रभु माहरुं, जिम लहुं सुख नरपूर ॥ धि
ए खूने मुऊने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब
लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल
केरी कांतिमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यां
बर पहेरी करी, पहेरी नूपण चंग ॥ दिव्य रूप हरि
बल तणुं, कीधुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासें
सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नन मारगथकी उतरी,
आवि दो जेटे नूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लही,
हरखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया
बांह पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रीने प्रगटीयुं, मद्दोदुं डःख

(१९०)

अपार ॥ जिम रोगीने दीजीयें, चांदा उपर खार ॥
 ॥ ७ ॥ हरिबलने बाली परो, जलमें नाखी ठार ॥
 से किम पाठो आवीयो, कुशलें करि शणगार ॥ ८ ॥
 हरिबलने सही उलख्यो, मदनवेग ते राय ॥ आगत
 स्वागत नृप करे, बेठा प्रणमी पाय ॥ १० ॥ पूढे नृप
 हरिबल प्रतें, कहो यमराजनी वात ॥ शी शी हकी
 गत लाविया, कुण ए तुम संघात ॥ ११ ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ रंगरो रसीयो रे, फूल गुलाबरो हे सुंदर ॥ ए
 देशी ॥ हवे हरिबल नृपने कहे, सांजलो प्राणाधार
 हे ॥ जेहवी नीपनी तेहवी कहुं, तुम आगल सार हे
 ॥ १ ॥ रंगनी रे तमने रे, जांखुं ते सांजलो ॥ ए आं
 कणी ॥ जव थइ करुणा तुम तणी, कीधो में अगनी
 गुं प्यार हे ॥ तव तुम कारणें नाथजी, देही दही
 करी ठार हे ॥ २ ॥ रं० ॥ ततखिण तुम परसादथी,
 पहोतो ए स्वर्ग मजार हे ॥ इंदपुरि श्रवणें सुणी, दी
 ठी नजरें श्रीकार हे ॥ ३ ॥ रं० ॥ ते इंदपुरीना ना
 थजी, केतां कीजें वखाण हे ॥ तेजें जलामल जल
 कर्ती, जाणे कोडी गमे ऊग्या जाए हे ॥ ४ ॥ रं० ॥
 पंचरंगी रतने करी, बत्रीश लाख विमान हे ॥ लघु ते

जोजन लहनां, नवि नवि जातिनां जाण हे ॥ ५ ॥ रं० ॥
 तेहमां एक विमान ठे, पण चउलस्क प्रमाण हे ॥ को
 रणी धोरणी शी कहुं, सोहमवासीनुं ठाण हे ॥ ६ ॥ रं० ॥
 तेह विमानें शोजतां, ठे महोटां चउ द्वार हे ॥ तेहमें
 द्वार दक्षिण दिशें, ठे तिहां यम दरबार हे ॥ ७ ॥
 ॥ रं० ॥ स्वर्गपुरी हुं इणि परें, जोतां महोटां मंमाण
 हे ॥ तेह सजामां हुं गयो, जिहां वेठो यमराण हे ॥
 ॥ ८ ॥ रं० ॥ सुर असुर नर खेचरा, मेजी परखद
 तत्र हे ॥ न्याय अन्याय खीर नीर ज्युं, वेठो करे यम
 यत्र हे ॥ ९ ॥ रं० ॥ जे ते यम नडवाथकी, बीहे
 इंदने चंद हे ॥ ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा, देव दाणव दि-
 णंद हे ॥ १० ॥ रं० ॥ कुण राणा कुण रांकने, स
 हुने गणे एक पाड हे ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहनां
 ते पूरे लाड हे ॥ ११ ॥ रं० ॥ लौकिक मतें यम रा
 एनो, कहे सहु सूर्य तात हे ॥ शनि यमुना जाइ
 बहेन ठे, श्रीसंग न्यात समात हे ॥ १२ ॥ रं० ॥
 धर्माणी तस जार्या, ठे पट्टराणी तास हे ॥ असवारी
 तस महिषनी, चंम प्रचंम ठे दास हे ॥ १३ ॥ रं० ॥
 बल ने माहाबल जाइ दो, ए ठे यमना पूत हे ॥ ज
 नक सवाइ दो बेटडा, चलवे घरनां सूत हे ॥ १४ ॥

(१९२)

॥ रं० ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल
हे ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखत
विशद हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ दुनियां जे करणी करे,
सुकृत दुःकृत देख हे ॥ चित्र विचित्र ते मांझिने, दा
खवे यमने लेख हे ॥ १६ ॥ रं० ॥ ते करणी यम
देखीने, ये दुनियाने शीख हे ॥ सुकृतने सुख दाखवे,
दुःकृतने दे नीख हे ॥ १७ ॥ रं० ॥ ईति उपडव जगतने,
मर्कीना जे रोग हे ॥ काल दुकाल ते जे पडे, ज्वरना
मेलवे जोग हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा,
बलगे ते सनमुख हे ॥ ए सवि करणी यम तणी, दु
नियां जे लहे दुःख हे ॥ १९ ॥ रं० ॥ तूसे जो यम
जगतने, दाखवी नारकी घात हे ॥ तूसे तो यम ने
हसुं, आपे ते सुख शात हे ॥ २० ॥ रं० ॥ जोरो घ
णो यमराजनो, कहेतां नावे पार हे ॥ यमनो वि
चार विशेष ठे, जगवतीमांहे विस्तार हे ॥ २१ ॥
॥ रं० ॥ लौकिकने मर्ते जे सुणो, तेह में दीगो संत्व
हे ॥ तेह सजामें हुं गयो, यमने करी प्रणिपत्य हे ॥
॥ २२ ॥ रं० ॥ ततखिण यमें मुक्त उलख्यो, अवधि
झानें सार हे ॥ देव शक्ति करी मुक्तने, फरी दीधो
अवतार हे ॥ २३ ॥ रं० ॥ नौतन काया माहरी,

(१९३)

मुजने जीवित दीध हे ॥ १४ ॥ रं० ॥ आगत स्वागत
 घणि करी, मुजने ते धर्मराज हे ॥ सोज समाचार
 तुम तणा, पूढे ते यमराज हे ॥ १५ ॥ रं० ॥ तब
 में तिहां कर जोडीने, यमने करि अरदास हे ॥ आब्यो
 हुं एक राजथी, तेडवा तुम उछास हे ॥ १६ ॥ रं० ॥
 विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय हे ॥ अंग
 जने परणाववा, उछव महोटी कराय हे ॥ १७ ॥
 ॥ रं० ॥ देश देशावरि राजवी, मेलगे महोटा राज
 न्न हे ॥ वैशाख छुदि पांचम दिनें, परणगे पुत्र रत
 न्न हे ॥ १८ ॥ रं० ॥ ते माटे तुम तेडवा, मूक्यो ठे
 मुज आज हे ॥ तुम आवे प्रभु जगधणी, वधगे म-
 होटी लाज हे ॥ १९ ॥ रं० ॥ इणि परें अरज ते सां
 जली, बोळ्यो यम ततकाल हे ॥ चोथी चोथा उछा
 सनी, लब्धि कही ए ढाल हे ॥ २० ॥ रं० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरखित अइ यमराजजी, बीळ्यो मुखथी मि
 ष्ट ॥ यम कहै हरखिल तुम धणी, ठे मुज मननो
 इष्ट ॥ १ ॥ पण तुम नृप मुज मंदिरें, जो आवे इक
 वार ॥ त्पार पठे मुज आववुं, यागे तब निरधार ॥ २ ॥
 अवली गंगा जो बहे, तो मुजथी अवराय ॥ दुनियां

माने मुज्जने, करि परमेसर गाय ॥३॥ तेमाटे हरिबल
 तुमें, कहेजो नृपने एम ॥ एक वार मुज्ज मंदिरें, आवो
 ज्युं करि तेम ॥ ४ ॥ जो सेवक साचो दुवे, तो ले
 नगरी साथ ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो, मदनवेग महि
 नाथ ॥ ५ ॥ मुज्ज मंदिरनी रसवती, कबुल करेशो
 आय ॥ तव तुम मंदिर चाहिने, आवीशुं अमें धाय ॥
 ॥ ६ ॥ एह संदेशो अम तणो, हरिबल कहेजो तु
 म्म ॥ तुम नृपने अम तेडवा, मूकुं ए नृत्य अम्म
 ॥ ७ ॥ वलि तुमें शाता पूढजो, कहेजो अम्म जु
 हार ॥ जो आशा करो अम तणी, आवजो सर्ग मजार
 ॥ ८ ॥ एम कही सनमानिने, पहेरावी शणगार ॥ वो
 लावी अमने वड्या, यमराजा हितकार ॥ ९ ॥ देव प्र
 नावें ततखिणें, जोतां एक पलक्क ॥ तुम पासें अमें
 आविया, जोई सर्ग हलक्क ॥ १० ॥ यमनृपनो ए नृत्य
 ठे, आसोमड्ड नामें सनूर ॥ आमंत्रण करवा नणी,
 आव्यो तुम्म हजूर ॥ ११ ॥ इणिपरें हरिबलें मांमीने,
 कह्या संदेशा जाम ॥ मदनवेग राजी थयो, ते निसुणी
 अनिराम ॥ १२ ॥ तिणो अवसर तक जोइने, सुरनै
 कीधी शान ॥ सुर बोड्यो जमनो थइ, सांजलो तुमें
 राजान ॥ १३ ॥

(१९५)

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ फतमलनी देशी ॥ नरपति सांजलो माहरी वा
 ए, आसोमह वेधक कहे ॥ न० ॥ ठे जगमें यमराज,
 त्रिजग आणा शिर वहे ॥ १ ॥ न० ॥ तेणें मुऊ तु
 म संग, मूक्यो तुम आमंत्रवा ॥ न० ॥ राखी मने बहु
 रंग, चालो तुमें स्वर्ग यंत्रवा ॥ २ ॥ न० ॥ ठे मनमें घणी
 होंश, मिलवा तुम यम नाथने ॥ न० ॥ दीधा ठे घणा
 सूस, वेगें पधारो लेइ साथने ॥ ३ ॥ न० ॥ मंत्रि प्र
 मुख परिवार, तुम नगरीमें जे होवे ॥ न० ॥ ल्यो
 तुम साथ विस्तार, सुरलोक नर नारी जोवे ॥ ४ ॥
 न० ॥ तुम मन वंडित होय, रमणी रुद्धि दो पावशो
 ॥ न० ॥ अजरामर पद जोय, सो पण लहेशो जो
 आवशो ॥ ५ ॥ न० ॥ म करो ढील लगार, शीघ्र
 थाउ तुमें जूधणी ॥ न० ॥ यम नृप तुमगुंजी प्यार,
 राखे ठे एकंगो तुम जणी ॥ ६ ॥ न० ॥ इणिपरें
 सुर ते वदंत, हरिबल शाखा जेदथी ॥ न० ॥ सांजली
 मन हरखंत, यमना संदेशा उमेदथी ॥ ७ ॥ न० ॥
 धन घडी धन मुऊ दीस, यमगुं थयो मुऊ नेहलो ॥
 ॥ न० ॥ सज थइ विशवावीश, यम कने जाउं जो
 वेहलो ॥ ८ ॥ न० ॥ पूढी यमने संदेश, मननी चांति

(१ ए६)

टालुं परी ॥ न० ॥ यमचुं वधारी नेह, अमरपणुं ते
लहुं खरी ॥ ए ॥ न० ॥ नगरमां पडहो वजाय,
धरोघर लोकने नोतखां ॥ न० ॥ नर नारी हर्ष जराय,
यमघर जावाने परवखा ॥ १० ॥ न० ॥ निर्धन वि
रहिणी नार, बालरंभादि दो जागिया ॥ न० ॥ जाणे जम
दरवार, जाइने थइयें सोजागियां ॥ ११ ॥ न० ॥ वां
जीया वांढा बेकार, दुःखीया स्त्री सुत कारणें ॥
॥ न० ॥ ते पण उमह्या अपार, जावाने यम बा
रणें ॥ १२ ॥ न० ॥ रोगीने दुःखीया जेह, लुला टूं
टा ने पांगला ॥ न० ॥ कोढीया काला तेह, काणा कों
चा ने आंधला ॥ १३ ॥ न० ॥ बाल तरुण जे वृद्ध,
सज्ज थयां मोकरी मोकरी ॥ न० ॥ अमर पदवी पर
सिद्ध, ले आवो यमने नोरो करी ॥ १४ ॥ न० ॥ इक
इकनी माहोमांहे, उपरा उपर पडी वंहे ॥ न० ॥
जावाने स्वर्ग उब्बाह, जमण लाडु खावा गह गहे ॥
॥ १५ ॥ न० ॥ इणिपरें नगरीनां लोक, यमनणी
जावाने हलफले ॥ न० ॥ नृप पण यम सारु ठोक,
लेइने नृप पण नीकले ॥ १६ ॥ न० ॥ अंतेउरी पण
साथ, नृप संगें करी परवरी ॥ न० ॥ जेटवा ते य
मनाथ, ठत्रीश नृपकुली संचरी ॥ १७ ॥ न० ॥ धक

मक करतां रे एम, नागर जन सहु संचख्यां ॥ न० ॥
 हरिबल ने सुर तेम, ते पण साथें नीसुखा ॥ १७ ॥
 ॥ न० ॥ तिल जेटलो नहि माग, एटली मांधता म
 ली ॥ न० ॥ चय सुधी पामी ते लाग, तव हरिबल
 मन अटकली ॥ १८ ॥ न० ॥ मळीयें जाणी ते वात,
 सही तो ए नृप. कांते चढे ॥ न० ॥ अंतोउरी पण
 साथ, ते पण जइ वासैं चढे ॥ १९ ॥ न० ॥ बीजा
 नगरजन सर्व, ते पण नृपनी केडें चढे ॥ न० ॥ तव
 होवे पापनुं पर्व, घोर करणी बहु नव नडे ॥ २० ॥
 ॥ न० ॥ हरिबल चिंते रे ताम, ठे मुळ वयरी जे
 माहरे ॥ न० ॥ बीजानुं गुं काम, काम ठे एकनुं मा
 हरे ॥ २१ ॥ न० ॥ देवं उपाडी तास, चिता अग्नीनी जा
 लमां ॥ न० ॥ निकले जमनो पास, एठ जायें यम
 शालमां ॥ २२ ॥ न० ॥ चिंतवी इम अनेदान, देवं
 नृपादिक जंतुने ॥ न० ॥ गुरु उपदेशने मान, जी
 वित देवं बीजा संतने ॥ २३ ॥ न० ॥ इम जाणी
 ततकाल, सलगडी चिंता तिण समे ॥ न० ॥ नच
 लगें प्रगटी त्यां जाल, देखत कायर मन नमे ॥ २४ ॥
 ॥ न० ॥ नृप कहे करी शणगार, वाजित्र मंहोटे
 वाजते ॥ न० ॥ पेसे ते अगनी मजार, तव हरिबल

(१९८)

कहे गाजते ॥ १६ ॥ न० ॥ खमो एक स्वामी ल
गार, वात विचारीने कीजियें ॥ न० ॥ पूढी जम प
डिहारु, विण पूढे पगलुं न दीजियें ॥ १७ ॥ न० ॥ तव
पूढे महिपाल, यम पडिहारने तक लही ॥ न० ॥ चोथा
उद्धासनी ढाल, पांचमी लब्धिविजय कही ॥ १८ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कर जोडी परिहारने, पूढे तव महिपाल ॥ जो
तुम हुकम हुवे खरो, तो वरुं अग्रीजाल ॥ १ ॥
तव कहे सुर परिहार ते, सांजलो कहुं नृप तुम्ह ॥
डुष्ट कुबुद्धि अटारडो, ठे यम राणो अम्ह ॥ २ ॥ तुम
नभरीनां मानवी, जोवा थयां सहु सज्ज ॥ पण यम
आगल नवि रहे, तुमची महोटी लज्ज ॥ ३ ॥ तेमाटे
तुमें मोकलो, जे तुम वद्वज होय ॥ यमने पूढी उ
तावलो, आवे स्थानक जोय ॥ ४ ॥ तयार पर्जे आपें
सहु, जइ यम नृप प्रणमेय ॥ तेहना हुकमथी उतुखा,
जिहां कतारो देयं ॥ ५ ॥ विण पूढे जो जाइयें, तो
खीजे यमराय ॥ जीवधि यम जूदा करे, तुम सहु
साथने धाय ॥ ६ ॥ इम नृपने ते सुर कहे, यमनुं
ए ठे शूल ॥ काज विचारी कीजियें, तो वधे आपणुं
मूल ॥ ७ ॥ ते वाणी नृप सांजली, चमक्यो चित्त

(१ एण)

मजार ॥ जली कही इण नाकियें, आणी मन उप
गार ॥ ७ ॥ तव नरपति कहे मंत्रिने, सांजल तुं कालसे
न ॥ जमदरबारें जायवा, शीघ्र थाउं तुम तेण ॥ ८ ॥

॥ ढाल ठी ॥

॥ नयन हमारे जालनां ॥ ए देशी ॥ तव हरखित
मंत्री थयो, सांजलि नृपनी वात ॥ सनेही ॥ यमने मं
दिर जायवा, थयो उत्सुक हरखात ॥ स० ॥ त० ॥ १ ॥
जाणै मंत्री मन्त्रमें, तूठा मुऊ जगवान ॥ स० ॥ यम
मंदिर हुं जाइने, मागुं वंछित दान ॥ स० ॥ त० ॥ २ ॥
राजी करुं आइदेवने, लटपट करी गुण गेह ॥ स० ॥
अमर पटो लेउं मागीने, रमणी रुद्धि सुदेह ॥ स० ॥
त० ॥ ३ ॥ इणपरें मंत्री आलोचीने, सज्ज थयो ति
णिवार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण
उदार ॥ स० ॥ त० ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार ठे, ते
आवे मुऊ साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने जेटीयें, ज
रीयें वंछित बाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे
पडिहारने, मुऊ मंत्री ले संग ॥ स० ॥ सर्ग जुवन पद
दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥ ६ ॥ कंरी
प्रणिपत माहरी तिहां, करजो मुऊ अरदास ॥ स० ॥

(१००)

कहो तो ठडी अस्वारीछुं, आवुं तुमचे विसास ॥
॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥ कहो तो सहु नगरी तणो, सध
लो आवे साथ ॥ स० ॥ यम राजाने जेटवा, आवे
विशालानाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इणिपरें विनती
माहरी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आ
वजो, यमनी रजा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ९ ॥ तव सु
र कहे ते रायने, जली कही तुमें गुऊ ॥ स० ॥ मुऊ
स्वामी यमनाथने, मेलवुं मंत्री तुऊ ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १० ॥ एम कही पडिहार ते, मागी नृपनी शीख
॥ स० ॥ बेगो अगनी जालमां, सहु जन देखत
ईख ॥ स० ॥ त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण कालसेन ते,
नृपने कीध जुहार ॥ स० ॥ नगरी जन सहु साथने,
प्रणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥ १२ ॥ बेगो च
यनी जालमां, मंत्री पण तेणि वार ॥ स० ॥ सुर
संगें कालसेन ते, मंत्री बली थयो ठार ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १३ ॥ नगरी जन सहु देखतां, मंत्री सुर थयो
ठार ॥ स० ॥ जोतां खिण एक पलकमें, पडोता यम
दरबार ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ नगरीजन नृप आदि
ते, मंत्रीनी जोवे वाट ॥ स० ॥ जाणे मंत्री आवजो,
यम जणी करी गद्गट ॥ स० ॥ त० ॥ १५ ॥ इणिपरें

दो घडी चौ घडी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ हजीय
 लगण आव्यो नही, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥
 ॥ त० ॥ १६ ॥ तव हरिबल कहे नृपने, सुं कहो स
 मजू थाय ॥ स० ॥ जे गयो यमने मंदिरें, ते किम
 आवे थाय ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां मडदां
 मशाणमां, ते जो जीवतां थाय ॥ स० ॥ तो पाठो
 मंत्री इहां, आवे तुमचे पाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥
 शीहवे एहनी चिंता करो, म करो मंत्रीनी तांत ॥
 ॥ स० ॥ करणी जेहवी इणें करी, तेहवो लह्यो ते
 घात ॥ स० ॥ त० ॥ १९ ॥ विण खूने तुम मंत्रवी,
 लीधी माहरी केड ॥ स० ॥ तव में दीधो ए अग्रिमें,
 यम मित्रों ए करि जेड ॥ स० ॥ त० ॥ २० ॥ वली
 तुमने इणो कुमतियें, तुमचां जंगव्यां हाड ॥ स० ॥
 दांत पडाव्या जे तुम तणा, ते तुम मंत्रीनो पाड ॥
 ॥ स० ॥ त० ॥ २१ ॥ ए गुण मंत्री तुम तणा, हुं
 करुं केतां वखाण ॥ स० ॥ उष्ट कुबुद्धि जे हतो, ते
 हनां में काढ्यां प्राण ॥ स० ॥ त० ॥ २२ ॥ एहनो
 धोखो मत करो, राखो मन नृप गोर ॥ स० ॥ मूक्यो
 में नारकी पांतिमां, सातमी जे कही घोर ॥ स० ॥
 ॥ त० ॥ २३ ॥ जे जेहवी करणी करे, तेहवी लहे

(१०१)

फलपत्य ॥ स० ॥ उंकण उंकणनी परें, मेळ्यो उखा
णो सत्य ॥ स० ॥ त० ॥ १४ ॥ कुण राणा कुण दूबला,
करणी सारु होय ॥ स० ॥ कुगति सुगति लहे कर
णीयें, उत्तम मध्यम जोय ॥ स० ॥ त० ॥ १५ ॥
इणिपरें नरपतिजी तुमें, जो करशो अन्याय ॥ स० ॥
तो तुमची गति इणि परें, होशे ठाउकी राय ॥ स० ॥
॥ त० ॥ १६ ॥ इणिपरें वाणी सांजली, चमक्यो न
रपति चित्त ॥ स० ॥ सांजल रेजीत जाटिका, जाणी
महानी रीत ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ मंत्रीनी लइ नस्म
ते, जल शरणें करी राय ॥ स० ॥ हरिबल कहे नृप
गुह तणी, जाय अलाय बलाय ॥ स० ॥ त० ॥ १८ ॥ इम
कहि नृप मंदिरें, वलियो ते महिपाल ॥ स० ॥ लब्धि कही
ठही मर्मनी, चोथ्या उद्धासनी ढाल ॥ स० ॥ त० ॥ १९ ॥
॥ दोहा ॥

॥ नृपादिक नगरी जना, सहु संमज्या मनमांहि ॥
ए करणी हरिबल तणी, जाणी सघले त्यांहि ॥ १ ॥
जली थई जावठ गई, विण उषधें विराध ॥ हरिबल
केरा धर्मथी, हवे थइ सुख समाध ॥ २ ॥ इम कहेतां
नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ हरिबल साचो
हीरजो, पुण्य तणो ए थोक ॥ ३ ॥ कालसेन कुपा

त्रने, बाव्यो हरिबलें ठीप ॥ जन दिये रंग वधामणां,
 घर घर घृतना दीप ॥ ४ ॥ सर्ग नरग दुनियां मुखें,
 जाखे सघली वात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेह
 वी वहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो कहे ज्ञानथी, देखी
 स्वर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मतें करि, करणीयें नर्ग
 ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधुं जाण्युं का
 म ॥ हरिबल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति ताम
 ॥ ७ ॥ तव हरिबल कहे रायने, म करो मनमें सो
 च ॥ तुम मंत्री ते कुमतियें, तुमचो कराव्यो लोच ॥
 ॥ ८ ॥ लंकायें मुळ मोकव्यो, वलि मूक्यो यम घेर ॥
 तुमें चूक्या मुळ नारीशुं, तव में करि ए पेर ॥ ९ ॥
 तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में
 राख्या जीवता, करुणा आणी नाथ ॥ १० ॥ ए गुण
 लेजो माहरो, जीवित सूधी नूप ॥ एम कही हरिब
 ल तिहां, आव्यो निज घर चूप ॥ ११ ॥ वसंतसिरी
 कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ पियु मुखचंद विलो
 कतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलसे संसा
 रमां, टाली सघलां शय्य ॥ करणी करे जिन धर्मनी,
 हरिबल मढी अठील ॥ १३ ॥ परतख देखी पारंखुं,
 हरिबल केरो धर्म ॥ पुरजन सहु धर्मी थप्पा, टाली

मिथ्या जर्म ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे
निज कीधां चरित्र ॥ ते देखी धोखो करे, नरपति म
नशुं बिचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ महिपति जांखे प
रजने रे, बेगो ते निज धाम ॥ साजन सांजलो रे ॥
हा हा में ए छुं कछुं रे, अणघटतुं ए काम ॥ १ ॥ सा०
॥ गुणवंत जे गुण धाम, मूकी आमलो रे ॥ ए आं
कणी ॥ किया जवनी मोहनी रे, जागी इण जव मां
हि ॥ सा० ॥ ए नारीथी दुःख लहुं रे, विण कामें
निरुद्धाहि ॥ २ ॥ सा० ॥ तन धन खोयां नृप कहें
रे, खोइ नारीथी लाज ॥ सा० ॥ वात चलावी चिहुं
दिशें रे, वाजते ढोल आवाज ॥ ३ ॥ सा० ॥ पूरव
जवनी वैरिणी रे, पोष्युं वयर विशेष ॥ सा० ॥ जेह
वी करणी में करी रे, तेहवी लही तस रेख ॥ ४ ॥
सा० ॥ दोष नहीं को एहनी रे, ठे सघलो मुऊ दोष
॥ सा० ॥ पी पाणी घर पूढीने रे, शो तस करवो शोष
॥ ५ ॥ सा० ॥ कुलमर्यादा मूकीने रे, खोटी में मागी नी
ख ॥ सा० ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गण्यां रे, कोनी न
मान्नी शीख ॥ ६ ॥ सा० ॥ पारकी मति हुं चाली

(१०५)

यो रे, मेढ्यां कुकर्मनां मूल ॥ सा० ॥ कोडीनी गरज
सरी नही रे, नृप करे नावी धूल ॥ ७ ॥ सा० ॥ मुक्त
घरे ठे ठती पदमणी रे, राणी रूप निधान ॥ सा० ॥
ते मूकी होंशी ययो रे, उखर करवा निदान ॥ ८ ॥
सा० ॥ ठे स्त्री अशुचिनी कोथली रे, मल मूत्र नरियां
गात्र ॥ सा० ॥ बारे द्वार वही रह्यां रे, पहेल्यां दिसे
सुपात्र ॥ ९ ॥ सा० ॥ अण बोलाव्यां सुंदरु रे, दीसे
ढांक्या रतन्न ॥ सा० ॥ काम पडे त्रटकी वहे रे, वि-
चक विचाडी तन्न ॥ १० ॥ सा० ॥ जागे योवन यौवनें रे,
वाधे कामनुं जोर ॥ सा० ॥ सिद्ध साधक कुण सुर
नरा रे, जोवे अंगनां तोर ॥ ११ ॥ सा० ॥ पंचास्ति-
कायमें पण कहां रे, जिनवरें कामनां बाण ॥ सा०
॥ तो मानवतुं शुं गजुं रे, कामें मनावी आण ॥ १२ ॥
सा० ॥ धिग धिग काम विटंबना रे, कामें लाज गमा
य ॥ सा० ॥ कामें खोवे मालने रे, कामें गीत गवाय
॥ १३ ॥ सा० ॥ वध बंधन कामें लहे रे, कामें उं
चा टंगाय ॥ सा० ॥ कामें दंभ जरे सही रे, कामें हां
सी कराय ॥ १४ ॥ सा० ॥ कामज्वरें बलतो रहे
रे, तनथी ह्रीण ते थाय ॥ सा० ॥ मात पितादिक
नवि गणे रे, न गणे कामांध कांय ॥ १५ ॥ सा० ॥

(૧૦૬)

વીતી હજો તે જાણજો રે, જે કરે પરસ્ત્રીનો સંગ ॥
 સાળ ॥ તે હોજો સ્વેરુ વિકારશું રે, સ્વોઈ તન મન રંગ ॥
 ૧૬ ॥ સાળ ॥ શી મુજને એ ડપની રે, પડવા નારકી
 કુંમ ॥ સાળ ॥ ધિગ ધિગ માહરી બુદ્ધિને રે, જે થયો
 વ્યસની જુંમ ॥ ૧૭ ॥ સાળ ॥ ધન હરિબલની બુદ્ધિને રે,
 દીધું જીવિત દાન ॥ સાળ ॥ અજર પ્યાલો ઇણ જીરવ્યો
 રે, દીઠો વડો સાવધાન ॥ ૧૮ ॥ સાળ ॥ જો કોપે
 મુજ ઉપરે રે, તો કરે મંત્રીની રીત ॥ સાળ ॥ રાજા લી
 ચે મુજ એકલો રે, તો શી રહે પરતીત ॥ ૧૯ ॥ સાળ
 ॥ મેં મહારે હાથે કરી રે, કરણી સ્વોટી કીધ ॥
 સાળ ॥ નીતિ મારગ લોપી કરી રે, હરિબલને ડુઃખ
 દીધ ॥ ૨૦ ॥ સાળ ॥ તે કિમ સાંઠ સાંસહે રે, જે
 હું ચાલ્યો અનીત ॥ સાળ ॥ તો શીસ્વામણ નલી જ
 ડી રે, કદિ નહિ વિસરે ચિત્ત ॥ ૨૧ ॥ સાળ ॥ અવ
 ગુણ ઉપર ગુણ કરે રે, તે તો હરિબલ એક ॥ સાળ ॥
 મુજને રાખ્યો જીવતો રે, દયાવંત વિવેક ॥ ૨૨ ॥
 સાળ ॥ સુગુણ પુરુષ મેં દીઠડો રે, હરિબલ સાહસ
 ધીર ॥ સાળ ॥ ઉપગારી શિરસેહરો રે, વીર શિરોમ
 ણિ વીર ॥ ૨૩ ॥ સાળ ॥ ધન હરિબલના તાતને
 રે, ધન હરિબલની માત ॥ સાળ ॥ કૃત્રિવંશમાં દી

(१०७)

पतो रे, सुजट शिरोमणि जात ॥ १४ ॥ सा० ॥
 धन धन ते गुरुदेवनै रे, जेणें बताव्यो धर्म ॥ सा०
 ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुज शर्म ॥ १५
 ॥ सा० ॥ इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मद
 नवेग ॥ सा० ॥ तोल वधाख्यो माहरो रे, हरिबलछुं
 करि नेग ॥ १६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे,
 परणावुं गुज काज ॥ सा० ॥ कर मूकामण वली दीयुं
 रे, महीयल महोदुं राज ॥ १७ ॥ सा० ॥ गुण
 उंशीगण ए थइ रे, हुं हवे थाउं निःपाप ॥ सा० ॥ पठें
 हुं संयम आदरुं रे, ज्युं मटे जवनो संताप ॥ १८ ॥
 सा० ॥ एता दिन नूलो नम्यो रे, विण दर्शन मुक्त
 जीव ॥ सा० ॥ हवे करणी एहवी करुं रे, जिम ल
 हुं सुख सदीव ॥ १९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना
 परजमें रे, कीधी ते महिपाल ॥ सा० ॥ चोथा उ
 द्वासनी ए कही रे, लब्धि सातमी ढाल ॥ २० ॥ सा० ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ इणपरें नृप आलोचनी, आलोयां निज पाप ॥
 हलुआकर्मी नृप थयो, करवा शिव मेलाप ॥ १ ॥
 जिहां सुधी अज्ञानतम, व्यापी रह्युं घटमांहि ॥ ति
 हां सुधी ते जीवडो, पाम्यो ज्ञान न क्यांहि ॥ २ ॥ स-

हज गुणे जग जीवने, आवे शुद्ध स्वभाव ॥ तव घट
 में दर्शन रवि, प्रगटे तेज प्रभाव ॥ ३ ॥ तव ठंमे अ
 ज्ञान तम, प्रगटे ज्ञान उद्योत ॥ अष्ट करम दल ठे
 दिने, जइ नले ज्योतिमें ज्योत ॥ ४ ॥ हवे करणी करुं
 धर्मनी, ठेहडो समारुं शुद्ध ॥ वणकर पण ते वस्त्र
 नो, ठेहडो समारे शुद्ध ॥ ५ ॥ इम जाणी हरिबल
 प्रत्ये, तेडाव्यो नृत्यपास ॥ हरिबल पण तिहां आवीयो,
 ततखिण नृप आवास ॥ ६ ॥ अरधुं आसन आपीने,
 कर जोडी कहे नाथ ॥ अरज सुणो एक माहरी, ह
 रिबल ठो तुमें आथ ॥ ७ ॥

॥ ढाल आवमी ॥

॥ हांजी रामपुरा बाजारमां ॥ ए देशी ॥ हांजी हरि
 बलप्रत्ये हवे नृप कहे, तुमें सांजलो गुणधि अगाध ॥
 तोरी बलिहारी रे हरिबल माहारा ॥ ए आंकणी ॥ हांजी
 हुं खूनी थयो तुम तणो, मुऊ खमजो ते अपराध
 ॥ १ ॥ तो० ॥ हांजी लांबां जाखां शाकरुं, हुं तो हुं,
 तुम नवोजव चोर ॥ तो० ॥ हांजी में तुमहुं एहवी
 करी, तिण नही मुऊ सातमी ठोर ॥ २ ॥ तो० ॥
 हांजी विषयारसनो लोलुपी, थयो ते ठती वस्तें उ
 जूक ॥ तो० ॥ हांजी लंकागढ यमने घरे, में मूक्या

(३०९)

तुम करी चूक ॥ ३ ॥ तो० ॥ हांजी ए पातक किहां .
 बूटस्यां, में कीधो जेह अन्याय ॥ तो० ॥ हांजी ते
 रखे रोष चित्तें धरो, तुम कहुं बुं गोद बिठाय. ॥ ४ ॥
 तो० ॥ हांजी हुं तुम खामुखां थयो, मत राखजो
 अंतर वेर ॥ तो० ॥ हांजी इम नृप कहे हरिबल तु
 में, मुऊ उपर राखजो महेर ॥ ५ ॥ तो० ॥ हांजी
 तव हरिबल नृपने कहे, तुमें ए शुं बोल्या नाथ ॥
 तोरी बलिहारी रे नरपति माहरा ॥ ए आंकणी ॥
 हांजी हुं सेवक बुं तुम तणो, मुऊ तुमें ठो महोटी
 आय ॥ ६ ॥ तो० ॥ हांजी माहरे तुमशुं को नही,
 कांही अंतरगतमें द्वेष ॥ तो० ॥ हांजी तुम मंत्री कास
 सेन जे, तेणो जंजेखो तुम ठेक ॥ ७ ॥ तो० ॥ हांजी
 तुम अम वचें विगताविने, तुम कुमतियें घाली राड
 ॥ तो० ॥ पण जेहवी करी तेहवी लह्यो, बल्यो जीव
 तो तेह किराड ॥ ८ ॥ तो० ॥ हांजी तुम अम हवे कोइ
 वातनो, मत राखोजी अंतर कोय ॥ तो० ॥ हांजी
 तुम अम जीवडो एक ठे, ए तो देखत ठे तन दोय
 ॥ ९ ॥ तो० ॥ हांजी मिथ्याडुःकृत मुऊथकी, तुमें
 मानजो नृप करि साच ॥ तो० ॥ हांजी राग द्वेषना
 योगथी, जेह बांध्यां निकाचित वाच ॥ १० ॥ तो० ॥

हांजी इत्यादिक वचनें करि, हांजी हरिबलें खामणां की
 ध ॥ तो० ॥ हांजी अन्यो अन्य राजी थया, नृप हरिबल
 दोय प्रसिद्ध ॥ ११ ॥ तो० ॥ हांजी हवे हरिबल प्रत्ये नृप
 कहे, तुमें सांजलो मुऊ अरदास ॥ तो० ॥ हांजी मुऊ
 पुत्री जयसुंदरी, तुम पालव बांधुं उल्लास ॥ १२ ॥ तोरी
 बलिहारी रे हरिबल माहरा रे ॥ ए आंकणी ॥
 हांजी कर मूकामण में दीयुं, वली मुऊ नगरीनुं राज
 ॥ तो० ॥ हांजी आण मनावो तुम तणी, मुऊ म
 होटी वधारो लाज ॥ १३ ॥ तो० ॥ हांजी एम कहीने
 ततखिणें, हांजी मेली परखद त्यांह ॥ तो० ॥ हांजी
 पंवनी साखें मञ्जीने, करे तिलक ते नृप उल्लाह ॥
 ॥ १४ ॥ तो० ॥ हांजी गुन चोघडीयुं जोइने, करि
 आपना गवरीपुत्र ॥ तो० ॥ हांजी धवल मंगल वज
 डावीयां, करपीडन करवा सूत्र ॥ १५ ॥ तो० ॥ हांजी
 गुन लगनें गुन मुहूरतें, हरिबलने नृप पद दीध ॥
 ॥ तो० ॥ हांजी पद महोत्सव अतिही करे, जिम,
 जाणे लोक प्रसिद्ध ॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी नगरी
 विशाला साचली, शणगारी अइ उजमाल ॥ तो० ॥
 जाणे स्वर्गपुरी आवी वसी, ए तो तेजें जाकजमाल
 ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी स्वयंवर मंगप रोपीने, नृप

(१११)

देशनां तेडां कीध ॥ तो० ॥ हांजी सोवनमय चोरी
रची, वर कन्या वरवा सुसिद्ध ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी
वाजिंत्र महोटे वाजते, हांजी वाजते यंत्र मृदंग ॥
॥ तो० ॥ हांजी तत थेइ नटुआ नाचता, हांजी
करता नवनवा रंग ॥ १८ ॥ तो० ॥ हांजी सोजागिणी
साहेलीयो, मली सरखा सरखी बाल ॥ तो० ॥ हांजी
कोकिल स्वरें करी सोहली, जलां गावे गीत रसाल
॥ १९ ॥ तो० ॥ हांजी ते गीत नादना स्वादथी, रहे
थंजी अमर विमान ॥ तो० ॥ हांजी इणि परें नारी
टोले मली, ए तो गावे रूप निधान ॥ २० ॥ तो० ॥
हांजी मंगल वाजां वाजते, हांजी गाजते गुहिर
निशाण ॥ तो० ॥ हांजी इण आमंवरें धीवरु, च
ढयो परणवा चतुर सुजाण ॥ २१ ॥ तो० ॥ हांजी
अलबेला जानी थया, हांजी जाणीयें देवकुमार ॥
तो० ॥ हांजी हरिबलने परणाववा, हांजी आव्या
जप दरबार ॥ २२ ॥ तो० ॥ हांजी घणे आमंवरें सो
कृत करी करता नृत्य हजार ॥ तो० ॥ हांजी जीव
प्रवचन रचवथी, ठवे तोरण हरिबल सार ॥ २३ ॥
सुविहित गुसजी प्रीतिमती पट्टरागिणी, तीर धूसरें
सवि ठांमि ॥ तो० ॥ हांजी चोरीमां पथरावीयां,

(१११)

वर कन्या कर मेलाइ ॥ १५ ॥ तो० ॥ हांजी पालव
बांधी दोयना, हांजी फेरा फेरव्या चार ॥ तो० ॥ हां
जी वर कन्यायें आरोगीयो, हांजी सुंदर मिठो कंसार ॥
॥ १६ ॥ तो० ॥ हांजी जयसुंदरी परणावीने, हरिब
लने दीधुं राज ॥ तो० ॥ हांजी पायक सप्त लक्ष अ
श्वनी, ठकुराई दीधि समाज ॥ १७ ॥ तो० ॥ हांजी जो
जो नवियां पुण्यथी, लहि मन्ही सुकृत माल ॥ तो० ॥
हांजी चोथा उद्गासनी ए कहि, शुन लब्धें आठमी
ढाल ॥ १८ ॥ तो० ॥

॥ दोहा ॥

॥ मदनवेग हरखें करी, कीधो उडव सार ॥ सोनुं
रूपुं सामटुं, वरसे ज्युं जलधार ॥ १ ॥ जसपडहो वज
डावियो, नगरी जमाडी सार ॥ हरिबलने राजें ठव्यो,
वरत्यो जय जयकार ॥ २ ॥ बंदीजन मूंक्या परा, आ
णी मन उपगार ॥ आसीजन तृपता कखा, दानें देदे
कार ॥ ३ ॥ पद महोडव अतिहे कखा, राखी जगलने
ख्यात ॥ हरिबल जे राजा थयो, चाली मियां ध
वात ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु हरखीयां वा रे, मनो
हरिबल राय ॥ देश देशावरि नेटणां, वा रे, मदन
धाय ॥ ५ ॥ इणिपरें पद महोत्सव क जपता रे,

(११३)

नवेग ॥ हरिबलने राज्यें ठवी, प्रबल वधाखो नेग ॥
 ॥ ६ ॥ हरिबल पण सुख नोगवे, पाले राज्य अखं
 न ॥ आण मनावी चिहुं दिशें, जुजबलि नीम प्रचं
 न ॥ ७ ॥ हवे नृप जामाता कने, ससरो मागे शी
 ख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं लेहुं दीख ॥
 ॥ ८ ॥ निज आतमने तारवा, लेहुं संयमनार ॥ शिव
 रमणीशुं नेहलो, करवा थयो दुशियार ॥ ९ ॥ एम
 कही नृप सज थयो, चढते ते परिणाम ॥ दीक्षा-
 महोत्सव शुभ करे, हरिबल तव गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल नवमी ॥

॥ अमदावादना खेड्या रे, वालम आवजो रे ॥
 ए देशी ॥ संयमनारी वरवा रे, नृप मन उल्लस्यो रे ॥
 पापस्थान अढारथी रे, नृप दूरें खस्यो रे ॥ आणी
 समता जाव रसाल, राणी पण अइ सार्थें विशाल ॥
 पंचम गतिने हेतें रें, संयम आदरे रे ॥ १ ॥ साते
 क्षेत्रें जावें रे, धन बहु वावरे रे ॥ निर्मल चित्तें अइने रे,
 होता, होण्णी आचरे रे ॥ समकित निर्मल शुद्ध करेय,
 दयाना प्रजन्त चित्त धरेय ॥ घणे आमंवरें आवे रे,
 ॥ तो ॥ वावरे रे ॥ २ ॥ बाह्यान्तर केरा रे, मल
 पोखे जमा ॥ परमातमने गेहें रे, संकेत मांमिया-

रे ॥ मूकी घरनो सघलो शोच, पंच मुष्टिछुं कखो
 तिहां लोच ॥ राजा राणी आदें रे, चारित्रने ग्रहे
 रे ॥ ३ ॥ तव हरिबल गुन जावें रे, ससराने कजवे
 रे ॥ दीक्षा महोत्सव जावें रे, कखो जन संस्तवे रे ॥
 वरसे ज्युं जादरवानो जलधार, वरसे त्युं हरिबल
 सोवन धार ॥ कविजन जेता तेता रे, श्लोक नणे
 घणा रे ॥ ४ ॥ सुरपतिनी परें कीधो रे, महोत्सव
 दीक्षनो रे ॥ द्वायिक समकित केरो रे, ग्रह्यो दंम
 ईक्षनो रे ॥ दीक्षा उल्लवतुं फल एह, हरिबल पाम्यो ते
 गुणगेह ॥ शिव रमणीनो साचो रे, पालव बांधियो
 रे ॥ ५ ॥ धन धन मदनरूपिजी रे, बलिहारी ता
 हरी रे ॥ संजम नारी प्यारी रे, वरी तुमें जाहरी
 रे ॥ धन धन स्वामी तुमचो जेख, धन धन जीत्या
 राग ने छेप ॥ ते गुण लीणो तुमचो रे, दुं किंकर थड
 रह्यो रे ॥ ६ ॥ धन्य स्वामी करुणारसें रे, मन संतो
 पियो रे ॥ संवेग रसें करी आतम रे, निर्मल पोषि
 यो रे ॥ धन धन्य स्वामी तुम दृढ चित्त रे, नचेंदुं दिशि
 कण राजनी नीत ॥ धन धन्य स्वामी जव थयो
 बल जावनें रे ॥ ७ ॥ इम गुण आवे नृप
 वेग रूपिराजना रे ॥ धन्य धन्य जे नृप मद

हरिबल पुरजना रे ॥ इणि परें करता स्तवना अपार,
 कृषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिबल राजा
 आदि रे, सहु वांदी वय्या रे ॥ ७ ॥ हवे कृषि-म
 दनवेगजी रे, गुरुसंगें जणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रे,
 विचार ते संशुणे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चाले
 सूधा नय व्यक्हार ॥ दंपति दोये साचां रे, जिन म
 तमें वहे रे ॥ ८ ॥ अध्यातमपुर सुंदर रे, निरखी तिहां
 रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, महोटां गह गहे
 रे ॥ तेहमें कीधो दो जणें वास, करे तिहां बेगं ज्ञान
 अन्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चरणगुं रे, रहे जीनां यकां
 रे ॥ १० ॥ ध्यान सुतखतें बेगं रे, दो वखतें इक
 मनां रे ॥ समकित ठत्र धरावि रे, हरखें दो जणां रे ॥
 सोहे चामर श्रुत चारित्र, पाले महोटां आव मावि
 त्र ॥ धर्म सजा दश मेले रे, सत्य दरबारमां रे ॥ ११ ॥
 संयम हाथी गुन मन रे, घोडा दीपता रे ॥ अष्टक
 रमात गुनमें रे, वेगें जीपतां रे ॥ शीलांगरथ गुन
 महोटां गुन, संवर सुजट सुतेज अनंत ॥ मदन
 वेग गुनमें रे, दरबारें ठाजता रे ॥ १२ ॥ जेद-वि
 ज्ञान गुनमें रे, बांधी न्यायनी रे ॥ खीर ने नीर
 ज्युं गुनमें रे, करे संजायनी रे ॥ सातमे गुणठाणे

(३१६)

चित्त लाय, मारग श्री जिनकल्पी धराय ॥ जीवनो
 कारिमो ऊगडो रे, मिटाज्यो खिण एकमां रे ॥ १३ ॥
 तेरमे गुणठाणे रे, सजोगीयें आविया रे ॥ शुक्ल
 ध्यानमे दंपति रे, दोइ ते जावियां रे ॥ तव तिहां पा
 म्यां केवल नाण, तीन जुवनमें थयां ते जाण ॥ के
 वल महोच्चव महोटुं रे, इंझादि सघला करे रे ॥ १४ ॥
 बारे परषदा मेली रे, दे धर्म देशना रे ॥ कोइ नव्य
 जीवने दीधी रे, समकित वासना रे ॥ ताच्यां नवोदधि
 थी केइ जीव, ज्योति वधूचुं प्रीति अतीव ॥ दंपति दोयें
 बणाइ रे, केवल नाणथी रे ॥ १५ ॥ विशमा जिनने
 वारें रे, मदनरुषि रायजी रे ॥ वसुधा पावन करता
 रे, फरे सुखदायजी रे ॥ आयु वरष तेत्रीश हजार,
 पाली पूरुं दंपति सार ॥ शैलेशी गुणयोगें रे, दो
 मुगति गयां रे ॥ १६ ॥ जनम मरणना जय सवि रे,
 दूरें ठंमिया रे, शिवरमणिना संगमें रे, निशिदिन मं
 मिया रे ॥ चौद जुवननां नाटक चंग ॥ ज्यो
 करजल रेह सुरंग ॥ लोक अलोकने ॥ जो
 तिहां रही रे ॥ १७ ॥ जो जो नवियां ॥ शी
 करणी हती रे ॥ मोह नृप जोरें शिखा ॥ जीन
 को रती रे ॥ तेहना धणी अइ बेठा ॥ जुव

(११७)

नमें मानीता कीध ॥ ए सवि गुण तुम लेजो रे, नवि
समकित तणा रे ॥ १७ ॥ समकित रणण ठे जगमें
रे, जनने तारवा रे ॥ नविक जीवने निमी रे, वंछित
सारवा रे ॥ नारखुं ए समकित परम निधान, मुगति
वधूनुं दाता निदान ॥ जिनवरें नारखुं सघले रे, सूत्र
सिद्धांतमां रे ॥ १८ ॥ एहवा गुण तुमें जाणी रे,
समकित धारजो रे ॥ निंदा विकथा परनी रे, दूर
निवारजो रे ॥ ज्युं लहो नवियां समकित शुद्ध, जो
जगदीश दे तुमने बुद्ध ॥ तो सडशठ बोले करीने रे,
समकित धारजो रे ॥ १९ ॥ नविक जीवने समकित
रे, जीवनुं मूल ठे रे ॥ समकितधारी जीवने रे, शिष
अनुकूल ठे रे ॥ इम कहे लब्धिविजय उजमाल,
चोथा उल्लासनी नवमी ढाल ॥ हलुवा कर्मी जीव
ते रे, वयण ए मानजो रे ॥ २० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ सुणजो नवियण तुमें, हंरिबल केरी वात
पुर नयरनुं, विलसे राज विख्यात ॥ १ ॥
प्रबल, मांमी दाननी शाल ॥ नग्र
ने, देवे दान विशाल ॥ २ ॥ नव जेदे
तणे अनुसार ॥ जन्म सफल करवा

(११७).

जणी, मांमयो सत्रुकार ॥ ३ ॥ साते खेत्रें वावरे, के
 ५ लख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मांमि
 स्वर्गसुं होड ॥ ४ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें, जिहां
 सुधी आणा राय ॥ मारी शब्द को उच्चरे, तो ते खूनी
 थाय ॥ ५ ॥ विण खूनें को जीवने, को न उपाडे श
 स्त्र ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥
 ६ ॥ इणि परें हरिबल राजवी, पाले राज्य अखंम ॥
 परजाने इंडु समो, अरिमन नीम प्रचंम ॥ ७ ॥

॥ ढाल दशमी ॥

॥ मारुजी साथीडा साथें धण रें, हाथें मद पियो
 रे लो, मारो माणिगर मारुलो ॥ ए देशी ॥ नवियां
 नगरी विशाला जाक, ऊमाला सोहती रे लो, मानुं
 कैलासपुरी लो ॥ न० ॥ सोहम वासीनी परें
 खासी, मोहती रे लो ॥ ठकुराइ उणे सन्नरी लो ॥
 १ ॥ न० ॥ पुण्य प्रजावें जावें, जोगवे राजने रे लो,
 हरिबल जाग्य विशाला लो ॥ न० ॥ सुजस, ~~मवा प.~~
 रजने, करवा साजने रे लो ॥ प्रगटयो पर
 लो ॥ २ ॥ न० ॥ शोलशें देशें पुण्य, ~~ि~~
 यें रे लो, साध्या देश हवीला लो ॥ ~~न~~
 राया तेहू, नमाया हबियें रे लो, दुहा

(३१९)

लो ॥ ३ ॥ ज० ॥ करटी काला मद मत, वाला फूल-
 ता रे लो, जाणियें दूक हिमाला लो ॥ ज० ॥ चैत
 रें केशु रंग, नवेसुं फूलता रे लो, सोहे सिंदूरें गुंढाला
 लो ॥ ४ ॥ ज० ॥ घुघर घंटा रण ऊण, घंटा वाजता
 रे लो, गाजता अंबर सूधी लो ॥ ज० ॥ एहवा संख्या
 ता गण्या नवि, जाता साबता रे लो, गज घंटा श्रेणि
 विलुद्धी लो ॥ ५ ॥ ज० ॥ रवि स्थना ज्युं वाजी,
 ताजी वेगना रे लो, ठाजे हरिबल द्वारा लो ॥ ज० ॥
 करे खुडताला पद पड, ताला मेघना रे लो, अगणित
 अश्व अपारा लो ॥ ६ ॥ ज० ॥ वहेल सुखासन
 मानुं, सुरासन ताकडा रे लो, एहवा रथ रढियाला
 लो ॥ ज० ॥ रण सुनटाला जे मठ, राला वांकडा रें
 लो, एहवा अगणित पाला लो ॥ ७ ॥ ज० ॥ सुरप
 ति सरिखी हरिबल, हरखी ग्रामनी रे लो, नोगवे रा
 ज्यनी लीला लो ॥ ज० ॥ अपठर वरणी पियु मन,
 हरणी कामिनी रे लो, विलसे शोलशें बाला लो ॥
 ८ ॥ ज० ॥ बत्रीश बद्धा नाटक, सुधा स्वादना रे
 सण तेहनूं ला ॥ ११ ॥ ज० ॥ गुलिज [REDACTED]
 सुं, विचारी प्रेष्यने रे लो, मूकुं नगरी विसा [REDACTED]
 ॥ ज० ॥ बेसी एकांतें लिखें हवे, खांतें लेखने रे

री रे लो, चिहुं दिशि कीरति चावी लो ॥ न० ॥ साग
 र स्वामी अंतर, जामी सुस्तरी रे लो, आपी ठकुराई
 लवी लो ॥ १० ॥ न० ॥ हरिबल आगें पु
 ण्य, विजागें नूतलें रे लो, बीजा नृप ठंकाणा लो ॥
 न० ॥ दानें मानें जन सवि, माने जुजाबलें रे लो,
 हरिबल जगमें पंकाणा लो ॥ ११ ॥ न० ॥ जो जो
 तोई पुण्यवंत, होई ऊगीयो रे लो, एकण जीव दयाथी
 लो ॥ न० ॥ जन मन वसियो मधुकर, रसियो जोगी
 यो रे लो, थयो सुगुरुनी मयाथी लो ॥ १२ ॥ न०
 ॥ नाखी जालने ग्रही, मठरालने ठेदतो रे लो, नि
 शिदिन जलमें हस्तो लो ॥ न० ॥ काचलां घस्तो पा
 पनो, रस्तो वेदतो रे लो, ते थयो नृपमें वस्तो लो ॥
 १३ ॥ न० ॥ एहवी वातो गुण, विख्यातो सांजली
 रें लो, वसंतसिरीने तातें लो ॥ न० ॥ बारें वरसें क
 विजन, आशें मन रली रे लो, लही सुधी पुत्रीनी मातें
 लो ॥ १४ ॥ न० ॥ नूपति निसुणी चिंते, सुगुणी शी
 थई रे लो, जो जो धाता करणी लो ॥ न० ॥ पुत्री रुडी
 कडी जली गद के, होये तडवा साथ ॥ १५ ॥
 नंदी सार्व परवरी, सेना पंच हजार ॥ योजन चउसय
 लंघिने, आव्यो विशाला पार ॥ १६ ॥ वीशालापुर नय

नो संबंध मले पर, बंध ते जातिना रे लो ॥ जावि तेह
 ज करे रे लो ॥ १६ ॥ ज० ॥ उत्तम मध्यमनुं इहां,
 कारण को नही रे लो, जाविथी को नही माह्यो लो ॥
 ज० ॥ जेहनी लागी लगन, तेहने ते सही रे लो, कोइ
 न रह्यो साह्यो लो ॥ १७ ॥ ज० ॥ मुऊथी ठानी
 गइ, निशानी कुत्रीने रे लो, न पडी खबर को अंदरें
 लो ॥ ज० ॥ हवे शा विशासा दइ, दिलासा पुत्रीने
 रे लो, तेहुं हवे निज मंदिरें लो ॥ १८ ॥ ज० ॥
 सुणि नृप हरख्यो जमाइ, परख्यो धीवरु रे लो, अतुली
 बल पुण्यवंतो लो ॥ ज० ॥ धीवर जाति थयो नृप,
 पांति शूरवरु रे लो, माहरी पुत्रीने संतो लो ॥ १९ ॥
 ज० ॥ मुऊ नगरीनो लोक ए, धीवर जातिनो रे
 लो, जेहनी दुष्कृत करणी लो ॥ ज० ॥ कुल ठ
 त्रीजें कुत्री, वंशें नातिनो रे लो, ते थयो सुकृत कर
 णी लो ॥ २० ॥ ज० ॥ रायमें रायां कविजनैं, गाया
 चिहुं जगें लो, प्रबल ए पद ठे जेहनुं लो ॥ ज० ॥
 एहवो जगें पुण्यवंत पाइ, नली वगें रे लो, देखुं दरि
 लो, होवें रंगाला राजा ॥ ज० ॥ कवि जन,
 माता उलादना रे लो, बालि बिरुद बडाजा
 लो ॥ २१ ॥ ज० ॥ हरिबल केरी अतिही, जमेरी विस्त

(१११)

लो, वसंतसेन नूपाला लो ॥ ११ ॥ न० ॥ जो जो
धर्मी हरिबल, कर्मी अधियें रे लो, कीधो जाक ऊ
माला लो ॥ न० ॥ चोथा उद्वासनी पुण्य, प्रकाशनी
लब्धियें रे लो, जांखी दशमी ढाला लो ॥ १३ ॥ न०
॥ दोहा ॥

॥ इणपरें चित्तमां चिंतवी, वसंतसेन नूपाल ॥
कागल मश लेखण करी, मांमे लेख रसाल ॥ १ ॥
स्वस्ति श्री श्रीकृष्णना, चरण कमल नमि तास ॥
लेख लख्यो रलियामणो, जामाताने उद्वास ॥ २ ॥
नृप तेडावे ततखिणें, मतिसागर मंत्रीश ॥ ते पण
ततखिण आवियो, प्रणमी नाथ जगीश ॥ ३ ॥ नू
प कहे सुण मंत्रवी, आ सोंपूं तुऊ लेख ॥ जामाता
मुऊ पुत्रिने, देजे लेख विशेष ॥ ४ ॥ कहेजे प्रणि
पत माहरी, घणी करी मनुहार ॥ कहेजे ससरे तेड
वा, मूक्यो मुऊ निरधार ॥ ५ ॥ शीख जलामण इ
णपरें, नूपें कीधी जोर ॥ सैनशुं मंत्री संधो, देइ न
गारे तोर ॥ ६ ॥ कंचन पुरनां मानवी, जाणे जाणी
वान ॥ जामाता निज पुत्रिने, जे येइ जेनी घरणी
लो ॥ १५ ॥ न० ॥ ठही रातना लेख, लख्या जे जा
तिना रे लो, कुण ते टाली शके रे लो ॥ न० ॥ जेह

(११३)

रनां, दिठां महोटां मंदाण ॥ जाणे स्वर्गपुरी वसी, आ
वीने इण ठाण ॥ ए ॥ वाडी महोर्ले मलपति, फुलि
चिहुं दिशि वनराय ॥ जाणे वन नंदननी बहेनडी,
आय वसी इण ठाय ॥ १० ॥ इणपरें सेना मंत्रवी,
देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें कस्यो, वेला शुन
घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी सखरी जोवतां, आख्या
ते दरबार ॥ हरिबल नृपने जेठिया, उपनो हर्ष
अप्पर ॥ १२ ॥ हरिबल सुरपति सारिखो, बेठो धरावी
ठत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी, दीधो नृप कर पत्र ॥ १३ ॥

॥ ढाल अग्यारमी ॥

॥ शेत्रुंजानो वासी साहेब, माहारे दिल वस्यो
रे ॥ मोरा साहेबा ॥ आदिजिन करुं रे जूहार ॥ ए
देशी ॥ कागल देइ हर्ष धरे चित्तशुं रे ॥ मोरा साहिबा ॥
एतो विनवे मंत्री विशेष ॥ तेडवा तुमने मुक्या अ
मने हेतशुं रे ॥ मो० ॥ तुमचे ससरेजीयें लेख ॥ १ ॥
कागल ० ॥ ए आंकणी ॥ निशिदिन तुमचो राखे म
मचो मव्या तणो रे ॥ मो० ॥ तुम ससरोजी नूपाल ॥
दरिसण दीजें पावन कीजें आंगणो रे ॥ मो० ॥ तुम
ची सासुनो कृपाल ॥ १० ॥ का० ॥ ससरो जमाई आनंद
पाई एकठा रे ॥ मो० ॥ बेसी करो रंग रोल ॥ नेह सुधा

(११४)

रस वरसे पावस गहघटा रे ॥ मो० ॥ उपजे ज्युं रंगचो
ल ॥ ३ ॥ का० ॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम
गुं रे ॥ मो० ॥ कहुं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी
अंतरजामी नेगगुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धरो धरी प्रेम ॥
॥ ४ ॥ का० ॥ ससरो ने सासु नही कांहि फासु था
वती रे ॥ मो० ॥ आव्या विना प्राणाधार ॥ पं
जर तिहां ठे जीव इहां ठे जावथी रे ॥ मो० ॥ इणि
परें राखे ठे प्यार ॥ ५ ॥ का० ॥ तेमाटे तुमने कहुं
गुं प्रचुने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थइ एक रंग ॥
वेगा थाउ वार म लाउ सहचरी रे ॥ मो० ॥ व्यो
सेना तुम संग ॥ ६ ॥ का० ॥ इणि परें सयणा मंत्री
वयणां सांजली रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिबल ताम ॥
कागल वांची मनमां माची मन रली रे ॥ मो० ॥
सेना सजि अजिराम ॥ ७ ॥ का० ॥ तिहांथी मंत्री
उठयो गंत्री शीघ्रथी रे ॥ मो० ॥ आव्यो ते कुमरी
पास ॥ तातनो मंत्री उलख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥
॥ मो० ॥ वसंतसिरीयें उव्वास ॥ ८ ॥ का० ॥ म
जवा ऊठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां
आंसू जोर ॥ जनकने द्वी परें मलियां जलि परें स
यणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी समोर ॥ ९ ॥ का० ॥

(३३५)

बेसि एकांतैं कुमरी खातैं पूढती रे ॥ मो० ॥ कुशल
 खेमनी रे वात ॥ मात पितानां सुख शाता जे
 ढती रे ॥ मो० ॥ ते कहो मुऊ अवदात ॥ १० ॥ का० ॥
 तव मंत्री जंपे पत्र समर्थो तातनो रे ॥ मो० ॥ वलि
 मुखयी कहे एम ॥ ठे बहु तुमछुं मलवा मनछुं
 मातनो रे ॥ मो० ॥ चातक जलधर जेम ॥ ११ ॥
 ॥ का० ॥ सो वातैं एकण वातैं मानजो रे ॥ मो० ॥
 जंतुउ ठे तुम संग ॥ मत जाणो काचुं सहि करि
 साचुं जाणजो रे ॥ मो० ॥ तुम आवे होशे रंग ॥
 ॥ १२ ॥ का० ॥ एहवो उत्तर मंत्री पडुत्तर दीधलो
 रे ॥ मो० ॥ हरखी कुमरी ताम ॥ सचिवने राजी
 कुमरीयें मांजी कीधलो रे ॥ मो० ॥ देइ वधामणी
 उदाम ॥ १३ ॥ का० ॥ दंपति दोइ मुहूरत जोइ
 हरखछुं रे ॥ मो० ॥ शोलशैं राणी समेत ॥ सस
 राने मलवा सगपण कलवा हर्षछुं रे ॥ मो० ॥
 उमाह्या जनमनें खेत ॥ १४ ॥ का० ॥ श्री
 पति नामें वणिक सुधामें मञ्जीने रे ॥ मो० ॥ राख्या
 जे पूर्वे ते जाण ॥ तेहने तेडी पूर निगेडी लञ्जीने
 रे ॥ मो० ॥ सोंपी कखो कुल्ल दिवाण ॥ १५ ॥ का० ॥
 जरतारी मेरा अतिही घणोरा सोहता रे ॥ मो० ॥

(३३६)

ताण्या तंबू जडाव ॥ रवि शशी सरखा निरखी हरख्या
मोहता रे ॥ मो० ॥ देखी तंबू बणाव ॥ १६ ॥ का० ॥
गज रथ घोडा सुजट सजोडा साबता रे ॥ मो० ॥ शण
गाख्या नाडव रंग ॥ वहेल सुखासण जाणे सुरासण
फावतां रे ॥ मो० ॥ इम सजी सेना चंग ॥ १७ ॥ का० ॥
पंचरंगी नेजा नचना ठेजा जोवता रे ॥ मो० ॥ रो
प्या नेजा उत्तंग ॥ पवनें फरके सुरपति घमके हो
जता रे ॥ मो० ॥ देखी जंभा अमंग ॥ १८ ॥ का० ॥
गवरीजाया मेंदी रंगाया दीपता रे ॥ मो० ॥ कन
कमें जडीया शिंगाल ॥ घूघरमाला घमके रढाला
जीपता रे ॥ मो० ॥ सुरधोरी सुकमाल ॥ १९ ॥
॥ का० ॥ इण्णिरें सेन्या मानवसेना राखता रे ॥
॥ मो० ॥ मळीयें सजि सेना उदाम ॥ हरिबल राजा
चढतरि वाजां वाजते रे ॥ मो० ॥ चाव्या जनमनी
जूम ॥ २० ॥ का० ॥ ससरानो मंत्री पुण्यपवित्री
नेयता रे ॥ मो० ॥ ले चाव्यो दंपति सार ॥ शीघ्र प्र
याणें थाउ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां
फरणी नार ॥ २१ ॥ का० ॥ ते वन देखी दंपति ह
रखी दीधला रे ॥ मो० ॥ मेरा ते वनमांही ॥ किधा
उतारा ज़मण सारां कीधलां रे ॥ मो० ॥ चउरंगी

(११७)

सेना उज्जाहि ॥ ११ ॥ का० ॥ प्यारि पयंपे पियुने
जंपे हेतनी रे ॥ मो० ॥ वाणीयें वीनवे जूप ॥ इंदपुरी
सम नाम रहे तिम वेतनी रे ॥ मो० ॥ नगरी व
सावो चूंप ॥ १२ ॥ का० ॥ श्रीजिनमंदिर अतिही
सुंदर चौपशुं रे ॥ मो० ॥ करो इहां तीरथ ठाम ॥
जे मुऊ परणी ते करो करणी रूपशुं रे ॥ मो० ॥
जिम रहे जगमें नाम ॥ १४ ॥ का० ॥ तव ते मञ्जी
प्यारी सुलञ्जी वयणथी रे ॥ मो० ॥ समखो त्यां सां
गर देव ॥ गुणनो रागी पुण्यविजागी सयणथी रे ॥
॥ मो० ॥ आव्यो सुर ततखेव ॥ १५ ॥ का० ॥ सुर
कहे शाने तेडो माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होथ
मननी दूब ॥ तव कहे हरिबल दाखो सुरबल मनें
वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब ॥ १६ ॥ का० ॥
तव तिहां नाकी बाकि न राखी पलकमें रे ॥ मो० ॥
वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलशुं
सुंदर हलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥
॥ १७ ॥ का० ॥ श्रीमुनि सुव्रत त्रीजग उद्धृत सो
हती रे ॥ मो० ॥ बिंब ठव्युं करि चैत ॥ दंपति दोन्ही
मूरति कीनी मोहती रे ॥ मो० ॥ पूर्वें जे लहुं देवत्त
॥ १८ ॥ का० ॥ रान बेलाउल डिंग ने देबल देखिने

(११८)

रे ॥ मो० ॥ दंपति थयां उजमाल ॥ चोथा उछासनी
प्रेम प्रकाशनी पेखिने रे ॥ मो० ॥ कहि लब्धिये
अग्यारभी ढाल ॥ १९ ॥ का० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ नव जोयण लांबी वसी, पहोली योजन बा
र ॥ जाणुं लंकानी बहेनडी, वसी इहां वनह मजा
र ॥ १ ॥ सजल सरोवर जल नखां, वाडी तिम लह
कंत ॥ जाणुं सुरवाडी इहां, प्रगट थइ महकंत ॥
॥ २ ॥ पटराणीना नामनी, वासी नगरी सार ॥ व
संतपुरी नामें जली, चावी थइ संसार ॥ ३ ॥ इणि
परें नगरी वासिने, हरिबल राजी कीध ॥ पहोतो ते
निज थानकें, जलधी नाथ प्रसिद्ध ॥ ४ ॥ वसंत
सिरीना सचिवने, सोंपी नगरी तास ॥ केताई दिन
तिहां रही, आगल चाव्या उछास ॥ ५ ॥ दल वाद
ल हरिबल तणुं, चाले जुं जलपूर ॥ धरणी तलथी
सलसल्यो, शेषनाग जयनूर ॥ ६ ॥ के शुं लेशें लंकने,
के शुं लेशें स्वर्ग ॥ के शुं लेशें जगतने, इम जाणे ज
नचर्ग ॥ ७ ॥ इणिपरें हरिबल राजवी, चाव्यो अति
ही चूंप ॥ सीमाडाना जे धणी, आवी नमिया नूप
॥ ८ ॥ इणि परें आण मनावतो, आव्यो आरज दे

(३३ए)

श ॥ वात वधामणी ससुरने, मूक्यो मंत्री विशेष ॥
 ॥ ए ॥ ते पण अतिही उतावलो, मत्तिसागर मंत्री
 श ॥ आव्यो निज कंचनपुरी, पहोती मनह जगेश
 ॥ १० ॥ शीघ्र जई प्रणिपत करी, दीध वधाई ना
 थ ॥ जामाता तुम पुत्रीने, तेडी आव्यो साथ ॥ ११ ॥
 वात वधामणी सांजली, हरख्यो कुमरी तात ॥ स
 न्मान्यो मंत्रीशने, दइ वधाइ विख्यात ॥ १२ ॥ हरि
 बल पण कतावलो, आव्यो जलधि तीर ॥ जिहां ले
 ह्युं समकित गुरुकने, दें त्यां मेरा सधीर ॥ १३ ॥
 देखी जनमनी जूमिका, दंपति दो हरखात ॥ आ सा.
 चूं के सोहणुं, मिलश्यां जननी तात ॥ १४ ॥ खूनी
 आपण दो जणां, हूतां नृपनां चोर ॥ ते थयां साचां
 पुण्यथी, जव मित्या गुरु इण ठोर ॥ १५ ॥

॥ ढाल बारमी ॥

॥ मोतीयारां हें लुंबक गुंभखां ॥ अथवा ॥ अजि
 त जिणंदछुं प्रीतडी ॥ ए देशी ॥ एम चिंतवी दंपति
 दो जणां, कालिकाने देउल आय ॥ सहि दुआं रंग
 वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा नक्ति करी.य
 णी, एतो प्रणम्या देवीना पाय ॥ १ ॥ स० ॥ धन
 धन मावडी जगतमां, प्रगटी तुं जन सुख हेत ॥

(१३०)

॥ स० ॥ दीन दुःखीया जीवने उदरी, करी पावन
संपद हेत ॥ १ ॥ स० ॥ इम आसना वासना देवी
नी, करि दंपती बोले आशीष ॥ स० ॥ माता जीव
जे सुरगिरिनी परें, अम पुहची सघली जगीश ॥ ३ ॥
॥ स० ॥ हवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसंत
सेन नूपाल ॥ स० ॥ तेम वसंतसेना रागिणी, पट्ट
राणी थड उजमाल ॥ ४ ॥ स० ॥ निज पुत्रीने वर
कारणें, शणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥ एतो देव
दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मलिया अपार ॥ ५ ॥
॥ स० ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शणगाखा ते
बहु ठाठ ॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथरा
व्या सोवन पाट ॥ ६ ॥ स० ॥ डुर्बानां हे तोरण
बांधियां, वच्चें सुरतरु दल महकंत ॥ स० ॥ एतो घ
र घर चहुटे चाचरे, फुलमालापुंज सोदंत ॥ ७ ॥ स० ॥
टोडे टोडे मोतीना फूमणां, लहकी रह्यां तेजमें ते
ज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आर्वी स्व
र्गपुरी नेहेज ॥ ८ ॥ स० ॥ शणगारी नगरी इणि
परें, हरखी नृप वसंतसेन ॥ स० ॥ चतुरंगी सेना स
ज करी, वर कुमरीने तेडवा तेण ॥ ९ ॥ स० ॥ गय
णांगण गूडी उबळे, गुंजालां गुंजे निशाण ॥ स० ॥

(१३१)

साबेलां सबल ते सज कखां, नगरीजन कुमर सुजा
 ए ॥ १० ॥ स० ॥ इम आमंवरखुं नरपति, सामइयुं
 सबल सजेय ॥ स० ॥ चाव्यो कुमरी वरने तेडवा,
 पुरजनखुं हर्ष धरेय ॥ ११ ॥ स० ॥ नवयोवन नारी
 सोहामणी, मली गावे मधुरां गीत ॥ स० ॥ रंजा उ
 र्वशीना मद गालती, गावे कोकिल स्वरनी रीत ॥
 ॥ १२ ॥ स० ॥ दलवादल देखी पुत्रीनुं, नृप पुरज
 न हख जरात ॥ स० ॥ जिम जविकने समकित
 मले, तिम मलिया ससरो जमात ॥ १३ ॥ स० ॥
 वर कन्या आदि सहु मव्यां, नृप राणी हर्ष जराय
 ॥ स० ॥ तिण वेला हर्ष जे उपनो, ते तो पुस्तकल
 खियो न जाय ॥ १४ ॥ स० ॥ कुमरी ने जनकी
 जनक तणो, वर्ष बारनो जांग्यो वियोग ॥ स० ॥
 आ ते साचुं के सुहणुं थयुं, कुमरी वरनो संयोग ॥
 ॥ १५ ॥ स० ॥ धन दिवस धन वेला घडी, मुऊ पु
 त्रीयें जे लखुं मान ॥ स० ॥ एम मावित्र हरखे म
 न्नमें, जिम डुमक लहे सुनिधान ॥ १६ ॥ स० ॥ ह
 रिबल ए जोइनी जातिमां, प्रगव्यो वडो पुण्य निधान
 ॥ स० ॥ मुऊ पुत्रीनी संगतें, अयो उंच ए जग सुल
 तान ॥ १७ ॥ स० ॥ हवे हरिबलने ससरो कहे, न

(१३१)

ली मीठी अमृत वाण ॥ स० ॥ स्वामी पधारो गज
 शिर चढी, पुर पावन करो प्रमाण ॥ १८ ॥ स० ॥
 शेठ सेनापति सारथ मलि, करे विनती हर्ष विख्या
 त ॥ स० ॥ तव हरिबल हर्ष विनोदथी, गजशिर च
 ढया ससरो जमात ॥ १९ ॥ स० ॥ आमां साहामां
 वाजित्र वाजते, गावे गुणिजन शब्द अखंम ॥ स० ॥
 होवे नाटक बंत्रीश बद्ध जे, तेणें गाजी रहुं ब्रह्मंम
 ॥ २० ॥ स० ॥ कखो उल्लव विवाह जेटलो, कुमरी
 नी वधारवा लाज ॥ स० ॥ नृपें करमूकामणें म
 ङ्गीने, दीधुं कंचनपुरनुं राज ॥ २१ ॥ स० ॥ मणि
 स्मेवन रूपुं सावटुं, गुणिजनने कीध पसाय ॥ स० ॥
 करि पृथ्वी उरण दानमें, आश्रीजन बहु तृपति कराय
 ॥ २२ ॥ स० ॥ जलां जेटणां लावे पुरजना, वर क
 न्याने करे जेट ॥ स० ॥ मन वंठित सुखनिधि उल
 टीयो, तेणें नारख्यां दुःखने उठेट ॥ २३ ॥ स० ॥ निवास
 नी जायगा मोटकी, रहेवाने दीधीजी खास ॥ स० ॥
 रंग महोलमें वास्यो कुमरीने, दीधो एकविश नूमि
 आवास ॥ २४ ॥ स० ॥ जसपडहो वजाड्यो नयर
 मां, वरतावी मङ्गीनी आण ॥ स० ॥ वीरबल केरो
 हरिबल पुत्रडो, ठव्यो राज्यें लिखित प्रमाण ॥ २५ ॥

(१३३)

स० ॥ जो जो नवियां साधुनी संगतें, लह्यो जीवद-
यानो धर्म ॥ स० ॥ अयो परसन जलनिधि देवता,
तिणें वधाख्यो मल्लीनो नर्म ॥ १६ ॥ स० ॥ अयो चाबो
ते चिहुं खूंटमें, नोगवे गुन रुद्रि समृद्ध ॥ स० ॥
जाणे सुरपतिनो समोवडी, अइ बेगो मल्ली प्रसिद्ध
॥ १७ ॥ स० ॥ जलें प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, उपगा
री परम रूपाल ॥ स० ॥ कहि चौथा उल्लासनी बा
रमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ १८ ॥ स० ॥

॥ दोहा ॥

॥ एहवा सजुरु वयणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥
अयो परसन जल देवता, वधियो मल्ली नर्म ॥ १ ॥
हरिबल दो पदवी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुरा
इ बत्रीश लाखनी, पायकें अश्व सुहाय ॥ २ ॥ गुंठा
दंम विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें
गज घटा, सोहे सहस अठार ॥ ३ ॥ सुख विलसे
संसारनां, शोलरों राणी सन्न ॥ पंटराणी थापी व
डी, वसंतसिरी सुकयन्न ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी,
काली कर्कशा नाग ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, करि
अपठर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिशें,
जिहां सूधी ठे आण ॥ तिहां सूधी को जीवनां, का

(१३४)

ढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणपरें लीला जोगवे, पूरव
 पुण्य पसाय ॥ चावो थयो चिहुं खूंटमें, महोटी ह
 रिबल राय ॥ ७ ॥ हवे ससरो हरखें करी, वसंतसेन
 नूपाल ॥ जामाताने वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥
 ॥ ८ ॥ द्यो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपा
 र ॥ शिव रमणी वरवा अमें, लेखुं संजम नार ॥ ९ ॥
 एम कही आणा लही, सासू ससरो दोय ॥ पंच
 महाव्रत उच्चखां, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ च
 ढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां
 धणी, थयां सूधां अणगार ॥ ११ ॥ कृपक श्रेणी चढ
 सां थकां, तेरमुं लहुं गुणठाण ॥ शुक्ल ध्यानना जो
 गथी, पाम्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोशठ इंद्रादिक
 मली, अंबुज नंद रचेण ॥ जाविकने प्रतिबोधतां,
 लहे बिजबोध विशेष ॥ १३ ॥ केवल कमला जोग
 वी, पाली पूरण आय ॥ कर्म कुंटिल दूरें करी, पढो
 तां शिवपुर ठाण ॥ १४ ॥ धन धन वसंतसेनने,
 धन वसंतपट नार ॥ दंपति दो मुगतें गया, चढियां
 मुक्ति मजार ॥ १५ ॥

॥ ढाल तेरमी ॥

॥ नश्वरो नगीनो महारो, हाररो हीरो महारो, नण

(२३५)

वीरो वीरो महारो साहेबो, पना मारु घडी एक करहो
 फुकाय हो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिबल सुख नोगवे ॥ पुण्य
 वंत ॥ पाले राज अखंम हो ॥ सागर देव पसायथी ॥
 पुण्यवंत ॥ अयो गुण मणिनो करंम हो ॥ १ ॥ सुगुण
 सनेही प्यारो, धर्मनो मोही गुन, अनुनव गेही सु
 ख सागरु ॥ पु० ॥ हरिबल परजा पाल हो ॥ ए आंक
 णी ॥ आण मनावी चिहुं दिज्ञें ॥ पु० ॥ षोडश देश
 विशेष हो ॥ षोडश देशनी अंगजा ॥ पु० ॥ विलसे ज्युं
 सुख सुरेश हो ॥ २ ॥ सु० ॥ गुण लिये जीव दया
 तणो ॥ पु० ॥ गुण ले गुरु उपदेश हो ॥ परतख देखी
 पारख्युं ॥ पु० ॥ हरख्यो मन्नी नरेश हो ॥ ३ ॥ सु० ॥
 तो हवे महिमा धर्मनो ॥ पु० ॥ प्रगट करुं उजमाल
 हो ॥ मानव नव सफलो करी ॥ पु० ॥ मेली सुकृत
 माल हो ॥ ४ ॥ सु० ॥ इम जाणी जल कांठडे ॥ पु० ॥
 जिहां लह्यो गुरु उपदेश हो ॥ तिहां कणो चैत्य रची
 जलुं ॥ पु० ॥ राखुं तिहां नाम विशेष हो ॥ ५ ॥ सु० ॥ षोड
 श देश सुहामणा ॥ पु० ॥ कीथा जिन प्रासाद हो ॥ बिंब
 नराख्यां रयणमें ॥ पु० ॥ ठंमी सघलो प्रमाद हो
 ॥ ६ ॥ सु० ॥ अमारि पलावे आपथी ॥ पु० ॥ षोड
 श देश मजार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे ॥ पु० ॥

(१३६)

सधली परजा विचार हो ॥ ७ ॥ सु० ॥ नव जेदे जे
पुण्य ठे ॥ पु० ॥ ठाणांग सूत्र मजार हो ॥ तिण वि
धें हरिबल केलवे ॥ पु० ॥ गुरुमुखी यशने विस्तार
हो ॥ ८ ॥ सु० ॥ जीव दया फल देखीने ॥ पु० ॥
सहुजन धर्म दीपाय हो ॥ लोक कहे जेहवा रा
जवी ॥ पु० ॥ एहवी परजा कहाय हो ॥ ९ ॥ सु० ॥
इणि परें रंग विनोदमें ॥ पु० ॥ काढे सुखमें दीह हो ॥
तिण समे मन्नीरायने ॥ पु० ॥ प्रेष्य आव्यो अवीह
हो ॥ १० ॥ सु० ॥ विशाला नगरी तणो ॥ पु० ॥
आप्यो प्रेष्यें लेख हो ॥ श्रीपति मंत्री तुम तणो ॥
॥ पु० ॥ तेडवा मूक्यो विशेष हो ॥ ११ ॥ सु० ॥ ए अधि
कार ते सांजली ॥ पु० ॥ वांच्यो विशालालेख हो ॥
सन्मानी ते प्रेष्यने ॥ पु० ॥ दीधो उतारो अशेष हो ॥
॥ १२ ॥ सु० ॥ मतिसागर मंत्रीसरु ॥ पु० ॥ मन्नी
यें तेज्यो सुजाण हो ॥ कनक पुरी रखवालवा ॥
॥ पु० ॥ कीधो कुंछ दीवांण हो ॥ १३ ॥ सु० ॥
बांध ठोड दरबारनी ॥ पु० ॥ में सोंपी तुज आ
ज हो ॥ परजा जिम सुखमें रहे ॥ पु० ॥ ते तुमें क
रजो काज हो ॥ १४ ॥ सु० ॥ शीख जलामण इणि
परें ॥ पु० ॥ मन्नीयें कीधी चंग हो ॥ हरिबल चाव्यो

(१३७)

पुर जणी ॥ पु० ॥ सचिवने सोंपी डिंग हो ॥ १५ ॥
 सु० ॥ चतुरंगी सेना सज करी ॥ पु० ॥ जाणियें ना
 इव रंग हो ॥ दलवादल जलपूर ज्युं ॥ पु० ॥ जे च
 व्यो घणो आमंग हो ॥ १६ ॥ सु० ॥ वसंतपुरी पट
 नारीनी ॥ पु० ॥ पूर्वे वसावी जेह हो ॥ ते नगरीयें
 आवीया ॥ पुं० ॥ पामी परजानेह हो ॥ १७ ॥
 सु० ॥ दिन केताइक तिहां रह्या ॥ पु० ॥ आगल
 चाव्या शीघ्र हो ॥ विशालापुर संनिधें ॥ पु० ॥ आ
 व्यो हरिबल तिय हो ॥ १८ ॥ सु० ॥ गुज जगें गु
 ज सुदूरतें ॥ पु० ॥ नगरीमें कीध प्रवेश हो ॥ जाणी
 यें हर्षपयोधिमां ॥ पु० ॥ किधो प्रवेश नरेश हो ॥
 ॥ १९ ॥ सु० ॥ पुर जन सहु राजी थयां ॥ पु० ॥
 नयणें निरखी नाथ हो ॥ सोहवें मली गुज मोती
 यें ॥ पु० ॥ नृपने वधाव्यो सनाथ हो ॥ २० ॥
 सु० ॥ जलें आमंवरें उंढवें ॥ पु० ॥ पद्मोतो नृप द
 रबार हो ॥ ठत्रीश राजकुंली मल्यां ॥ पु० ॥ मलि
 या बांढ पसार हो ॥ २१ ॥ सु० ॥ जल जलां लावे
 जेटणां ॥ पु० ॥ नृप पण ते करे अंग हो ॥ सनमा
 नी मन्ही तेहने ॥ पु० ॥ देइ शिरपाउ ते रंग ही ॥
 ॥ २२ ॥ सु० ॥ इणिपरें लीला राजनी ॥ पु० ॥

(१३८)

जोगवे मढीराय हो ॥ रहे जीनो रसतानमें ॥ पु० ॥
 वीशाला पुरवाय हो ॥ १३ ॥ सु० ॥ शोल कलामें
 चंदमा ॥ पु० ॥ सोहे ज्युं ऊजास हो ॥ तिम हरिबल
 शोल जनपदे ॥ पु० ॥ सोहे तेजप्रकाश हो ॥ १४
 ॥ सु० ॥ ए गुण जीवदया तणो ॥ पु० ॥ फलिया
 मनोरथ सिद्ध हो ॥ लब्धें चोथा उल्लासनी ॥ पु० ॥
 तेरमी कही परसिद्ध हो ॥ १५ ॥ सु० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ पंच विषय सुख विलसतां, वीता केता दिन्न ॥
 वसंतसिरी पटनारीयें, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ १ ॥ श्री
 बज नामें सिंह ज्युं, प्रगट्यो माहाबलवंत ॥ हरिबल
 केरो पुत्रडो, सकलकला जीपंत ॥ २ ॥ कुसुमसिरी
 जे लंकनी, तिणें पण जन्म्यो पुत्र ॥ मात पिताने
 सुख दिये, चलवे घरनां सूत्र ॥ ३ ॥ सुबलनामें पुत्र
 जे, प्रगट्यो ज्युं रवितेज ॥ मातपिता हरखे घणुं,
 देखी दो सुत हेज ॥ ४ ॥ रामने लखमण जोड ज्युं, सो
 हे त्युं दो चात ॥ दानें मानें आगला, पुहवीमां करे
 ख्यात ॥ ५ ॥ जोड मली दो चातनी, श्रीबल सूबल
 नाम ॥ राज काजमें तत्परा, राखे मन अनिराम ॥
 ॥ ६ ॥ बीजी राणी जे अठे, षोडशें जे शुच मन्न ॥

(३३९)

तिणें पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ७ ॥
 इणिपरें लीला जोगवे, हरिबल पुण्य विख्यात ॥ सं
 सारिक जे सुख कहां, विलसे ते सुख सात ॥ ८ ॥
 तन धन स्त्री सुत सस्यनी, अंबर रस ए सात ॥
 जेहने घरें पुण्यवेल ठे, तेहने ए सुख शात ॥ ९ ॥ इणि
 परें काल ते नीगम्यो, वर्ष सहस पचवीश ॥ नृप
 राणी सरखे मनें, पाले धर्म जगीश ॥ १० ॥ जैन
 दरीसनमें थड, नृपनी जगती कहाय ॥ तिहां सूधी
 कृषि विचरता, पुहवि पवित्र कराय ॥ ११ ॥ देव गु
 रुने वांदिने, सांजलि गुरु उपदेश ॥ त्यार पठें ते के
 लवे, घरनां काज विशेष ॥ १२ ॥ इणिपरें हर्ष विनवे
 दमें, श्रीजिनधर्म दीपाय ॥ तिण समे विशमा जिन
 तणा, आव्या मुनिजन राय ॥ १३ ॥ पंचसयाशुं
 परवस्था, गणधर सुस्थित नाम ॥ वीशाला पुर परि
 सरें, उत्तमा निरखीं ताम ॥ १४ ॥ साधु वधामणी
 मालीयें, नृपने दीधी ताम ॥ नृप पण निसुणी
 मालीने, देवे महर्दिक गाम ॥ १५ ॥

॥ ढाल चउदमी ॥

॥ सुडला संदेशो कहेजे महारा पूज्यने र ॥ अथवा ॥
 जीव जीवन प्रभु किहां गया रे ॥ ए देशी ॥ मात वधा.

मणी गुरुनी सांजली रे, हरखित थया नृप लोक रे ॥
 धव धव धाड़ गुरुने वांदवा रे, आव्या ते जोगी चातुर
 क्रेक रे ॥ १ ॥ सांजले मीठी गुरुनी देशना रे ॥ ए
 आंकणी ॥ जेह थकी पाप पुलाय रे ॥ पावन
 होवे जीवित आपणुं रे, अक्य पद ते लहाय रे ॥
 ॥ सां० ॥ २ ॥ अजिगमन पांचे साचवी रे, बेठा ते
 गुरुना वंदि पाय रे ॥ एकण चित्तें एकण ध्यानथी रे,
 सांजले दो कर जोडी राय रे ॥ ३ ॥ सां०॥ तिण
 समे गुरु पण अवसर उलखी रे, देशना देवे ज्युं जल
 धार रे ॥ जिनवरें जांखी जेहवी देशना रे, तेहवी
 ते वाणीयें कीथो उच्चार रे ॥ ४ ॥ सां० ॥ सांजलो
 जवियां मीठी देशना रे ॥ पामी ते मानवनो अव
 तार रे॥एलें कां हारो मनुजव पामीने रे,सज्जन संधी
 सारो सार रे ॥५॥सां०॥ पंखी परें रे मेलो ए मळ्यो रे,
 उमतां शी लागे तस वार रे ॥ तेम रे सगाइ स्वारथनी
 जणी रे, मटतां शी लागे तेहनी वार रे ॥ ६ ॥ सां०॥
 को कहो तात ने को कहो मात ने रे,को कहो त्रात ने
 को कहो जात रे॥इणिपरें सयण संबंध ते वयणथी रे,स
 गपण वेंची लीधुं ख्यात रे ॥७॥सां०॥ को करो प्रीत को
 करो वेरने रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थातुं

ठे अंतें सढुने कालथी रे, आखरे प्राणी धूड जेली
 धूड रे ॥ ७ ॥ सां० ॥ कूडी माया ने, कूडी कामिनी
 रे, कूडां ठे अर्थी बंधव लोक रे ॥ कूडी ठे दुनियां वा
 दल हांह ज्युं रे, ते पण अंतें होवे फोक रे ॥ ए॥ सां० ॥
 प्राणथी वाहालो जेहने जाणियें रे, राखीयें तेहने ज्युं
 करि ग्रंथ रे ॥ ते पण न रहे उजो पूढवा रे, जातां
 ते लांबे महोटे पंथ रे ॥ १० ॥ सां० ॥ केहि गया ने
 केहि जायशे रे, केहि ठे प्राणी जावणहार रे ॥ पुण्यं
 विहूणा इण वाटडी रे, जाशे ते प्राणी हाथ पसार
 रे ॥ ११ ॥ सां० ॥ कुण ते राणा ने कुण ते रांकने
 रे, आखर एहिज एक ठे वाट रे ॥ आवशे सार्थें सु
 कृत कीधलां रे, उतरतां ते जवनो घाट रे ॥ १२ ॥
 ॥ सां० ॥ श्यो रे जरोसो काचा कुंजनो रे, श्यो वली क
 रवो धननो मंह रे ॥ देखत संध्याराग तणी परें रे,
 उडी. ते जावे खिणमें अढह रे ॥ १३ ॥ सां० ॥ दश
 रे दृष्टांतें मानव जव तणो रे, पांम्यो जो जनम क
 दाय रे ॥ तो वली फरि फरि पामवो दोहिलो रे, जिम
 करी घूणाकरने न्याय रे ॥ १४ ॥ सां० ॥ दान शीयल
 तप जावना रे, जांख्यो जे जिनवरें चउविह धर्म रे ॥
 तेहनो जो कीजें खप शुनजावथी रे, तूटीयें खिणमें

निज निज कर्म रे ॥ १५ ॥ सां० ॥ होवे ते सहस्र
 गणुं पुण्य जाचतां रे, लाख गणुं ते अजाची होय रे ॥
 कोडी गणुं फल गुप्त ए दानथी रे, ए फल पुण्यनुं
 इणि परें जोय रे ॥ १६ ॥ सां० ॥ व्याजें दीये ते धन
 बमणुं लहे रे, चोगणुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ शत
 गणुं पामे एकण क्षेत्रथी रे, दान सुपात्रनी सं
 ख्या न थाय रे ॥ १७ ॥ सां० ॥ परजव जातां ए म
 होटी सुखडी रे, बांधीयें जातुं आवे काम रे ॥ सुर
 नर अक्षय पदवी सुख पामियें रे, बाधे ज्युं नरजव
 केरी माम रें ॥ १८ ॥ सां० ॥ एहवुं जाणीने पुण्य की
 जीयें रे, दीजीयें नावें दान सुपात्र रे ॥ जूगति मुंगति
 दो पदवी लहे रे, कीजीयें आपणुं निर्मल गात्र रे ॥
 ॥ १९ ॥ सां० ॥ आपज आपणे तरशो तुंबडे रे,
 नही कोइ आवे परजव साथ रे ॥ एहवुं जाणीने प्रा
 णी चेतजो रे, जइ समकित वृद्धनी जरजो बाथ रें
 ॥ २० ॥ सां० ॥ इणि परें उपदेश सुणिने नावियां रे, व्रत
 पचस्काणनी सुखडी लीध रे ॥ राजा ने राणी पण थइ
 इकमनां रे, वचन सुधारस कानें पीध रे ॥ २१ ॥
 ॥ सां० ॥ विषय कषायना मल सवि ठांमीने रे, आ
 दरे दंपति सुकृतमाल रे ॥ चोथा उल्लासनी लब्धि

(१४३)

विजयें कही रे, सुंदर महोटी चौदमी ढाल रे ॥
॥ ११ ॥ सां० ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांजली, हरखी परषद सार ॥ गुरुने
वांदी थानकें, पहोता सहु आगार ॥ १ ॥ तव कहे नृप
कर जोडीने, सांजलो गुरु गुणगेह ॥ जव स्थिति
क्यारें पाकरो, माहरी कहो ससनेह ॥ २ ॥ तव ग
णधरं सुस्थित कहे, सांजलो तुमें माहाराय ॥ पांम
व सहस्र ते वर्षनुं, ठे महोटुं तुम आय ॥ ३ ॥ तिहां
सूधी तुमने घणुं, ठे जोगावलि कर्म ॥ जव ते स्थिति
पूरी अरो, तव वधरो तुम नर्म ॥ ४ ॥ पूरव जव तु
म सांजली, केवली मुनिचंड़ पास ॥ संयम नृपशर
णुं ग्रही, लेहशो शिव पदवास ॥ ५ ॥ ए अधिका
र ते सांजली, हरष्यां राणी राय ॥ पहोतां सहु निज
मंदिरें, वंदी गुरुना पाय ॥ ६ ॥ .

॥ ढाल पन्नरमी ॥

॥ ठेडो नांजी ॥ ए देशी ॥ हवे हरबिल निज मं
दिर आवी, करे निज सुकृत करणी ॥ वसंतसिरी
पट्टराणी आदें, करे सघली पुण्यनरणी ॥ १ ॥ नवि
यां सुणजो, हरबिलनी जे करणी ॥ न० ॥ चडवां

भोक्क निसरणी ॥ ज० ॥ ए आंकणी ॥ पहेलाथी
 चोथे गुणठाणे, आवे हरिबल लेहतो ॥ प्रकृति सात
 नो क्य ते करिने, ह्यायक समकित ग्रहेतो ॥ १ ॥
 ज० ॥ श्रावकना गुण एकवीश महोटा, जे कह्या सूत्र
 सिद्धांतें ॥ ते गुण श्रावकना शुन पाले, नृप राणी
 मन खातें ॥ ३ ॥ ज० ॥ चैत्य करावे श्रीजिन केरां,
 षोडशें देश मजार ॥ देशें देशें सुंदर दीपे, देवल शोल
 हजार ॥ ४ ॥ ज० ॥ कोटि एक ते कनक रयणमें,
 उपर ठप्पन लाख ॥ ए संख्या कहि जिनमंदिरनी,
 शोलशें देशनी लाख ॥ ५ ॥ ज० ॥ चैत्यें चैत्यें पांचे
 रंगें, थाप्या जिन चोविश ॥ कोटि एकशठ लाख चु
 म्मालीश, बिंब जराव्यां अर्धीश ॥ ६ ॥ ज० ॥ साधु
 जनने रहेवा सारु, रजतमें जाक जमाला ॥ सवा को
 डि ते धर्मेने हेतें, कीर्धी पोषध शाला ॥ ७ ॥ ज० ॥
 साव सोवनमें अक्षर रचना, लखीयां पुस्तक सार ॥
 ज्ञानोपगरण करिने महोटां, मूके पुण्य जंमार ॥ ८ ॥
 ज० ॥ साहामीवहल दिनप्रतें मन्ही, पोषे जाव विशे
 ष ॥ जिनमतिनां साते ए खेत्रें, वावे इव्य अशेष ॥ ९ ॥
 ज० ॥ श्रीजिन नक्तितणी लय आणी, करे नित त्रिटंक
 सेवा ॥ बत्रिश ब-६ नृत्य करावे, प्रभु आगल जश लेवा

॥ १० ॥ ज० ॥ खट दरशनने जावें पोखें, जाणी लाज अर्न
 ता ॥ दान तणां दश दूषण टाली, दे आदर बहु संता ॥
 ॥ ११ ॥ ज० ॥ चोथा गुणठाणानी ए करणी, करे
 हरिबल दिल साच ॥ सिद्धवधू वरवा जणी सारु,
 जाणीयें देवे लांच ॥ १२ ॥ ज० ॥ देशविरति गुण
 ठाणे चढीने, करे पंचपर्वी पोषा ॥ चन्द्र नियम सं
 जारी संखेपें, काढे मनना रोषा ॥ १३ ॥ ज० ॥ आ
 वकनीं जे कहां व्रत बारे, ते पण साचवे रूडां ॥
 आवश्यक दो टंकनां साचां, साचवे मन नहीं कूडा
 ॥ १४ ॥ ज० ॥ ठठ अठम वली दशम डुवालस, करे
 तप चढतां शक्ति ॥ अष्ट करम दल दुर्बल कीधां, बेसवा
 सिद्धनी पंक्ति ॥ १५ ॥ ज० ॥ एकादश जे आदनी
 प्रतिमा, जांखी जे जगवानें ॥ विधि पूर्वक गुं जिन
 अरचीने, ते पण वहि एक तानें ॥ १६ ॥ ज० ॥ सा
 तमे अंगें पाठ ए चावो, जो जो जिवियां रंगें ॥ दश
 आवकें जिम वहि गुन प्रतिमा, तिम वहि मळि अ
 जंगें ॥ १७ ॥ ज० ॥ षट आवश्यक नवकार आर्दे,
 तेहनां वहे उपधान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, प
 हेरी माल प्रधान ॥ १८ ॥ ज० ॥ आवकने उपधान
 वहा विण, नवकार क्रिया न सूजे ॥ साधूने पण

(१४६)

योग वह्या विण, वांचवुं सूत्र न सूजे ॥१९॥ ज०॥
 पंचांगी में जोजो सघले, ठे अक्षर परगट्ट ॥ ते जा
 एरिने ह्रिबल पोतें, करे करणी गहगट्ट ॥२०॥ ज०॥
 इणपरें नृप राणी गृह बेठां, जाव संयमने पाले ॥
 त्रिकरण शुद्धें नावें करीने, आतम नव अजुवाले ॥
 ॥ ११ ॥ ज० ॥ ह्रिबल जे करे चैत्यनी करणी, ते
 कोइ कहेजे खोटी ॥ ते उपर तुमें सुणजो प्राणी,
 साखी कहुं बुं महोटी ॥ १२ ॥ ज० ॥ पांचमे-आरें
 वीरने वारे, जे दुउ संप्रतिराजा ॥ सहस बत्रीश ते
 जीरण देहरां, सहस पचविश ते तार्जा ॥ १३ ॥ ज० ॥
 ए-संख्यायें चैत्य कराव्यां, बत्रीश थडां प्रासाद ॥ को
 टि सवा उगणी संख्यातां, बिंब जराव्यां उल्लाद ॥
 ॥ १४ ॥ ज० ॥ पाटणराजें सिद्ध, सिंघपाटें जे
 दुउ कुमारपाल ॥ बावन जीनालां तिणे पण कीर्थां,
 जीवित सूधी विशाल ॥ १५ ॥ ज० ॥ आबू उपरें र
 जत समोवड, देउल महौटां दीपे ॥ श्रीआदीसर
 मूरति थापी, शा विमलो जग जीपे ॥ १६ ॥ ज० ॥
 साते धातें चउदे मणनी, चउ जिन पडिमा जरावी ॥
 शा नीमे गढ आबूयें थापी, ते जुउ नजरें चावी ॥
 ॥ १७ ॥ ज० ॥ लाख नवाणुं खरची देउल, राणक

(१४७)

पूरें जे कीधो ॥ शा धरणो पोरवाड वखाण्यो, चउ मु
 ख जइ जुठ सीधो ॥ १७ ॥ ज० ॥ शोलमो उदार
 शेत्रुंजा उपरें, त्रिजगमें परसिद्धो ॥ मानवजव लहि
 श्रावक कुलमें, शा करमें जस लीधो ॥ १८ ॥ ज० ॥
 आजने समयें एहवा प्राणी, जे दुआ रतन सरी
 खा ॥ तो शुं तदा ते कालनुं कहेवुं, शी तस करवी प
 रीखा ॥ १९ ॥ ज० ॥ ए दृष्टांत सुणीने जवियां,
 मानजो सघलुं साचुं ॥ धर्मी जनना जे गुण जां.
 ख्या, ते मत जाणजो काचुं ॥ २० ॥ ज० ॥ ए अधि
 कार सुणी जे सद्देहे, ते लहे मंगलमाल ॥ चोथा उ
 द्दासनी ढाल पन्नरमी, लब्धें ए नांखी रसाल ॥ २१ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ इम करणी करतां थकां, वोल्यां सहसचउ वर्ष ॥
 एटले मुनिचैड केवली, पाउ धाखा उत्कर्ष ॥ १ ॥
 बाजां नाकी बाजीयां, मलिया चोशठ इंड ॥ नंद क
 मल रचना करी, थाप्यां ज्ञानदीपेंद ॥ २ ॥ गुरुनी व
 धामणी मालीयें, आवी नृपने दीध ॥ सन्मानें नृप मा
 लीने, ग्राम पसायो कीध ॥ ३ ॥ जिम तृषातुर-प्रा.
 णीया, धाइ सरोवर जाय ॥ तिम नृप निज परिवा
 रहुं, प्रणम्या निज गुरु पाय ॥ ४ ॥ चाबुक जन श्र

(१४८)

वणें सुणी, पीवे श्रुत जल हेत ॥ वचनामृत जलधर
र गुरु, वरसे नवि मन खेत ॥ ५ ॥

॥ ढाल शोलमी ॥

॥ देशी आख्याननी ॥ चेतो चेतो चेतो रे प्राणी,
जाणी संसार असार ॥ अंजलि जल ज्युं आउखुं
जाणी, म करो प्रमाद लगार ॥ १ ॥ परमाद पांचे
परम वैरी, घेरी संसारी जीव ॥ नरग निगोर्दे नाखे
दुःखमें, विण खूने ते अतीव ॥ २ ॥ आठे मद माहा
महोटा अश्ने, पहेलो प्रमाद वखाणो ॥ चोवीश दं
मूके जीव दंमावे, परमाद एहवो जाणो ॥ ३ ॥ पांचे
इंद्रियना अइ सघला, जांख्या विषय त्रेवीश ॥ ए बीजो
प्रमाद जे सेवे, ते लहे आन चोविश ॥ ४ ॥ एकेक
इंद्रिय मोकली मूके, जीव लहे ते घात ॥ ते उपर
कहुं ज्ञानी जांखे, सांजलजो दृष्टांत ॥ ५ ॥ आंखने
विषे दीपक देखी, चौरिंदि करे जंपापात ॥ चर चर
तन दहे हेमने लोचें, पतंग लहे उपघात ॥ ६ ॥ घ्रा
णेंद्रियनो जो अयो विषयी, रोलंब पंकजवासी ॥ चुंढा
दंमें दंतियें ग्रही कज, आठव्यो चमर तनुराशि ॥ ७ ॥
कानना रसिया नादना लीणा, नाग कुरंगम जेह ॥
बाजीगरने पारधि जालें, पासमें पडिया ते बेह ॥ ८ ॥

(१४ए)

रसनानो थयो लोलुपी मठलो, जल कछ्छोल जे क.
रतो ॥ धीवरें गहुं गुड लोन देखाडी, तालुएं ग्रह्यो
सुचि धरतो ॥ ए ॥ हाथणी देखी मांतंग महोढो,
थयो कामातुर कूल ॥ कामवर्जें करि पडियो अजा
डि, निज शिर नाखे धूल ॥ १० ॥ इणिपरें पांचे इं
डिना रसथी, जे थया विषयाअंध ॥ तंडुलमड्ड परें
कर्म निकाचित, बांधि नोगवे धंध ॥ ११ ॥ शोल क
षाय ने नव नोकषाय, ए दो मलीने पचवीश ॥ त्रिजो
प्रमाद ए जाणिने सेवे, पाडे ते नरकमें चीस ॥ १२ ॥
अनर्थकारी पांचे निडा, सेवे जे चोथो प्रमाद ॥ बा
विस सागर ठठियें जाये, नोगवे नरकनो स्वाद ॥ १३ ॥
राजकथादिक चारे विकथा, परमाद पांचमो कर
ता ॥ नारे कर्मी थइने प्राणी, लहे दुःख चउ गइ
फरता ॥ १४ ॥ पंच प्रमाद ए दुष्ट नयंकर, सुव्रत
हरे ते सदीवो ॥ लंछ चोराशि योनी फरतां, ए ठे
संसारनो दीवो ॥ १५ ॥ पंच प्रमादना ए गुण जी
वडा, मनशुंछ जावमें आणी ॥ प्रमाद पांचे दूरें ठे
मो, जिम थाउ केवल नाणी ॥ १६ ॥ प्रमादने वर्जें
जाणे जीवडो, ठे सघलुं ए महारुं ॥ पण ते न्यंतर नि
रखी जोतां, शुं देखे ठे तहारुं ॥ १७ ॥ दिवस.निशा घट

•मालने जोगें, आयु सलील घटाडे ॥ चंद ने सूरय वृ
 षज धोरीथी, काल रहट्ट नमाडे ॥ १७ ॥ इणिपरें
 न्यंतरमें निशिदिन वहे, नवकूपक घटमाल ॥ काल अनं
 तो परमाद संगें, पडियो मोहनी जाल ॥ १८ ॥ मो
 हनी जालमां जे नर पडिया, ते कदि नावे ऊंचा ॥ सागर
 कोडाकोडी सित्तेर सुधी, धरमगुं मांमे खूचा ॥ १९ ॥
 कंचन कामिनी अरथें मेले, माया महोदुं माणुं ॥ पण
 ते निशिदिन रहे जीव धखतो, जिम शघडीनुं ठाणुं ॥
 ॥ २० ॥ स्वारथनूत संबंध ए मलीयो, पोषवा पिंमने
 धाड ॥ काम पडे कोड् टुकडो नावे, जो जो
 जगनी कमाड ॥ २१ ॥ पोतानो करि गणियें जेहने,
 ते होवे साहामो वैरी ॥ जो जो नवियां सगपण सा
 चुं, ज्ञाननी दृष्टें हेरी ॥ २२ ॥ मात पिता बंधु जात
 सुता पति, लेखवे साचि सगाई ॥ पण तस आवी
 अदल पोहोंचे, नवि रहे पूढवां कांड ॥ २३ ॥ ठे
 संसार विचारी जोतां, बांजीगरना गोटा ॥ कृणनं
 गुर ठे जीवित तो पण, माने वंढित पोटा ॥ २४ ॥ जल
 परपोटा समान ए काया, शी तस कूडी माया ॥ य
 मने मंदिर जावुं सहुने, कुण डुर्बल कुण राया ॥
 ॥ २५ ॥ वांजणीयें जिम सुहणुं दीतुं, जाणो में ज

(१५१)

नम्यो बेटो ॥ नाम विश्वंजर देइ एहवुं, वंध्या मेहणुं
मेढ्यो ॥ १७ ॥ जब जाग। तब रोवा लागी, किहां गयो
माहरो पुत्र ॥ वृद्ध कालें मुऊने सुखदाता, राखे घरनां
सूत्र ॥ १८ ॥ वंध्यानुं जिम सुहणुं खोटुं, तिम संसार
बे खोटो ॥ एहवुं जाणी प्राणी चेतो, टाली मोहनो
गोटो ॥ १९ ॥ ए संसार असार वखाण्यो, जेहवो
ठारनो त्रेह ॥ माननी अणीयें ज्युं जल कणिया, तिम बे
जगमें नेह ॥ २० ॥ रुद्धि ने रमणी आपणी तिहां लगें,
जिहां लगें आंख्यो साजी ॥ आंख मीचाणे को नही
ताहरुं, इम कहे जिनवर गाजी ॥ २१ ॥ एटलामांहे
समजी लेजो, जो हुवो मोहना अर्थी ॥ तो ए प्रमाद
पांचे ठंमीने, करो सुकृत निज करथी ॥ २२ ॥ चोथा उ
द्वासनी शोलमी ढालें, दीधो एम उपदेश ॥ लब्धि
कहे नवि परखद बूजी, बूज्यो मल्ली नरेश ॥ २३ ॥

॥ दोहा ॥

॥ इम उपदेश ते सांनली, विनवे बे कर जोडि ॥
कहो स्वामी मुऊ आगलें, पूरव नवनी होडि ॥ १ ॥
शी करणीयें हुं लह्यो, धीवर कुलनी जात ॥ शी कर
णी नृप पद लखुं, शे लहि नृपथी ख्यात ॥ २ ॥ शी
करणी मुऊने मढ्यो, तटिनीनाथनो नाथ ॥ सुरम

• णिनी परें मुंजने, पूरी वंछित आथ ॥ ३ ॥ शी करणि
कालसेन जे, खेव्यो मुंजुं घात ॥ में पण पाठी तेहने,
अजात्री घणी घात ॥ ४ ॥ शी करणी सद्गुरु मढ्या,
मुंजने दीधो धर्म ॥ जीवदया मुंज दाखवी, प्रबल व
धारी शर्म ॥ ५ ॥ तव कहे मुनिचंड केवली, सांजलो
तुमें राजान ॥ पूरव नव करणी करी, ते कहुं तुमची
निदान ॥ ६ ॥ जे जेहवी करणी करे, ते तेहवुं फल
पाय ॥ गुनागुनना बंध जे, ते तेहवा जोगवाय ॥ ७ ॥

॥ ढाल सत्तरमी ॥

॥ जनम्यो जेसल मेर ॥ अथवा ॥ प्रणमी सद्गुरु पा
य ॥ ए देशी ॥ चौलहू जोजन सार, धातकी खंम विदेह
में जी ॥ विजय पुष्पावड मनोहार, नदिलपुर वसे
तेहमें जी ॥ १ ॥ तेहज डिंग मजार, विप्र वसे जयदे
वता जी ॥ जयसिरी नामें ते नार, चारिया विप्रणी ठेव
ता जी ॥ २ ॥ प्रसव्या ते द्विजणीयें बाल, पुत्रजुगल
दो सोहामणा जी ॥ नयण वयण सुरसाल, रूप रंग
में कोइ नहिं मणा जी ॥ ३ ॥ सूनंद उपनंद दोय, ना
म उव्यां दो पुत्रनां जी ॥ वाधे शशि परें सोय, मन ह
रखे मावीत्रनां जी ॥ ४ ॥ पाम्या ते जोबन बाल, प
रणावी दो अंगना जी ॥ रूपें ते जाक ऊमाल, जा

(१५३)

णीयें नाकि वामांगना जी ॥ ५ ॥ पंच विषय सुख
 जोग, विलसे ते केतकी चंग जुं जी ॥ पूरव पुण्य सं
 योग, रहे जीना सुखरंगुं जी ॥ ६ ॥ एक दिन दो
 मलि घात, वसंत जोवाने नीकल्या जी ॥ तव तिहां
 दीगो सुझात, उपशम रसमें जे नव्या जी ॥ ७ ॥
 श्री जिनवरनो जे ठात्र, ध्यान धरी रह्यो काउस्सगें
 जी ॥ देखी ते नवली हो यात्र, आव्या दो बंधव त
 स-पगें जी ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनिना हो पाय, सुनंद
 द्विज स्तवना करे जी ॥ उपनंद द्वेषें जराय, मुंम पणुं
 ते देखी सरे जी ॥ ९ ॥ काली ते काय रुशांग, मलम
 लीन पणो दीठडो जी ॥ जाणीयें जोई जुजंग, दुर्गंध
 गंधा अधीठडो जी ॥ १० ॥ छष्ट दरिझीनो वेश, दी
 सतो जाणीयें वाघरी जी ॥ न मर्द न स्त्रीनो वेश, एक
 मां नही ए पसांगरी जी ॥ ११ ॥ मावित्रें मूक्या निसास,
 नूखने जाडे करी रला जी ॥ दाखवी पापनी राशि,
 सद्गुने करावे अर्गला जी ॥ १२ ॥ नीची ते दृष्टि धरे
 थ, बगपरें हिंमे रसातला जी ॥ वदनें हो ते कर देई, बो
 ले मुखथी धूरतकला जी ॥ १३ ॥ मधुरां नांखे हो
 वेण, नर नारी विप्रतारवा जी ॥ मेले टोली ते सेण,
 जठरनुं काज सुधारवा जी ॥ १४ ॥ इशिपरें मन

(१५४)

धरी द्वेष, उपनंदें साधुनिंदा करी जी ॥ करि बली डु
गंहा विशेष, नीच कुलीनुं पोतुं जरि जी ॥ १५ ॥ बांधी,
जुं रेशम गांठ, उपर मीण लपेटियें जी ॥ तिम एणें
बांधीजी गाठ, जोगव्या विण किम तूटियें जी ॥ १६ ॥
तव तिहां सूनंद चात, रीश धरी कहे बंधुने जी ॥
मत करो साधुनी तांत, जाव धरी नमो साधुने जी
॥ १७ ॥ साधु ठे जगमां उद्योत, ज्ञान दीवो करि
दाखवे जी ॥ बांधे तीर्थकर गोत, साधु वचन चित्त
राखवे जी ॥ १८ ॥ मेले ते सकल संयोग, जो रु
षि आवे हलकमें जी ॥ टाली ते कर्मना रोग, ज्यो
तिवधू मेले पलकमें जी ॥ १९ ॥ चिलाती पुत्र जे डु
ष्ट, ते गयो सुरलोक आवमे जी ॥ अढी दिन मांहि
ते पुष्ट, रुषि वचनें ययो ठाठमें जी ॥ २० ॥ करे
नव कल्पी विहार, जाविकने पड़िबोहवा जी ॥ सूऊ
तो लेवे आहार, निज आत्मने सोहवा जी ॥ २१
॥ जीती ते रागने द्वेष, उपशम रसमें जे नदया जी .
॥ स्मरणीयो जग देख, अहिकंचुकि परें नीकल्या जी
॥ २२ ॥ एहवा जे मुनिराज, तेहने किम करी नंदी
यें जी ॥ प्रबल वधारी हो लाज, साधुने कर जोडी
बंदियें जी ॥ २३ ॥ साधुवंदणयी तुं जोय, नरग च

(१५५)

उ ठेदी विष्णुयें जी ॥ जिन पदवी तिहां सोय, नाव
 थी बांधी जिष्णुयें जी ॥ १४ ॥ नंदमणियारनो जीव,
 दर्डर वाव्य जे सेवतां जी ॥ वीरने नमतां अतीष,
 ते थयो दर्डर देवता जी ॥ १५ ॥ एहवा ते ऋषि गु
 ण जाण, इव्यथी नावथी सेवीयें जी ॥ म करो को
 निंदा सुजाण, साधुने करी देव टेवीयें जी ॥ १६ ॥
 इम उपदेश ते देय, सुनंदें समजावीयो जी ॥ तव क
 र जोडीने बेय, उपनंदें साधु खमावीयो जी ॥ १७ ॥
 गो तुमें गिरुआ जी साथ, पर उपगारी जंतुना जी ॥
 खमजो मुऊ अपराध, जे में कीधी आशातना जी ॥
 ॥ १८ ॥ साधुनी स्तवना जो कीध, तो बांधि सुनंदें सुरगई
 जी ॥ उपनंदें नीच पद लीध, साधु निंद्या निजमई जी
 ॥ १९ ॥ इम ते आलोइ हो पाप, बांधव दो ऋषिने
 नमी जी ॥ टाली ते सघलो संताप, आब्या दो निज
 गृह वन रमी जी ॥ २० ॥ चोथा उछासनी ढाल,
 सतरमी लब्धिविजय कही जी ॥ सुणजो नवि उजमा
 ल, आगल शी शी कथा लही जी ॥ २१ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवें दो ज्ञाता मंदिरें, आवी करे गुन काम ॥
 खट दरिसन पोखे सदा, लेहवां स्वर्गनां धाम ॥ १ ॥

(१५६)

हवे जयदेवना घरथकी, साहामी ठे एक पोल ॥
तेहमें दो वसे वाडवा, सुदेव नूदेव उल ॥ १ ॥
सांढू थइ पासें वसे, सुदेव नूदेव नट्ट ॥ खंमा स्त्री ठे सुदे
वनी, विशाखा नूदेवनी गट्ट ॥ २ ॥ ते दो नारीने
थयो, पूर्वकर्म संयोग ॥ दाघ ज्वर बलतर तणो, उप
नो तेहने रोग ॥ ४ ॥ तव ते चिकित्सा जणी, तेज्या
बहु वैद्यराज ॥ पण टेकी लागे नही, कोइ न सरीयुं
काज ॥ ५ ॥ तव सुदेव नूदेव विप्र दो, मनसुं कीध
विचार ॥ किम वहेरो घरणी विना, किम वहेरो घर
नार ॥ ६ ॥ इम दो विप्र विचारीने, बीजी परण्या नार
॥ खंमा विशाखा दो प्रिया, मूकी पीयर सार ॥ ७ ॥
परहरी दो स्त्री रोगिणी, जुंमा थया दो विप्र ॥ जिम
मांखी घृतमें पडी, काढी नाखे द्विप्र ॥ ८ ॥ ते स्थिति
करि इण वाडवें, नवि शोच्या ते लगार ॥ नवि बिही
ना कहोनाथकी, नवि बिहिना किरतार ॥ ९ ॥ मद
वाया दो विप्र ते, न करी सार संजाल ॥ तव दो स्त्री
ते रोगिणी, तेहने उपनी जाल ॥ १० ॥ क्रोध वर्रो
दो रोगिणी, दे दो पतिने शाप ॥ तुमें दो अम पातें
पडी, जेहजो तुमें संताप ॥ ११ ॥

॥ ढाल अढारमी ॥

॥ दिल लगा रे बादल वरणी ॥ ए. देशी ॥ इम क
 हेती गइ तातने गेहें, जिहां ठे हरिजट्ट मामा ॥
 नवि जोजो रे कर्मनी करणी, नोगवे जे फल घरणी
 ॥ न० ॥ ठे तेहनी हरिजट्टणी द्विजणी, तस कुखनी
 दो रामा ॥ १ ॥ न० ॥ पीयर पण ठे एकण डिंगें,
 नदिलपुर जे नामें ॥ न० ॥ काढी पतियें पीयर आ
 वी, रोगिणी मावित्र ठामें ॥ २ ॥ न० ॥ मात पितां
 तव निरखी मलीयां, पूठे कुशलनी वातो ॥ न० ॥
 कुशल तो नजरें जुवो ठो पिता जी, शी कहुं द्विजनी
 ख्यातो ॥ ३ ॥ न० ॥ जब अम वेने रोगिष्ट जाणी,
 बीजी परणी आणी ॥ न० ॥ ते उपर अम बेहुने
 काढी, शोक्यनी करि तिहां टाढी ॥ ४ ॥ न० ॥ तव अमें
 आव्यां तातजें चरणे, जाणी पीयर शरणें ॥ न० ॥
 स्त्रीने पढ़ कह्या दो वारु, वास पीयर नरतारु ॥ ५ ॥
 ॥ न० ॥ ए अधिकार सुणीने पितायें, आंखें आंसू आण्यां
 ॥ न० ॥ फिट रे जमाई दो कुल हीणा, एहवा न
 होता जाण्या ॥ ६ ॥ न० ॥ धिग धिग ठे तुम जीवित
 जाति, कीधो विश्वास घात ॥ न० ॥ एहवा प्राणीनुं
 मुख महीयें, नजरें नावशो कहीये ॥ ७ ॥ न० ॥ यण, शुं कं

(१५८)

रीयें श्री जगवानें, लेख लख्या जे पानें ॥ ज० ॥ अण चिं
तवी जब माथे वणाणी, जोगवे पुत्री ते प्राणी ॥ ७ ॥
॥ ज० ॥ इणिपरें वचन कहीने तातें, राखी दो कुमरी
हेतें ॥ ज० ॥ उपथ वेषध करवा लाग्या, जे जिम आवे वेतें
॥ ए ॥ ज० ॥ आय उपाय करी बहु आका, वैद्यने
मुख पड्या फांका ॥ ज० ॥ पण जो जो वैद्य प्रगटे
जाग्यें, कंथा ज्युं गोरख जागे ॥ १० ॥ ज० ॥ एक
दिन हरिजट जयदेव गेहें, मलवा गयो बहु नेहें
॥ ज० ॥ सुनंद उपनंद जयदेव आदें, हरिने मल्या कर
वेहें ॥ ११ ॥ ज० ॥ बेठा सहु को एकण गाणें, हरिने वि
लखो जाणे ॥ ज० ॥ तव हरिजटने जयदेव पूढे, शे
पड्या शोचने बूढे ॥ १२ ॥ ज० ॥ तव हरिजट कहि
सघली मांमी, पुत्री जे दुःखणी ठांमी ॥ ज० ॥ ए
दुःख महोटुं साले अमने, शी कहुं जयदेव तुमने
॥ १३ ॥ ज० ॥ ते वात सांजली जयदेव बोड्यो, सां
जलो हरिजट जाइ ॥ ज० ॥ आजथी रोग गयो तुम
जाणो, जो ठे पाथरो सांइ ॥ १४ ॥ ज० ॥ एम कहि
उपनंदने मूके, बेढो हरिजट साथें ॥ ज० ॥ जाउ
शीघ्र थइ जस लेशो, जेपज करजो हाथें ॥ १५ ॥
॥ ज० ॥ आब्या मंदिर ततखिण हर्षें, हरिजट उप

(१५९)

नंद दोइ ॥ ज० ॥ नाडी जोइ शिलाजित देइ, तत
 खिए बलतर खोइ ॥ १६ ॥ ज० ॥ आब्यो जस उप
 नंदने वखतें, थइ कुमरी दो साजी ॥ ज० ॥ देखी गुण
 उपनंदनो महोदो, मातपिता ययां राजी ॥ १७ ॥
 ॥ ज० ॥ हरखी हरिजट्ट कहे कर जोडी, सांजलो
 उपनंद स्वामी ॥ ज० ॥ जीवित दान दीधुं तुमें अ
 मने, तिणें यया अंतरजामी ॥ १८ ॥ ज० ॥ माण
 स उल्लें आण्या अमने, कीधा जगमें महोटा ॥ ज० ॥
 नावठ सघली जनमनी काढी, देई वंछित पोटा ॥
 ॥ १९ ॥ ज० ॥ ए उपगार कदी न विसारुं, जो अम-
 जाति ठे सागी ॥ ज० ॥ यया अम पुत्रीना सुख
 दाता, कीधा अम वडजागी ॥ २० ॥ ज० ॥ ए तुम
 गुण उसिंगण यावा, संकटपुं आ रुद्धि घरनी ॥
 ॥ ज० ॥ तन धन मन ठे सघलुं तुमारुं, मत गण
 जो तुमें परनी ॥ २१ ॥ ज० ॥ साथें जइने अम चउ
 जीवडा, जो वेचो तो वेचाउं ॥ ज० ॥ जीवित सूधी
 इणिपरें वहियें, तो तुम शावास पाउं ॥ २२ ॥ ज० ॥
 तव कुमरी कहे खंदा विशाखा, सांजलो उपनंद वा
 णी ॥ ज० ॥ नवो नव ठे अम जीव तुमारा, मूक्युं
 तस कर पाणी ॥ २३ ॥ ज० ॥ इणिपरें कषणें कहि

(१६०) .

दो कुमरी, रागनी गांठ त्यां पाडी ॥ ज० ॥ उपनंदें
 पण अनुमोदी पोतें, बांधी मोहनी वाडी ॥ १४ ॥
 ॥ ज० ॥ इणिपरें वयणें राजी करीने, उपनंदने सन
 मानी ॥ ज० ॥ हरिजट साथें उपनंद गेहें, आव्यो
 चढती पांती ॥ १५ ॥ ज० ॥ हरिजट कहे जयदेवने
 प्रणमी, धन्य धन्य स्वामी तुमने ॥ ज० ॥ तुम पुत्रें
 मुज पुत्री जीवाडी, लेखे आण्या अमनैं ॥ १६ ॥
 ॥ ज० ॥ इणिपरें कहीने लघुताइ पाइ, हरिजट मं
 दिर आव्यो ॥ ज० ॥ उपनंदनो जस पुरमें बाध्यो,
 सज्जनजनमन जाव्यो ॥ १७ ॥ ज० ॥ चोथे उघ्नासैं
 अठारमी ठालें, धातायें जेह बनावी ॥ ज० ॥ लब्धि
 कहे नवि सुणजो आगें, ए थइ ते कहुं चावी ॥ १८ ॥
 ॥ दोहा ॥

॥ हरिजट केरी धीयने, कीधो जे उपगार ॥ थयो
 महिमा उपनंदनो, नदिल पुरमें सार ॥ १ ॥ ते वा
 यक श्रवणें सुणी, सुदेव नूदेव विप्र ॥ उपनंद उपरें
 परजव्या, ज्युं जले अग्नि क्षिप्र ॥ २ ॥ जाण्युं हतुं दो
 नीरीयो, मरगो रोगथी एह ॥ उपनंदें जो सज करी,
 आपणा वयरी तेह ॥ ३ ॥ एम विचारी दो जणें,
 अण्यो मर्नमें रोष ॥ उपनंदने हणवो सही, जो जो

(१६१)

गुणनो दोष ॥ ४ ॥ देवी पडरो बाजरी, के तेडवी
पडरो घेर ॥ ते जाणी उपनंदशुं, दो विप्र राखे वेर
॥ ५ ॥ एहवे एक आवी मळ्यो, तपसी विरुद्ध वेर ॥
तेहने जइ चरणो नम्या, करी आदेश विशेष ॥ ६ ॥
आसन वासन देइ करी, तपसी कखो निज हाथ ॥
तव तपसी कहे सेवको, शी वंगो मुळ आथ ॥ ७ ॥
तव द्विज कहे कर जोडीने, दो में नूदेव छुट ॥ उपनं
दने एहवुं करो, दुवे ज्युं यम तस रुष्ट ॥ ८ ॥

॥ ढाल उगणीशमी ॥

॥ गोकुल गामने गोंदरे रे ॥ ए देशी ॥ तव तपसी
समजी कहे रे, सांजलो दो तुमें आप ॥ मोरा वाला
रे ॥ ए पातक किहां बूटीयें रे, श्यो दीजें प्रभुने जबाप
॥ १ ॥ मो० ॥ इम तपसी कहे विप्रने रे, म करो ए
हनी तांत ॥ मो० ॥ पापनी ठांहेडी मत रहो रे, जो
दुवो विप्रनी जात ॥ मो० ॥ २ ॥ ५० ॥ महिष गवा
मृगने हणो रे, हणो सूयरं पंखी ठांग ॥ मो० ॥ खट
दर्शन शास्त्रें कह्यो रे, तेह पापनो नावे ताग ॥ मो०
॥ ३ ॥ ५० ॥ एकेक जीव तन उपरें रे, जेती रोमरा
जी होय ॥ मो० ॥ वरष सहस तेतां गुणी रे, एं शैव
मततो ज्ञेय ॥ मो० ॥ ४ ॥ ५० ॥ होय विपाकें दश गुणं

(२६१)

रे, एकण कीधे कर्म ॥मो०॥ सत सहस लख कोडी
गमे रे, तीव्र जावना मर्म ॥मो०॥ ५॥ ५०॥ जुठ एक बीज
कोठिंबनुं रे, ठोजी गढ्युं जीने गेर ॥ मो० ॥ तो नृप
जित शत्रुतणुं रे, लीधुं दशगुणुं वेर ॥ मो० ॥ ६ ॥
५० ॥ जैन मते पण इम कह्युं रे, जे करे पंचेंद्रि घात
मो० ॥ तो तस पूरव कोडितुं रे, चारित्र दूरें जात ॥
मो० ॥ ७ ॥ ५० ॥ ए अधिकार जाणी करी रे, अमें
किम करियें पाप ॥मो०॥ रामें रोमें कीडा पडें रे, दे
खत कुण ले संताप ॥ मो० ॥ ८ ॥ ५० ॥ तुम दोने
अमरुं नथी रे, जाणो अमर ठे तन्न ॥ मो० ॥ पण य
मदंम ठे सहुशिरें रे, देवो ठे एक दिन्न ॥मो०॥ ९॥ ५०॥
एहवो जबाप ते सांजली रे, जे कह्युं रुषियें वचन्न
॥ मो०॥ तव दो विप्र जांखा थया रे, विलखाणा दो
मन्न ॥ मो० ॥ १० ॥ ५० ॥ तव मुख लेइ पाठा
वल्या रे, ज्युं थया शीतल हीम ॥ मो० ॥ दो वि
प्रने घरे आवतां रे, शो जोजन थइ सीम ॥ मो० ॥
॥ ११ ॥ ५०॥ विण खूने उपनंदशुं रे, राखे ते वेरजाव ॥
॥ मो० ॥ पण हेवे जो जो तेहनी रे, शी गति होवे
सहाव ॥ मो० ॥ १२ ॥ ५० ॥ हवे हरिजट्टें निज
मंदिरें रे, भेली द्विजनी नाति ॥ मो० ॥ अशन वसन

घृत घोलखुं रे, संतोषी नजी जाति ॥ मो० ॥ १३ ॥
 ॥ ६० ॥ राजी अया सहु नातना रे, जेता द्विज कहे
 वाय ॥ मो० ॥ पण ते दो कुमति प्रतें रे, रक्षां ते व
 दन विठाय ॥ मो० ॥ १४ ॥ ६० ॥ तैहवे हरिजट्ट बो-
 लियो रे, कहे वर्गो मुकु जन ॥ मो० ॥ आं दो छुट
 पापिष्टीयें रे, शे मुज तातजी खून ॥ मो० ॥ १५ ॥
 ॥ ६० ॥ तव तिहां द्विज सघला कहे रे, महारंगणीना
 जाति ॥ मो० ॥ हीणा चौदशना जण्या रे, शे न करी
 स्त्री तांत ॥ मो० ॥ १६ ॥ ६० ॥ इम कहि द्विज सघ
 ला मजी रे, कुटिलने कहे समजाय ॥ मो० ॥ हवे
 मत रहो अम न्यातिमां रे, देखत कीधो अन्याय ॥
 ॥ मो० ॥ १७ ॥ ६० ॥ हवे तुमें ए पुरमां रही रे, मत
 करजो अन्न पान ॥ मो० ॥ जो ए वचन उलंघशो रे,
 तो घणा जडशे उपान ॥ मो० ॥ १८ ॥ ६० ॥ इम कहिने
 दो काठिया रे, देई धक्का जोर ॥ मो० ॥ श्याम वदन
 लेई मंदिरें रे, आब्या दो नातिना चोर ॥ मो० ॥
 ॥ १९ ॥ ६० ॥ तिणे पण जावा सज कखा रे, गाडां
 कंट बलद ॥ मो० ॥ लेई सजाई आपणी रे, निकळ्या पुं
 रथी अठद ॥ मो० ॥ २० ॥ ६० ॥ नीकलतां पुरमां थकी रे,
 लागी दो विप्रने हांग ॥ मो० ॥ गया कोइक देशांतरें रे,

ज्युं गयां उंटनां शिंग ॥ मो० ॥ ११ ॥ ५० ॥ दो कुमरीनी
 ठाती ठरी रे, ठ्यां वलि मावित्र मन्न ॥ मो० ॥ जली
 थइ जे शव्य नीकव्युं रे, उलसि रोम राजी तन्न ॥
 ॥ मो० ॥ १२ ॥ ५० ॥ इम हरखी कहे नातिने रे, हरि
 नट्ट ते कर जोड ॥ मो० ॥ ठे नाति महीमें मोटकी
 रे, नाति ठे शिरनो मोड ॥ मो० ॥ १३ ॥ ५० ॥ नातिथकी
 तरियें सदा रे, जो चाले कुलवट्ट ॥ मो० ॥ जो वहे
 आडो नातिथी रे, तो होवे दहवट्ट ॥ मो० ॥ १४ ॥
 ५० ॥ जे निजवर्ग दूरें तजी रे, करे वद्वज परवर्ग ॥ मो० ॥
 ते नृप कुकर्दम परें रे, पामे ते दुःख अपवर्ग ॥ मो० ॥
 ॥ १५ ॥ ५० ॥ नातिथी अधिको को नहिं रे, नाति
 ठे गंग प्रवाह ॥ मो० ॥ तरीयें बूडीयें नातिथी रे,
 नातिथी लहियें उछाह ॥ मो० ॥ १६ ॥ ५० ॥ इम
 स्तवना करी नातिनी रे, हरिनट्टें द्विजनी प्रसिद्ध ॥
 ॥ मो० ॥ संप्रेडी निज वर्गने रे, राजी करि जस ली
 ध ॥ मो० ॥ १७ ॥ ५० ॥ ढाल कहि उगणीशमी रे,
 चोथा उछासनी एह ॥ मो० ॥ लब्धि कहे नवि सां
 नलो रे, आगल होवे जेह ॥ मो० ॥ १८ ॥ ५० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवे हरिनट्ट पासें रहे, पाडोशी ससनेह ॥ सुद

त नामा द्विज जलो, सकल कला गुणगेह ॥ १ ॥
 सगपण तो कांई नथी, ठे सगपणथी अधीक ॥ पा
 डोशीने नेहले, सगपण जाणें नजीक ॥ २ ॥ तस
 घर अहोनिश दो धिया, खंमा विशाखा जेह ॥ सुख
 दुःखनी जे वातडी, करवा आवे तेह ॥ ३ ॥ सुदत्त
 नो एक पुत्र ठे, वसुदत्त एहवे नाम ॥ रूप कला गुण
 चातुरी, उणे ते अनिराम ॥ ४ ॥ ते दो मांहे विशेष
 ठे, खंमानो घणो राग ॥ हास कुतूहल वातनो, करं
 तां नावे ताग ॥ ५ ॥ दो नारी वसुदत्तशुं, राखे ताली
 एक ॥ सरखा सरखी जोडली, तिणे करे हास्य विवेक
 ॥ ६ ॥ एक दिन ते वसुदत्तशुं, खंमा ठेडी वात ॥
 कर्म कुतूहल वारता, करतां थयो प्रजात ॥
 ॥ ७ ॥ प्रह फाटो तव आपणे, आवी खंमा घेर ॥
 रीष करी माता कहे, शी होजे तुज पेर ॥ ८ ॥ एहवुं
 वचन कल्याथकी, खंमा रीसाणी मात ॥ अणबोली
 रहि मातथी, बार घडी निज धाम ॥ ९ ॥ नोजन
 वेला अवसरें, खंमा न जमे कांय ॥ रीष उतारी मावडी,
 सहु जमियां तिण ठाय ॥ १० ॥ एक दिन हरिन्द्र
 ने घरे, सुदत्त लेइ परिवार ॥ मिजलस करी बेठा
 तिहां, करवा वातो सार ॥ ११ ॥ तेहवे पण आव्यो

(१६६)

तिहां, उपनंद मलवा रूप ॥ साथ सहु उठी मल्यो,
बेसाज्यो करी, चूँप ॥ १२ ॥ हवे सहु बेठा रंगमें, क
रतां वात टकोल ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा
समकित गोल ॥ १३ ॥

॥ ढाल वीशमी ॥

॥ सूडा रे तुं जइ कहेजे, संदेशडो रे ॥ ए देशी ॥
तव हरखे सउ उठीने, कर जोडी नामें शीशो रे ॥
गुरु पण नाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्माशीषो. रे
॥ १ ॥ नवि सुणजो रे, इहां गुरु पण लाज कमावें
रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमणनुं पारणुं, करी बेठा
त्यां चित्रशाली रे ॥ साथ सहु पण तिहां कणो, गुरु
पासैं बेठा संजाली रे ॥ २ ॥ जण ॥ धर्मकथा यथा
स्थित कहि, सहु बूझव्या प्राणी सुजाणो रे ॥ सम
कित वासना पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणो रे
॥ ३ ॥ जण ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूठे खंमा
विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोजागिणी, त
स कदि होशे सुख शाता रे ॥ ४ ॥ जण ॥ तव क
षिदो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे ॥ आ
जर्था ठे एक वर्षनुं, गुरु नांखे आउखूं होय रे ॥
५ ॥ जण ॥ स्यारपढी सुख पामशे, जो जिन मारगमें वहे

(१६७)

शो रे ॥ मिथ्या मत जो ठंढशो, तो मन वंछित लेहेशो
 रे ॥ ६ ॥ ज० ॥ इम रुषि कहे सुण जटणी, तुम मा
 रग शुद्ध बतावूं रे ॥ जो ते मारगें चालशो, तो दुःखनी
 दोरी कपावूं रे ॥ ७ ॥ ज० ॥ तव जटणी कहे साधु
 जी, तुमें मारग शुद्ध भांखो रे ॥ काज सरें जेह्थी
 धणुं, अम करुणा करी ते दाखो रे ॥ ८ ॥ ज० ॥ तव
 गुरु कहे सुणो जाबुको, तुमें पूजो प्रभु शुभ जाणी
 रे ॥ प्रभु पूज्या ते पामीया, इम लोकमें ठे पण वाणी रे
 ॥ ९ ॥ ज० ॥ सद्गुरुवचन हृदे धरी, तुमें आपथी
 मनशुं जाणो रे ॥ प्रभु वंदन फल सांजली, तुमें मनु
 जव लेखें आणो रे ॥ १० ॥ जवियां रे तुमें
 जिन वंदन जणी जावो रे, ए तो मीठा मेवा पावो रे
 ॥ ए आंकणी ॥ वासरें उठी खाटथी द्वारे, मनशुं जिन
 जणी जावुं रे ॥ उजट आणी जावथी तो, चोथ तणुं
 फल पावुं रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ उठे चैत्य गमण जणी
 ए तो, पहेरी शुद्ध ते वेशो रे ॥ ठठ तणुं फल पामी ते
 लहे, एम केवली दे उपदेशो रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ चोखा
 सोपारी कर लीया, तव अछमनुं फल पावे रे ॥ पणकुं
 दे जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल आवे रे ॥ १३ ॥
 ज० ॥ छादश तप सम फल लहे, ए तो देहरा, मारग

(३६८)

जातां रे ॥ अर्थे पंथें लहे देहरे, ए तो मास खमण फल
 आतां रे ॥ १४ ॥ ज० ॥ देहरुं देखे दृष्टिमें, तव मा
 स खमण फल लाजे रे ॥ जब पहाँचे चैत्य ठांढी,
 तव खटमासी फल लाजे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ जिन
 वर बारणना फरसथी, ए तो बरसी तप फल होवे रे
 ॥ त्रण प्रदक्षिणा देयतां, तस शत वर्ष तप फल जो
 वे रे ॥ १६ ॥ ज० ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल
 होवे जिन पूजे एतो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्त
 वना जावें करेतो रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ चैत्यमें काजो
 काढतां, फल शो उपवासनुं थावे रे ॥ आंगी रचे जो
 विलेपनें, सहस पोषण लाज उपावे रे ॥ १८ ॥ ज०
 ॥ लाख उपोषण फल लहे, एक फूलनी माला चढा
 वे रे ॥ वाजित्र गीत प्रभु आगलें, कीधे लाज अनंत
 गुण जावे रे ॥ १९ ॥ ज० ॥ घृतदीपक प्रभु आगलें, करतां
 लहे मंगलमाला रे ॥ आरति करे प्रभु जिन तणी, तस
 जाये आरति वाला रे ॥ २० ॥ ज० ॥ न्हवण करे जि
 नजी शिरें, तस होवे आतम शुद्ध रे ॥ धूप उखेवे
 प्रभु आगलें, ते सुरगुरु सम लहे बुद्ध रे ॥ २१ ॥
 ॥ ज० ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिबल
 देवा रे ॥ गणधर सुर नृप पद लहे, प्रभु सेवार्थी लहे

(१६९)

मीठा मेवा रे ॥ ११ ॥ ज० ॥ जो त्रण काल पूजा
करे, नवसागर पार उतारे रे ॥ हलुवा कर्मी सदैवे,
ते जावे मुगति डुवारें रे ॥ १२ ॥ ज० ॥ सवण ने
मंदोदरी, करी अष्टापद ते नृत्तो रे ॥ ता थै तान न
चूकियां, जिन पदवीनी लहेवातो रे ॥ १३ ॥ ज० ॥
श्रेणिकरायें वीरनी, करी हेममे जवनी पूजा रे ॥ पद्म
नाज तीर्थकरु, होशे आवति चोवीशी राजा रे ॥
॥ १४ ॥ ज० ॥ कुमारपाल पूरव नवें, कोडी पांचनी
फूल चढावे रे ॥ देश अठारनो अधिपति, थयो फूल
अठारथी फावे रे ॥ १५ ॥ ज० ॥ इणि परें प्रभुनी पू
जायकी, ए तो सघलां संकट नाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख
पामीयें, वली संसारिक सुख ठाजे रे ॥ १६ ॥ ज० ॥
ए अधिकार ते सांजली, सद्गुनां मन जावें जेदाणां
रे ॥ जिन वंदन जिन नकिमां, तस आतम रंग रंगा
णा. रे ॥ १७ ॥ ज० ॥ गुरुनी शीख सोहामणी,
मानी विप्रें सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी वी
शमी, कहि लब्धें शास्त्रें राची रे ॥ १८ ॥ ज० ॥

॥ दोहा ॥

॥ ऋषिनी शीख सोहामणी, सांजलि सघला वि
प्र ॥ जिन वंदन अर्चानणी, द्विज द्विजणी थयां द्वि

प्र ॥ १ ॥ कहे उपनंद सुणो प्रभु, शी विध कीजें
 सेव ॥ ते विधि कहो अमनैं प्रभु, तिण विध पूजा
 देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अ
 ढार ॥ जिन वंदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥
 ॥ ३ ॥ रमणी रुझि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥
 देव तेहनुं नाम ठे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव ते
 नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते संसारी सुर
 कहा, लुब्धाणा तस रंग ॥ ५ ॥ जे सुर जीवता जे
 दुवे, ते जलें राखे नारि ॥ पण अइ मूरति शैलनी, शे
 स्त्री राखे सार ॥ ६ ॥ मूआ गया परलोकमें, तो पण न
 गयो विकार ॥ ते शुं तारक तारशे, पडिया मोह म
 जार ॥ ७ ॥ वाहालो वयरी एकसम, लेखवे ते खरो
 देव ॥ तस चरणांबुज सेवतां, लहियें शिव ततखेव ॥ ८
 ॥ ढाल एकवीशमी ॥

॥ तुमें पीतांबर पहरो जी, मुखने मरकजडे ॥ ए-
 देशी ॥ सांजली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिबल सांजलो ॥
 बूझिया ते द्विज प्राणी जी ॥ ६० ॥ देवनी नांति उ
 नांति जी ॥ ६० ॥ जाणी काढी त्रांति जी ॥ ६० ॥ १ ॥
 तेहमां त्रणे जीव जी ॥ ६० ॥ लीधुं पण ते अतीव
 जी ॥ ६० ॥ चाकरी जिननी कीजें जी ॥ ६० ॥ तव

सुखमें अन्न दीजें जी ॥ ह० ॥ १ ॥ दो कुमरी उप
 नंदें जी ॥ ह० ॥ ए त्रणे आणंदे जी ॥ ह० ॥ उलखी शु
 ६ आचरणें जी ॥ ह० ॥ थया पणधारी त्रणे जी
 ॥ ह० ॥ ३ ॥ इम उपदेश ते देइ जी ॥ ह० ॥ चाव्या गुरु
 लान देइ जी ॥ ह० ॥ हरिजट सुदत्त आर्दे जी ॥ ह० ॥
 सहु जिन पूजे आल्हादे जी ॥ ह० ॥ ४ ॥ नव नवी पू
 जा बनावे जी ॥ ह० ॥ नव नवी आंगी रचावे जी
 ॥ ह० ॥ नव नवां नृत्य करावे जी ॥ ह० ॥ इमं
 नित्य जावना जावे जी ॥ ह० ॥ ५ ॥ सहस्रनें पटशें
 एंशी जी ॥ ह० ॥ सोवन मुडा विहसी जी ॥ ह० ॥
 प्रभुने जंमारें हरखें जी ॥ ह० ॥ उपनंद मूके एक
 वर्षे जी ॥ ह० ॥ ६ ॥ शोलशें फूल चढावे जी ॥ ह० ॥
 हेम रजतनां जे कहावे जी ॥ ह० ॥ शोलशें मु
 गट जरावी जी ॥ ह० ॥ कुंमल हार करावे जी ॥ ह० ॥
 ॥ ७ ॥ कटिसूत्र ने करें कडली जी ॥ ह० ॥ बांहे
 बाज्रबंध जडली जी ॥ ह० ॥ इणपरें नूषण सारां जी
 ॥ ह० ॥ प्रभुने चढावे प्यारां जी ॥ ह० ॥ ८ ॥ इणपरे
 द्विजणी टोली जी ॥ ह० ॥ पहेरी पंचरंगी चोली
 जी ॥ ह० ॥ पूजे जिनवर देवा जी ॥ ह० ॥ ९ ॥
 हवा शिवसुख मेवा जी ॥ ह० ॥ १० ॥ तेहमें उपनंदें

साधुं जी ॥ ह० ॥ पूजा नामकर्म बांधूँ जी ॥ ह० ॥
 गुरुमुखें जे पण लीधुं जी ॥ ह० ॥ साथें ते त्रिहुं,
 जीव सीधुं जी ॥ ह० ॥ १० ॥ नवों नवनां दुःख
 टाजी जी ॥ ह० ॥ अथा त्रणे एक अवतारी जी ॥
 ॥ ह० ॥ गुरुवचनें जे चाले जी ॥ ह० ॥ ते शिव
 रमणीशुं माले जी ॥ ह० ॥ ११ ॥ इम करतां दिन
 केता जी ॥ ह० ॥ सुरुतमें दिन बीता जी ॥ ह० ॥
 सांजलो आगें जे होवे जी ॥ ह० ॥ नावि जिहां तिहां
 जोवे जी ॥ ह० ॥ १२ ॥ हवे सुदेव नूदेव दोइ जी ॥
 ॥ ह० ॥ रोगिणीना जे धव होइ जी ॥ ह० ॥ ना
 तिना खूनी जाणी जी ॥ ह० ॥ काढ्या ते डुष्ट प्राणी
 जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ निकल्या नातिथी हास्या जी ॥
 ॥ ह० ॥ क्रोधानलमें ते गाव्या जी ॥ ह० ॥ गया ते
 कल्लप देखें जी ॥ ह० ॥ न जाणे को नामनी विज्ञे
 जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ तिहां जइ एक कापडी नेटी जी ॥
 ॥ ह० ॥ तिणें शिखवी विद्या महोटी जी ॥ ह० ॥
 बहु रूपिणी विद्या शिखी जी ॥ ह० ॥ आव्या ते दो
 नीखी जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ कापडी वेश ते छेइ जी
 ॥ ह० ॥ आव्या ते डिंगमें बेइ जी ॥ ह० ॥ उपनं
 दने घर आगें जी ॥ ह० ॥ कपटें दो निह्ना मागे

जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ मधुरी धुनें गीत गावे जी ॥
 ॥ ह० ॥ उपनंदनी पोल रीजावे जी ॥ ह० ॥ रूपिणी
 विद्याजोगें जी ॥ ह० ॥ उलखे नहि तंस नोगें जी ॥
 ॥ ह० ॥ १७ ॥ एक दिन रातें ते पोले जी ॥ ह० ॥
 निहुक गावे दो उलें जी ॥ ह० ॥ एहवे उपनंद आ
 व्यो जी ॥ ह० ॥ कपटीयें दाव ते पाव्यो जी ॥
 ह० ॥ १८ ॥ फरसीयें घाव त्यां घाव्यो जी ॥ ह० ॥ उपनंद
 यमघरे चाव्यो जी ॥ ह० ॥ श्वाननां रूप करी नाग जी.
 ॥ ह० ॥ कपटी दो त्यांथी त्राग जी ॥ ह० ॥ १९ ॥
 धाउ रे जाइ धाइ जुउ जी ॥ ह० ॥ उपनंद हरिश
 रणें हुउ जी ॥ ह० ॥ जयदेव आदें कुटुंब जी ॥ ह० ॥
 आव्या सहु करी बुंब जी ॥ ह० ॥ २० ॥ रोगिणी देखी दो
 मेटे जी ॥ ह० ॥ फाल पडी तस पेटें जी ॥ ह० ॥
 जयदेव कहे 'जइ देखो जी ॥ ह० ॥ हणनारुं कुण
 तस पेंखो जी ॥ ह० ॥ २१ ॥ धाया जन बहु केडें
 जी ॥ ह० ॥ न लाधा गंया कोइ चेडें जी ॥ ह० ॥
 आरतिनगर कुंआरी जी ॥ ह० ॥ न पडे सुध कांइ
 जारी जी ॥ ह० ॥ २२ ॥ राते सामले रांम जी ॥
 ॥ ह० ॥ लेइ गइ पाशेर खांम जी ॥ ह० ॥ आमथी
 गइ आम आवी जी ॥ ह० ॥ ते रीत थइ इहां गांबी

जी ॥ ह० ॥ १३ ॥ आब्या जन बहु जोइ जी ॥
 ॥ ह० ॥ कहे हणी गयो कोइ जी ॥ ह० ॥ सजन
 कुटुंब सहु रोवे जी ॥ ह० ॥ नाइवे ज्युं खाल होवे
 जी ॥ ह० ॥ १४ ॥ फट रे देव तुं डुष्ट जी ॥ ह० ॥
 विण खूने शे रुष्ट जी ॥ ह० ॥ सुनंद कहे रे नाई
 जी ॥ ह० ॥ गुं गयो तेह देखार्इ जी ॥ ह० ॥ १५ ॥ इणि
 परें आक्रंद करंतां जी ॥ ह० ॥ मृत कारज तस धरतां
 जी ॥ ह० ॥ धिग संसार असार जी ॥ ह० ॥ धिग
 जे लेखवे सार जी ॥ ह० ॥ १६ ॥ इम ते मनमें वि
 चारी जी ॥ ह० ॥ जयदेव आप संनारी जी ॥ ह० ॥
 जयदेव सुनंद साथें जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा मुनि हाथें
 जी ॥ ह० ॥ १७ ॥ खंभा विशाखा दोकुमरी जी ॥ ह० ॥
 उपनंदनुं दुःख समरी जी ॥ ह० ॥ दीक्षा अज्ञा पासैं
 जी ॥ ह० ॥ लेवत पाले उल्लासैं जी ॥ ह० ॥ १८ ॥ हरि
 नष्ट सुदत्त जेह जी ॥ ह० ॥ ले दीक्षा पण तेह जी ॥
 ॥ ह० ॥ मोहनीकर्म संबंधें जी ॥ ह० ॥ उपनं
 दगुं मन बंधे जी ॥ ह० ॥ १९ ॥ चोथा उल्लासनी
 ढाल जी ॥ ह० ॥ एकवीशमी गुणमाल जी ॥ ह० ॥
 लब्धी जवनय मेली जी ॥ ह० ॥ कहुं उपनय मन
 जेली जी ॥ ह० ॥ २० ॥ इति ॥

(१७५)

॥ दोहा ॥

॥ इम कहे मुनिचंड केवली, सांचलो हरिबल रा
य ॥ नावी माहापण आगलें, को नवि अधिको आय
॥ १ ॥ जीती न शके नाविने, अनंत बली अरिहंत ॥
ते सरखा पण हारिया, नावि प्रबल वदंत ॥ २ ॥ पंच
महाव्रत उच्चरी, पामे केवल नाण ॥ तो पण नावी
नहि मिटे, जीवित सूधी जाण ॥ ३ ॥ केवली आयु
ने समे, जे करे समुदघात ॥ ते पण नावि जोगथी,
जाणजो नवि विख्यात ॥ ४ ॥ सुख दुःख पानें जे
लख्यां, कुण टाळे तस दूर ॥ त्रीजगमें व्यापी रह्यां, जि
हां तिहां नावि हजूर ॥ ५ ॥ वीर जिणंदने पण र
ह्यो, ठम्मासी अतिसार ॥ केवल पाम्या तोहि पण,
नावी न मटथुं लगार ॥ ६ ॥ नावीथी पूरव नवें, जे
बांध्युं अंतराय ॥ वर्ष सूधी नूख्या रह्या, जे श्री कृष
न कहाय ॥ ७ ॥ कृषीकर्म करतां थकां, कूर्मापुत्र सु
जाण ॥ केवल लही घरमें रह्यो, त्रण रति नावि प्रमा
ण ॥ ८ ॥ ते माटे हरिबल तुमें, जाणजो करीने ठीक
॥ नावी आगेवान ठे, सहु ते जंतु नजीक ॥ ९ ॥
जे जिम नावी नीपजे, टाली न शके कोय ॥ रोंगिणी
दोनी दाऊथी, छुदेवें हणियो सोय ॥ १० ॥

॥ ढाल बावीशमी ॥

॥ तट जमुनानुं रे अति रलीयामणुं रे ॥ ए देशी
 ॥ ते उपनंदनो रे जीव चवी इहां रे, थया तमें हरिब
 ल महोटे नाम ॥ साधुनी निंदा रे कीधी घणी रे,
 तव लह्युं धीवर कुलनुं धाम ॥ १॥ हरिबल सुणजो रे,
 तुम नवनी कथा रे ॥ ए आंकणी ॥ जे जीव मेले ठे
 ते दल कर्म ॥ गुजागुजना जे बंध बांधीया रे, जोगवे
 ते जीव निज निज मर्म ॥ २॥ ह० ॥ जलचर जंतु रे तुमें
 हणता सदा रे, ते निज उदरने कारणें जोर ॥ हरिचट्ट
 संगी रे सुदत्तद्विज चवी रे, थयो इहां तुम तणो सा
 चो शोर ॥ ३॥ ह० ॥ तिणें तुमें दाख्यो रे जलने कांठडे रे,
 जीव दयानो महोटो धर्म ॥ तुमें पण साचा रे पण
 धारी थया रे, राख्यो जीवदयानो नर्म ॥ ४ ॥ ह० ॥
 तस पुण्य योगें रे, जलनिधि देवता रे, प्रगट थयो तु
 म पूरव त्रात ॥ सुनंदनामें रे बंधु चवी इहां रे, सुर थ
 इ पूरी तुम मन खांत ॥ ५ ॥ ह० ॥ पूरव नवनी रे
 तुम दो रागिणी रे, खंभा विशाखा नामें जेह ॥ ते दो
 नारी रे थइ तुम मोहथी रे, वसंतसिरी कुसुमसिरी ते
 ह ॥ ६ ॥ ह० ॥ श्री जिनकेरी रे नक्ति करी घणी रें,
 दो गोरी तुमें त्रण जीव ॥ शोलशें फूलें रे शोलशें देशनी रे.

परण्या नारी तेणें अतीव ॥ ७ ॥ ह० ॥ श्रीदत्तनामें रे वड व
 खती थयो रे, व्यवहारी जे विशाला मळ ॥ ते तुम तात रे
 जयदेव चवि थयो रे, तिणें दीधुं रहैवा गृह तुम-कळा ॥ ८
 ॥ ह० ॥ नगरि विशाला रे जे पुरनो धणी रे, जे थयो
 कामी पूरव नेग ॥ सुदेव नामें रे खंमानो धणी रे, ते
 थयो चवीने मदन वेग ॥ ९ ॥ ह० ॥ माहाडुष्ट बु
 धि रे जूदेव वाडवो रे, नारि विशाखानो पति जाण ॥
 ते द्विज चविने रे ह्रीणी लेशथी रे, थयो कालसेन ते
 डुष्ट प्रधान ॥ १० ॥ ह० ॥ तिणे तुम मूक्या रे पूर
 व वयरथी रे, लंका गढ वली जमने घेर ॥ पूरव नव
 ना रे वयर प्रजावथी रे, तुमें पण वाढ्युं सवायुं घेर
 ॥ ११ ॥ ह० ॥ नृप पण मोह्यो रे तुम स्त्री देखतां
 रे, पूरव नवनो मोह विकार ॥ ते दो नारी रे वय
 र संजालीने रे, मंत्री नृपने कीध खुआर ॥ १२ ॥ ह० ॥
 तव नृप समजी रे बूजी मनमां रे, जाणी महो
 टो तुम उपगार ॥ राज समर्थु रे जलनिधि देवथी
 रे, परणावी तुम कुमरी सार ॥ १३ ॥ ह० ॥ हरि
 नट्ट सुणजो रे दो दुःखणी पिता रे, थयो ते वसंत
 सेन नृपाल ॥ हरिनट्ट नारी रे हरिनट्टिणी चवी रे,
 थइ ते वसंतसेना गुणमाल ॥ १४ ॥ ह० ॥ तस कुखें

(१७८)

जाई रे वसंतसिरी जली रे, खंमा नामें दुःखणी जी
व ॥ वर्ष एक सुधी रे जिन पूजा रची रे, तव यइ कु
मरी नृपनी अतीव ॥ १५ ॥ ह० ॥ वसुदत्त नामें रे
सुत सुदत्तनो रे, थयो चवि हरिबल वणिक उहाह ॥
वसंतसिरीने रे हरिबल नंदगुं रे, प्रगढ्यो पूरव मोह
अथाह ॥ १६ ॥ ह० ॥ पण ते साथें रे संबंध पूरो
नही रे, वणिकें कुमरी ठंमी ताम ॥ तव तुम मली
यो रे योग कुमरी तणो रे, जलसुरें मेढ्यो ईश्वरि ठाम
॥ १७ ॥ ह० ॥ तव तुम साथें रे कुमरी जे चली रे,
जव आव्या तुमें नर कांतार ॥ रवि जव ऊग्यो रे त
व तुम देखतां रे, यइ मूरठागत कुमरी तिवार ॥ १८ ॥
॥ ह० ॥ तव तुम साजें रे सागर देवता रे, आव्यो
पूरव नवनो चात ॥ तेणो सज कीधी रे कुमरी तत
खिणें रे, परणावी तुम मन विख्यात ॥ १९ ॥ ह० ॥
खंमा नामें रे राख्या अबोजडा रे, मावडी साथें ति
णो घडी बार ॥ तेहने जोगें रे मावित्रगुं रह्यो रे, वि
जोग कुमरीने वर्ष बार ॥ २० ॥ ह० ॥ विशाला पुर
थीरें वली तुम तेडीया रे, तुम ससरो जे वसंतसे
ण ॥ तिणो तुम तेडी रे पूरवनेगुं रे, दे तुम राज्यने
कुमरी, विशेष ॥ २१ ॥ ह० ॥ रुद्धि नै रमणी रे रा

(३७९)

ज्य दो पामीयां रे, पूज्या पूर्वे जिन नगवान ॥ तस
पुण्य जोगें रे सागर देवथी रे, जगमां वजाव्यां जीत
नीशाण ॥ ३२ ॥ ह० ॥ इणिरें जांखुं रे. हस्विल
आगलें रे, पूरव नवनुं जे वृत्तांत ॥ मन्नीयें दीतुं रे
तेहवुं ज्ञानथी रे, जाति समरणें लह्यो उपशांत ॥
॥ ३३ ॥ ह० ॥ धीवर बूज्यो रे केवली वयणथी रे,
संजम लेवा थयो उजमाल ॥ चोथे उद्धासें रे ढाल
बावीशमी रे, कही लब्धें जोइ शास्त्र संजाल ॥ ३४ ॥
॥ दोहा ॥

॥ धीवर नृप मन चिंतवी, प्रणमी गुरुना पाय ॥
आव्यो आपण मंदिरें, समताखुं चित्त लाय ॥ १ ॥
श्रीबल सुबल निज पुत्रने, राज्य नलावी दोय ॥ अनुमत
लइ संजम तणी, हरिबल मन्नी सोय ॥ २ ॥ वसंत
सिरी कुसुमसिरी, दो पट्टराणी एह ॥ तस संगें अ
नुमति लीये, संजम वरवा तेह ॥ ३ ॥ तव दो नारी
कंतने, जांखे प्राणाधार ॥ संयम पालवुं दोहिलुं, जिम
वहेवो करितार ॥ ४ ॥ मदन दशनैं अयचणा, चाव
तां जिम डुर्जेन ॥ तिम पियु संजम दोहिलुं, पालवुं
जाणो अचंन ॥ ५ ॥ सुरगिरि तोलवो त्राजुवे, चढवो
लेइ गिरि नार ॥ चालवुं खंदा धार ज्युं, तिम वहेवो

मुनि चार ॥ ६ ॥ पंच महाव्रत उच्चरी, रहेवुं वनह
जार ॥ बावीश प्रसिद्ध फोजगुं, लडवुं थइ जूजार ॥ ७ ॥

॥ ढाल त्रेवीशमी ॥

॥ हरियालो श्रावण आवियो ॥ ए देशी ॥ जीरे
वसंतसिरी कहे इणि परें, तुमें सांजलो प्रीतम वातो
रे ॥ घरे बेठा मन थिर राखीने, पालो जाव चारित्र
विख्यातो रे ॥ १ ॥ इम वसंतसिरी कहे कंतने ॥ ए आंक
णी ॥ घरे बेठां चालतो धर्म ठे, जेहनुं मन ठे शुद्ध
चंगा रे ॥ हांजी लोक उखाणो पण कहे, मन शुद्ध
कथोटीमें गंगा रे ॥ २ ॥ ५० ॥ हांजी एक घरे बेठा
तप करे, एक जइ सेवे वनवासो रे ॥ पण कह्यो अ
धिको घरे तप करे, हांजी पण न कह्यो जलो वन
वासो रे ॥ ३ ॥ ५० ॥ हांजी पाराशर विश्वामित्र
जे, तप दोइ करे वनमां जाई रे ॥ हांजी मास मास
ने पारणें, रहे वनपत्र सूकां खाई रे ॥ ४ ॥ ५० ॥
हांजी एहवी तपस्या ते दो करे, लोही मांस गयां ते
सुकाइ रे ॥ हांजी ते सरखा पण स्त्री थकी, चलीया
मति विषयनी पाइ रे ॥ ५ ॥ ५० ॥ हांजी खटरस
नोजनं जे करे, तेहनुं मन किम होवे शुद्धो रे ॥ हांजी
मन वश राखे जे घरे रही, तेहनी कहे जिन जली

बुद्धो रे ॥ ६ ॥ ५० ॥ हांजी देश कछपें जाणीयें,
 शैव विजय ने विजया नारी रे ॥ हांजी एकण श
 ग्यायें रंगमें रहे, गृहमें थइ व्रतधारी रे ॥ ७ ॥ ५० ॥
 हांजी शुद्ध स्वभाव को नवि दिये, ए तो प्रगटे सहज
 स्वभावें रे ॥ हांजी शुद्ध स्वभाव जव उलखे, तव पर
 माणंद पद पावे रे ॥ ८ ॥ ५० ॥ हांजी लौकिकने म
 तें पण कहे, ठार जूंसे केइ तन शीशो रे ॥ हांजी तो
 पण शुद्ध होवे नही, लोटे ठारमें अश्व चक्री दुंशो
 रे ॥ ९ ॥ ५० ॥ हांजी गंगाजलें जीले केइ जना, करे
 मांहे तप शुद्ध होवा रे ॥ हांजी तो पण शुद्ध होवे
 नही, रहे फेडकां मझी जल लेवा रे ॥ १० ॥ ५० ॥
 हांजी उंधे मस्तकें केइ जना, करे तपस्या थइ उज
 मालो रे ॥ हांजी इम जोतां उंधे मस्तकें, रहे वागुल
 जइ तरुमालो रे ॥ ११ ॥ ५० ॥ हांजी केइ जन
 जटा वधारता, करे तपस्या शुद्ध चित्त लाई रे ॥
 हांजी इम तप होवे तो न्यग्रोधें, वधे अहनिश जटा
 बडवाइ रे ॥ १२ ॥ ५० ॥ हांजी केइ जन मुंम मुंमा
 वता, करे मस्तकें चीखां टीलां रे ॥ हांजी इम धर्म
 जो होवे नेकने, केश लूंचे खटमासैं चीला रे ॥ १३ ॥
 ॥ ५० ॥ हांजी निजनिज मतने पोषवा, ए तो चलवे

(१७३)

संदु शुद्ध धर्मों रे ॥ हांजी न्यंतर शुद्ध न उल्ल
ख्यो, तव तिहां वधे मिथ्या नर्मों रे ॥ १४ ॥ ५० ॥
हांजी जब शुद्धातम आवे जीवने, तव केवलकम
ला पावे रे ॥ हांजी ज्योतिमां ज्योति मले तदा, जि
नमुखयी चिदानंद कहावे रे ॥ १५ ॥ ५० ॥ हांजी
ते माटे तुमें नाथजी, तुमें ठो घणा महोटा नारे रे ॥
हांजी ठो तुमें सुकुमाल केलि ज्युं, तन तपयी गली
जाय क्यारें रे ॥ १६ ॥ ५० ॥ हांजी घरे बेगों सुख
नोगवो, करो जमणो हाथ ते आयो रे ॥ हांजी मन शुद्ध
भाव संजम लही, तुमें बांधो समकित पायो रे ॥
॥ १७ ॥ ५० ॥ हांजी इव्य चारित्र ते लेइने, फरे म
टक वैरागी याइ रे ॥ हांजी दुर्जर नरवाने केलवे,
करणी कपटीनी संवेग लाइ रे ॥ १८ ॥ ५० ॥ हांजी
प्रीतम तिणे न ऊधडे, ए तो उधडे चारित्र जावें रे ॥
हांजी नावचारित्रयी केइ तखा, नवजलधि वर्शन
नावें रे ॥ १९ ॥ ५० ॥ हांजी इव्य चारित्रना योग
यी जाये नवमा ग्रैवेयक सूधी रे ॥ हांजी नाव चा
रित्रना संगथी, पामे अजरामर पद बुधि रे ॥ २० ॥
॥ ५० ॥ हांजी नरत आरीसा चुवनमां, दुआ नाव
यी केवल नाणी रे ॥ हांजी आषाढनूति एलाचीर्ये,

(१७३)

लह्युं नाटकें केवल प्राणी रे ॥ ११ ॥ ५०॥ हांजी कू
 र्मापुत्र कृषि खेडतां, पाम्यो केवलनाण स्वनावें रे ॥
 हांजी वलकलचीरी पण इणि परें, पात्र लुंठतां के
 वल पावे रे ॥ १२ ॥ ५० ॥ हांजी मरुदेवी माता जे
 कृषननी, गज बेठां केवल पाम्यां रे ॥ हांजी इत्या
 दिक मन शुद्धी, जवो जवनां दुःख सवि वाम्यां रे
 ॥ १३ ॥ ५० ॥ हांजी ते माटे तुमें नूधणी, कहुं मा
 मो अंमारुं ए साचुं रे ॥ हांजी पंच महाव्रत पालतां,
 घणुं दोहिलुं होवे मन काचुं रे ॥ १४ ॥ ५० ॥ हांजी
 इत्यादिक वचनं करी, कहे वसंतसिरी उजमालो रे ॥
 हांजी चोथा उल्लासनी ए कही, त्रेविशमी लब्धे'ढा
 लो रे ॥ १५ ॥ ५० ॥ इति ॥

॥ दोहा ॥

॥ वचन सुणी पट्टराणीनां, बोल्यो हरिबल ताम ॥
 सुणो जे तुमें जे कही, ते मानुं अनिराम ॥ १ ॥
 पण मन माहरुं शुद्ध ठे, जिम गंगानुं नीर ॥ तिम
 में संजम लेहवो, तरवा जवदधि तीर ॥ २ ॥ उत्तर
 मेह न उन्नहे, उनहे तो वरसंत ॥ शा, पुरुष वधण
 न उच्चरे, उच्चरे तो ते करंत ॥ ३ ॥ एम कही ऊठ्यो तु
 रत, संजम लेवा सार ॥ संसार कारागृह्यकी, निंक

व्यो ते निरधार ॥ ४ ॥ तव दो कुमरी चिंतवे, प्रीतम
 थयो दृढचित्त ॥ अहिकंचूकि परें ठंमरो, वररो सं
 यम मित्त ॥ ५ ॥ सिद्धवधूनो लालची, थयो आप
 णो नूनाथ ॥ तो हवे आपण दो जणी, वहीयें प्रीत
 म साथ ॥ ६ ॥ जिहां काया तिहां ठांढडी, वहे ज्युं
 निशिदिन संग ॥ त्युं दंपति व्रतगेहमें, वहेजुं अवि
 हड रंग ॥ ७ ॥ इम जाणी दो रागिणी, पतिसार्थें
 करि नाव ॥ नवजलधि तरवा ग्रहे, संजम महोदुं
 नाव ॥ ८ ॥ बली बीजी जे राणीयो, जे नव सिद्धि
 जीव ॥ ते पण पतिसार्थें थइ, व्रत ग्रहवाने अतीव ॥
 ॥ ९ ॥ हरिबल केरो जे अठे, श्रीपति कुल्ल दिवान ॥
 ते पण सार्थें सज थयो, लेहवा पद निर्वाण ॥ १० ॥
 इणिपरें नाविक जीवडा, राणी आर्दे केय ॥ पंच स
 यां परिवारजुं, हरिबल संयम लेय ॥ ११ ॥ दीक्षा
 महोत्सव जलि परें, श्रीबल सुबलें कीध ॥ मणि मा
 णिक सोवन घणां, आशी जनने दीध ॥ १२ ॥
 हवे हरिबल मोह उपरें, कोप्यो अतिही पूर ॥ काढयो
 कूटी मोहने, आत्मडिं गथी दूर ॥ १३ ॥

॥ ढाल चोवीशमी ॥

॥ फडखानी देशी ॥ मोह नृप उपरें चढतरी वा

जीयां, गाजीयां सूत्र नीसाण गंडीयां ॥ पहेरीयां
 शीलसन्नाह ते हरिबल्ले, मनोबल्ले समकित अश्व चढिया
 ॥ मो० ॥ १ ॥ कुहकी करुणाल सुरसाल समकिन तणी,
 जेद विज्ञान रणतूर महोटा ॥ आतमा डिंगमें शब्द
 ए प्रगटीया, मोह नृप. सैननां चरण बूटा ॥ मो० ॥
 ॥ २ ॥ गज घटा गुण एकविश ते सज कखा, तोड
 वा डुर्ग जे दंज केरो ॥ सहज नाल्ले करी ज्ञान गो
 ला जरी, चालियो मोह परें मल्ली सेरो ॥ मो० ॥ ३ ॥
 बार जे व्रत उमराव साथें लीया, सज किया संव
 र सुनट साचा ॥ राग ने द्वेष दोय चोर ठे जगतना,
 तेहने ठेदवा नहीअ काचा ॥ मो० ॥ ४ ॥ फोज घणुं
 नियमनी, सोज घणुं दीपती, जीपती मोहनी सैन
 कोडी ॥ जाव नृप सैनशुं मल्ली चढयो रंगशुं, जीपवा
 मोह नृप सैन्य दोडी ॥ मो० ॥ ५ ॥ ज्ञानने दर्शन
 चरण तीने करी, अखुट जंमार ग्रह्यो मन्न शुद्धे ॥
 दादनी चूकवी आपवा जीवने, अनुजव रयण ल५ सब
 ल बुद्धे ॥ मो० ॥ ६ ॥ एहवे मोहने आवीचुगली करी, आश्र
 व पंच अति दुष्ट बुद्धी ॥ जाग रे जाग तुं मोह उता
 वलो, सबल आयो तुज परें मल्ली बुद्धी ॥ मो० ॥
 ॥ ७ ॥ मोह तव कोपियो थंन रण रोपियो, बुपियो

मोह निज सैन्य मेली ॥ पांच मिथ्यात नीशाण शब्दें
 करी, मल्ली नृप ऊपरें चढत वेली ॥ मो० ॥ ७ ॥ अष्ट
 मद हाथिया सुकृत घन घातीया, पातीया मान ज
 ग जंतु केरा ॥ एहवा हस्ती मदमस्त जऊकारिया,
 जावनृप सेनमें करत खेरा ॥ मो० ॥ ८ ॥ सार्थें
 उमराव ले अष्ट दश अघ तणा, नही मणा कांइ
 त्रिभुवन्न हरता ॥ फोज नव नोहकषायनी महाबली,
 साबली मोहनी जीत करता ॥ १० ॥ मो० ॥ राम
 ने द्वेष दो पुत्र ते मोहना, क्कोनना करत संसारमांहे
 ॥ काम मंत्री प्रबल सबल दल मेलीयो, हेलीयो जि
 णें मनुराज प्राहें ॥ मो० ॥ ११ ॥ पांच पचवी
 शनी नालि किरिया करी, शोल कषायना कीध गोला
 ॥ दंज दारु जरी क्रोध अगनें करी, जाव नृप सैन्यमें
 करत होला ॥ मो० ॥ १२ ॥ इणि परें मोह नृप सैन्य जेलुं
 करी, चालीयो मल्लीशुं युद्ध करवा ॥ आमुही सामुही
 फोज दोये मली, मनसरें फोज दो मंदि लडवा ॥ मो० ॥
 १३ ॥ मोहनृप जावनृप दोय पोरस चढया, आखड्या
 युद्धमें पूर बेइ ॥ लक्ष चोराशि जे जोनि चोगानमें, युद्ध
 करतां गयो बाल केइ ॥ मो० ॥ १४ ॥ तो पण मो
 हनुं मोरवाध्युं पणुं, जाव नृप सैन्यनो अंत आ

यो ॥ तेहवे मञ्जीनो जावनृप शुद्धं चर्ढा, मोह नृप
 सैन्यने दूर ढायो ॥ मो० ॥ १५ ॥ सहज नालें करी
 ज्ञान गोला जरी, गुप्तदारू तपतें उमाडी ॥ आकना
 तूल ज्युं मोहना सैन्यने, जाव नृप मञ्जीनो दे उमा
 डी ॥ मो० ॥ १६ ॥ सत्य गुण हाथीयें अष्टमद हाथीया,
 पातिया ज्ञानअंकूश पूरें ॥ दंज गढ तोडियो डुरित डिंग
 मोडियो, फोडीयो मोहमद कुंज दूरें ॥ मो० ॥ १७ ॥
 बार जे व्रत उमराव साथें चढ्या, सगवन संवर सुजट
 बूटा ॥ डुरित उमराव जे अष्टदश आकरा, बाकरी बां
 धता तेह खूटा ॥ मो० ॥ १८ ॥ राग ने द्वेष दो पुत्र
 मोहरायना, काम मंत्री सबल जगत रुंधी ॥ ध्यान
 कबाणथी विरति शर सांधीयां, वींधीयां तीन ते डुष्ट
 बुद्धी ॥ मो० ॥ १९ ॥ ढाल खीमा तणी खडग ले तप
 तणी, मञ्जीयें मूलथी मोह ढेद्यो ॥ आतम डिंगथी
 शल्य काढी परं, अनुजव रंगमें मञ्जि जेद्यो ॥ मो० ॥
 २० ॥ काल अनादि जे दंम चोवीशमें, पीडतो जी
 वने मोह सिद्धी ॥ तेहने जीती मदमस्त मञ्जी ययो,
 जाव नृप शरणथी जीत कीधी ॥ मो० ॥ २१ ॥ इण
 परें धीवरु सबल परिवारथी, गुरु कने आयो, करि

(१८८)

जीत मंका ॥ चोथा उद्गासनी ढाल चोवीशमी, लब्धि
कहे युद्धनी स्वर्ण टंका ॥ मो० ॥ ११ ॥

॥ दोहा ॥

॥ जित नीशाण वजावतो, इव्यथी जावथी जे
ह ॥ विरबल केरो पुत्रडो, आव्यो जिन चरणोह ॥ १ ॥
श्री मुनिचंड़ जे केवली, तेहना प्रणमी पाय ॥ कहें
मह्वी कर जोडिने, संयम नारि मेलाय ॥ २ ॥ तव
तिहां मुनिचंड़ केवली, विलंब न कीध लगार ॥ क
लशा चउ करी धर्मना, रची चोरी सुखकार ॥ ३ ॥
पंच सया परिवारचुं, मूकी मननो शोच ॥ स्वहस्ते
पंच मुष्टिनो, हरिबलें कीधो लोच ॥ ४ ॥ अध्यातमनी
पीठिका, तस मंमाण करेह ॥ मस्तकें वास ते जिन ठ
वी, करवा शिखगुण गेह ॥ ५ ॥ पंच माहा व्रत
उच्चरी, फेरा फरीया चार ॥ वर नारी आरोगियां, सं
वेग जे कंसार ॥ ६ ॥ गुरुना मुखधि कथा सुणी, शेठ
तणो दृष्टांत ॥ चार बहू चिहु पुत्रनी, सरखी जोई
तांत ॥ ७ ॥ पंचकण दीधावली तणा, दीधा बहूमे
हाल ॥ एकें नाख्या एक खाइ गइ, राख्या एक विस्तार
॥ ८ ॥ आगम वेदनी कांमिका, करे मुख जिन उच्चार ॥
संयम स्त्री, मह्वीयें वरी, वरत्या जय जयकार ॥ ९ ॥

(१७९)

॥ ढाल पञ्चीशमी ॥

समदम खंतितणा गुण पूरा, संगम रंगरगाण हे ॥ एदेशी

॥ राग धन्याश्री ॥ श्री मुनिचंड जे केवली पासें,
ले संजम उल्लासें रे ॥ केवलीयें पण ढील न कीधी,
जिननी शिक्षा दीधी रे ॥ १ ॥ सुणो नवियां हरिबल,
जे ऋषिराया ॥ ए आंकणी ॥ जैन मारग दीपाया
रे ॥ पंच सयागुं संयम लेइ, मनु नव सफल करेई
रे ॥ १ ॥ सु० ॥ पंच माहाव्रत सुरगिरि केरो, नार उपा
ज्यो नलेरो रे ॥ पंच सयागुं हरिबल साधु, अया
मुनि जनमें वाधु रे ॥ ३ ॥ सु० ॥ चौद पूर्वनी विद्या
आपी, श्रुत केवली पद आपी रे ॥ विहार करे मुनि
चंडजी संगें, हरिऋषि पंचगें रंगें रे ॥ ४ ॥ सु० ॥
दशविध जतिनो धर्म ते पाली, आतम नव अजु
वाली रे ॥ तप अगनें करी कर्म प्रजाली, मोहनी
जाल ते बाली रे ॥ ५ ॥ सु० ॥ शुक्ल ध्यानने चोथे
पदे ते, हरिबल ऋषि शुन चडीया रे ॥ हरिऋषि परि
कर शुक्ल ध्यानें, ते पण कर्मगुं नडिया रे ॥ ६ ॥
॥ सु० ॥ तेरमें गुणगणे ते आया, केवल कमला
पाया रे ॥ सुर करे नंद कमलनी रचना, ज्ञानी दीवा
कर गाय रे ॥ ७ ॥ सु० ॥ तिन अक्षय ज्युं करजल

(१९०)

देखे, शिवरमणी पण चेखे रे ॥ पांमव सहस्र ते
वर्षज सूधी, दे नविने बोधबुद्धि रे ॥ ७ ॥ सु० ॥
मासनी संलेपणा करि अंतें, जइ वेठा शिव पंतें रे ॥
धन धन हरिवल परिकर करणी, जइ शिवरमणी प
रणी रे ॥ ८ ॥ सु० ॥ जो जो नवियां जीव दयाथी,
शा शा गुण ए प्रगट्या रे ॥ धीवर कुलमां जन्म ल
ह्मीने, ज्योतिवधूमां उमट्या रे ॥ १० ॥ सु० ॥ तुमें पण न
वियां इणिपरें निसुणी, जीवदयाशुं राचो रे ॥ उदरने
कारण करणी करतां, बंधन न पडे साचो रे ॥ ११ ॥
॥ सु० ॥ धर्मेनो मर्म ते जीवदया ठे, खट दरिशनमें
जाचो रे ॥ हरिवलनी परें रुद्धि लहो तुमें, जीवदयाशुं
माचो रे ॥ १२ ॥ सु० ॥ जीवदयाथी नवनिधि लहि
यें, सघले सूत्र ठे साखी रे ॥ हरिवलनुं पण चरित्र
ठे महोदुं, जुठ निषिधमें जांखी रे ॥ पातांतर ॥ जुठ
विचार सार जांखी रे ॥ १३ ॥ सु० ॥ ते अधिकार में
नयणें निरख्यो, जेहवो शास्त्र में दीतो रे ॥ तेहवो में
अधिकार वखाण्यो, देशीयें करीने मीतो रे ॥ १४ ॥
॥ सु० ॥ लाटापल्ली पुरनो वासी, पूनिम गहें सोहे
रे ॥ पंढित गरसिंह धनजी केरो, तप गुणें करी मो
हे रे ॥ १५ ॥ सु० ॥ तस आग्रहथी सयणा चारे,

(१९१)

रास रच्यो में रूडो रे ॥ वेधक रसिया धर्मी जनने,
 ए ठे मधुनो पूडो रे ॥ १६ ॥ सु० ॥ में तो करी ठे बा
 लक क्रीडा, हुं शुं जाणुं जोडी रे ॥ पंमित होष ते
 शुद्ध करेजो, मत कोइ नाखो विखोडी रे ॥ १७ ॥
 ॥ सु० ॥ रसनाने रसें अधिकुं उठुं, जे में नाख्युं अ
 नाख्युं रे ॥ ते. मिह्नाडकड कर जोडी, देवं पंच सम
 हें रे ॥ १८ ॥ सु० ॥ शुद्ध परंपर सोहम तखतें, प्रग
 व्या हीरसूरिंदो रे ॥ तस शिष्य धर्मविजय ध्रमधोरी,
 दीपे ज्युं शारदचंदो रे ॥ १९ ॥ सु० ॥ तस शिष्य
 पंमित धनहर्ष झानी, सुमति सदा चित्त मानी रे ॥
 तस शिष्य पंमित कुशल विजय कवि, प्रतिबोध्या अ
 नुमानी रे ॥ २० ॥ सु० ॥ तस चाता गणि कमल
 विजयशुन, ज्ञान विज्ञानमें लीना रे ॥ तस शिष्य पं
 मित लखमिविजय गुरु, संवेग रसमें जीना रे ॥ २१ ॥
 ॥ सु० ॥ तस शिष्य पंमित दो गुण ग्याता, केसर अ
 मर दो चाता रे ॥ तस पदकिंकर लब्धिविजय कहे,
 चार उद्गास विख्याता रे ॥ २२ ॥ सु० ॥ शीलांगरथ
 संवत्सर दशकें, १८१० महाशुदि बीज नृगुतारें रे ॥
 हखिलना गुण जीवदया पर, गाया में एक तारें रे
 ॥ २३ ॥ सु० ॥ श्रीतपगह नज दिक्षमणि सेहे, श्री

(३९३)

विजयधर्म सूरेशो रे ॥ तस गणधरना राजमां रसि
यो, गायो मङ्घि विशेषो रे ॥ ३४ ॥ सु० ॥ वाच्य
बंदरु श्रीअजित प्रसादे, रही सीमाणा वासें रे ॥ रा
या श्रीगजसिंहने राज्यें, रास रच्यो में उद्गासें रे ॥ ३५ ॥
॥ सु० ॥ हरिबलना गुण सुणतां पामे, जीवी सिद्ध
समाणी रे ॥ ढाल पचवीशमी चोथे उद्गासें, लब्धि
कहे गुण खाणी रे ॥ ३६ ॥ सु० ॥ ढाल उगणसाठ
सातशें दोहा, हरिबल चरित्रथी जांख्या रे ॥ साडात्रण.
सहस्र श्लोक एकावन, ग्रंथाग्रंथ ए दाख्या रे ॥
॥ ३७ ॥ सु० ॥ ज्ञाता जुगता दाता सारु, संबंध र
च्यो में वारु रे ॥ हलुआकर्मि जे हरो साचा, मान
रो सघली ए वाचा रे ॥ ३८ ॥ सु० ॥ चउविह संघने
मंगल होजो, दिन दिन लब्धिमें जलजो रे ॥ हरिबल
नी परें संपद लेहेजो, लब्धिनी वाचा फलजो रे ॥
॥ ३९ ॥ सु० ॥ इतिश्री हरिबल चरित्रे जीवदयापरे
चतुर्थ उद्गासः समाप्तः ॥ ४ ॥

॥ इति जीवदयापरे हरिबलरासः समाप्तः ॥

